सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[ग्रन्थाङ्क ४८]

श्रीमहेन्द्रसूरि-विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा



SINGHI JAIN SERIES

[NUMBER 48]

NAMMAYĀ SUNDARĪ KAHĀ

[A PRAKRIT WORK]

OF

MAHENDRA SŪRI

कलकत्तानिवासी

साधुचरित-श्रेष्ठिवर्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी पुण्यस्मृतिनिमित्त

प्रतिष्ठापित एवं प्रकाशित

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

[जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथात्मक-इत्यादि विविधविषयगुम्फित प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर,-राजस्थानी आदि नाना भाषानिबद्ध सार्वजनीन पुरातन वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशिनी सर्वश्रेष्ठ जैन ग्रन्थावलि]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्दजी-सिंघीसत्पुत्र

स्व० दानशील-साहित्यरसिक-संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी



प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिनविजय मुनि

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररी डायरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

*

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

प्रकाशक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

जयन्तकृष्ण ह. दवे, ऑनररी डायरेक्टर, भारतीय विद्या भवन, चौपाटी रोड, बम्बई, नं. ७, द्वारा प्रकाशित

तथा - लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी, निर्णयसागर प्रेस, २६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई, नं. २, द्वारा मुद्रित

श्रीमहेन्द्रसूरि-विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा

[देवचन्द्रसूरिकृत संक्षिप्त प्राकृत कथा, जिनप्रभसूरिकृत अपभ्रंशभाषामय नमयासुन्दरी सन्धि, तथा मेरुसुन्दरकृत गूर्जरभाषागद्यमय बालावबोधसमन्वित]

❁

संपादनकर्त्री

कुमारी प्रतिभा त्रिवेदी, एम्. ए.

प्राध्यापिका भा. वि. भवन कोलेज, बम्बई



प्रकाशनकर्ता

सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

❁

विक्रमाब्द २०१६] प्रथमावृत्ति – पंचशतप्रति [१९६० खिस्ताब्द

ग्रन्थांक ४८] [मूल्य रु. ४/४०

किंचित् प्रास्ताविक

महेन्द्रसूरि रचित 'नम्मयासुन्दरी कहा' (स० नर्मदासुन्दरी कथा)नी मूळ प्रति, मने सन् १९४२-४३ मा जैसल्मेरना ज्ञानभंडारोनु अवलोकन अने संशोधन करती वखते दृष्टिगोचर थई हती। कागळ पर लखेली ए प्रति कोई ५०० वर्ष जेटली प्राचीन जणाती हती। में ते वखते तेना परथी प्रतिलिपि करावी लीधी। सिंघी जैन ग्रन्थमालामा विशिष्ट रचनावाळी प्राकृत कृतिओ प्रकट करवानो जे उपक्रम में कर्यो हतो, तेमा आ कथाने पण प्रकट करी देवानो मारो विचार थयो अने तदनुसार प्रेस माटे कोपी तैयार करवा माडी।

ए दरम्यान, विदुषी कुमारी प्रतिमा त्रिवेदी एम् ए ए, मारा मार्गदर्शन नीचे, बम्बई युनिवर्सिटीमा पीएच्. डी माटे पोतानु रजीस्ट्रेशन नोंधाव्यु अने भारतीय विद्याभवनमा प्रविष्ट थई अध्ययन करवानी इच्छा व्यक्त करी। में ए बहेनने पोताना थिसीझ माटे प्रस्तुत कथानु विशिष्ट परीक्षणात्मक संपादन करवानु कार्य सूचव्यु, जे एमणे बहु उत्साहथी स्वीकार्यु अने मारा मार्गदर्शन प्रमाणे, एमणे बहु ज खतथी पोतानु अध्ययन चालु कर्यु।

जूना हस्तलिखित ग्रन्थोनी लिपि वाचवा-उकेलवामा अने शास्त्रीय संपादननी दृष्टिए प्राचीन ग्रन्थोना पाठो विगेरेनी अशुद्धि शुद्धि आदि माटे केवी दृष्टिए काम लेवु विगेरे विषयमा, ए बहेने सारो श्रम उठाव्यो अने तेमा योग्य प्रावीण्य मेळव्यु।

प्रस्तुत कथानी मूळ वाचना बराबर तैयार थई गया पछी में एने प्रेसमा छापवा आपी दीधी अने धीरे धीरे एनु मुद्रण कार्य थतु रह्यु। बीजी बाजू कुमारी त्रिवेदीए, एना अगेना परीक्षणात्मक विवेचननी संकलना करवानु काम चालु राख्यु।

केटलोक समय व्यतीत थता एमनी शारीरिक स्थिति जरा अस्वस्थताजनक रहेवा लागी अने तेथी एमनु अध्ययनात्मक कार्य अटकी पड्यु। ए दरम्यान मारो पण बम्बईनो निवास अस्थिर बन्यो अने हु राजस्थाननी नूतन 'राजधानी जयपुरमा, मारा निर्देशन नीचे' स्थापवामा आवेल 'राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर'नी रचना अने व्यवस्था माटे वारवार त्या जवा-आववामा व्यस्त रहेवा लाग्यो। वच्चे वच्चे, ज्यारे ज्यारे, बम्बई आववानो प्रसंग आवतो त्यारे ए बहेनने पोताना थिसीझनु काम पूर्ण करवा सूचना करतो रहेतो।

परतु समयनु व्यवधान थई जवाथी तेम ज ते पछी भारतीय विद्याभवनमा संस्कृत भाषाना अध्यापननु कार्य पण स्वीकारी लेवाथी, एमने पोताना थिसीझनु कार्य हाल तरत पूर्ण करवा जेटलो अवकाश अने उत्साह बन्ने न जणावाने लीधे, में आ कथाने अत्यारे आम मूळ रूपे ज प्रकट करी देवानु उचित धार्यु छे।

जो ए बहेन नजीकना भविष्यमा पोतानु थीसीझ पूर्ण करशे तो ते, एना परिशिष्ट रूपे बीजा भागमा प्रकट करवानी व्यवस्था थशे

आ पुस्तकमा, सर्वप्रथम महेन्द्रसूरिरचित प्राकृत 'नम्मयासुन्दरीकहा' मुद्रित करवामा आवी छे। एनी कुल ११९७ गाथा छे। वचे वचे केटलोक गद्यभाग पण छे। तेथी एकदर एनो ग्रन्थाग्र परिमाण १७५० श्लोकप्रमाण छे—एम एनी मूळ प्रतिना अन्ते ज लखेलु मळे छे। एनी रचना महेन्द्रसूरि नामना आचार्ये विक्रम सवत् ११८७ मां करेली छे। महेन्द्रसूरिए करेला उल्लेख प्रमाणे मूळ ए कथा एमणे शान्तिसूरि नामना आचार्यना मुखथी साभळी हती।

महेन्द्रसूरिनी आ रचना बहु ज सरल, प्रासादिक अने सुबोधात्मक छे। कथानी घटना आबाल जनने हृदयगम थाय तेवी सरस रीते कहेवामा आवी छे। वचे वचे लोकोक्तिओ अने सुभाषितात्मक वचनोनी पण छटा आपवामा आवी छे। प्राकृत भाषाना अभ्यासिओ माटे आ एक सुन्दर अध्ययनने योग्य रचना छे।

ए मुख्य कथाना परिशिष्ट रूपे, एना पछी श्रीदेवचन्द्र सूरिनी रचेली पण एक कथा आपवामा आवी छे। देवचन्द्र सूरि ते सुप्रसिद्ध कलिकालसर्वज्ञ गणाता आचार्य हेमचन्द्रना गुरु छे। तेमणे पोताना पूर्वगुरु, आचार्य प्रद्युम्नसूरिरचित 'मूलशुद्धि-प्रकरण' नामना प्राकृत ग्रन्थ उपर विस्तृत टीकानी रचना करी छे। ए टीकामा उदाहरण रूपे, अनेक प्राचीन कथाओनी सकलना करी छे, तेमा प्रस्तुत 'नम्मयासुन्दरी' अर्थात् नर्मदासुन्दरीनी कथा पण, प्रसगवश, सक्षेपमा आलेखी छे। देवचन्द्र सूरिनी आ रचना लगभग २५० जेटली गाथामा ज पूरी थाय छे। पण कथागत मूळ वस्तुनु परिज्ञान मेळववा माटे आ रचना पण बहु उपयोगी छे। खरी रीते महेन्द्रसूरि वाळी कथानो मूला-धार आ देवचन्द्र सूरिनी ज रचना होवानो सभव छे। देवचन्द्र सूरिना अन्तिम उल्लेख प्रमाणे नर्मदासुन्दरीनी मूळ कथा वसुदेवहिंडी नामना प्राचीन कथाग्रन्थमा गूथेली छे अने तेना ज आधारे देवचन्द्र सूरिए पोतानी रचना करेली छे।

देवचन्द्र सूरिनी कृति पछी जिनप्रभ सूरिए अपभ्रश भाषामा रचेली 'नमयासुन्दरि-सन्धि' नामनी कृति मुद्रित करवामा आवी छे। आ कृति अपभ्रश भाषाना अभ्यासनी दृष्टिए तेम ज नर्मदासुन्दरीकथागत वस्तुना तुलनात्मक अध्ययन करवानी दृष्टिए उपयोगी थाय तेम छे।

ए ज रीते, ते पछी मेरुसुन्दर गणिए प्राचीन गुजराती गद्यमा लखेली 'नर्मदासुन्दरी कथा' पण मुद्रित करवामा आवी छे। मेरुसुन्दर गणिए 'शीलोपदेशमाला' नामना प्राचीन प्राकृत ग्रथ उपर, प्राचीन गुजराती भाषामा बहु ज विस्तृत बालावबोध नामनु विवरण लख्यु छे, जेमा आवी अनेकानेक प्राचीन कथाओ आलेखित करवामा आवी छे। प्राकृत मूल कथाना अध्ययन अने विवेचनमा उपयोगी होवाथी आ रचना पण अहीं सकलित करवामां आवी छे।

एम, २ प्राकृत रचना, १ अपभ्रश भाषारचना, अने १ प्राचीन गुजराती गद्य रचना—मळीने ४ कृतिओनो आ सुन्दर सग्रह 'सिंघी जैन ग्रथमाळा'ना ४८ मा मणिना

रूपमां अभ्यासिओना करकमलमां उपस्थित करवामां आवे छे। आशा छे के ग्रन्थमालाना अन्यान्य ग्रन्थरत्नोनी माफक आ संग्रह पण आदरणीय थशे ज।

अन्तमां विदुषी कुमारी प्रतिभा त्रिवेदिए प्रस्तुत संग्रहना संपादन माटे जे परिश्रम उठाव्यो छे ते माटे एमने मारा हार्दिक अभिनन्दन आपुं छुं अने साथे शुभाशीर्वाद पण आपुं छुं के ए पोतानुं थिसीस पूर्ण करी तेने प्रकट करवा जेटलुं स्वास्थ्य अने समुत्साह प्राप्त करे।

भारतीय विद्याभवन बम्बई
—[ता. ५-३-६०]— —मुनि जिनविजय

विषयानुक्रम

१. महिंदसूरिरइया नम्मयासुन्दरी कहा

३५

महेन्द्रसूरिकृत 'नम्मयासुन्दरीकहा' की प्राचीन प्रतिका अन्तिम पत्र

सिरिमहिंदसूरिकहिया

नम्मयासुंदरीकहा

[पत्थावणा]

†जयइ भुवणप्पईवो[1] सव्वन्नू जस्स नाणजुन्हाए ।
लक्खिज्जइ भवभवणे कालत्तयसंभवं वत्थुं[2] ॥ १
अविरयनमंतसुरवरमणिरयणकिरीडकोडिकोडीहिं ।
मसिणीकयपयवीढा जयंति तित्थेसरा सव्वे ॥ २
उवसग्गपरीसहसत्तुवाहिणी वाहिणी तिहुअणस्स ।
एगेण जेण विजिया[3] सो जयउ जिणो महावीरो ॥ ३
निम्महियमयणकरिणो कुमयकुरंगप्पयारनिट्ठवणा ।
सव्वे मुणिनरसीहा हुंति सहाया सया मज्झ ॥ ४
काउं सरस्सईए सरणं हरणं समत्थविग्घाणं ।
वोच्छामि नम्मयासुंदरीऍ चरियं मणभिरामं ॥ ५
भणियं चिय फुडमेयं विसुद्धबुद्धीऍ पुव्वपुरिसेहिं ।
तह वि य गुणाणुराया ममावि भणणुज्जमो जाओ ॥ ६
बहुसो वि भन्नमाणं सुणिज्जमाणं पि धम्मियजणस्स ।
कन्नरसायणमेयं एगंतसुहावहं होइ ॥ ७
गुणवन्नणेण उत्तमजणस्स झिज्झंति असुहकम्माइं ।
उवसमइ दाहमंगे लग्गंतो चंदकिरणोहो ॥ ८
सुयपुव्वं पि सुणिज्जउ सुहयरमेयं महासईचरियं ।
होइ च्चिय विसहरणो मंतो कन्नेसु पविसंतो ॥ ९
उत्तमकुलप्पसूया निम्मलसम्मत्तनिच्चलसुसीला ।
असुत्थि[4]भसमणधम्मा न वन्नणिज्जा कह णु एसा ॥ १०
ता होऊण पसन्ना समानमज्झत्थमाणसा सुयणा ।
निसुणेह पावहरणं चरियमिणं मे भणिज्जंतं ॥ ११
जह जाया उव्वूढा चत्ता य समुद्दमज्झदीवम्मि ।
चुल्लपिउणो य मिलिया पुणो वि चुक्का जहा तत्तो ॥ १२

---

† The Ms. begins with ॥ ६० ॥ उं नमो वीतरागाय ॥

Wherever the text is corrected the original readings of the Ms. are noted in the foot-note.— १ °पईवो. २ वत्थं. ३ विजया. ४ असुथिर°.

अकलंकियधम्मगुणा वच्चरदीवम्मि जह चिरं वुत्था ।
मोयाविया य पिउणो मित्तेण गया य कुलगेहं ॥ १३
सोऊण भवं पुरिमं सुहत्थिसूरिस्स पायमूलम्मि ।
निक्खंता संपत्ता कमेण तह देवलोगम्मि ॥ १४
सयलं कहंगमेयं वत्तव्वं इत्थ पत्थुयपबंधे ।
संखेव-वित्थरेणं पडुक्खरं तं निसामेह ॥ १५

*

[महेसरदत्तमाया-रिसिदत्ताजम्मवण्णणा]

अत्थि सरिसेलकाणणगामागरनगरनिवहरमणीओ ।
नामेण मज्झदेसो महिमंडलमं [प. १A] डणो देसो ॥ १६

जत्थ –

गामा नगरायंते नगराणि यं देवलोगभूयाणि ।
दट्ठूण व संतोसा लच्छी सयमेव अवयरिया ॥ १७
आवासिएहिँ निच्चं पए पए सत्थवाहसत्थेहिं ।
एयं विसममरन्नं एयं ति न नज्जइ विसेसो ॥ १८
तत्थऽत्थि पुरं पयडं धणधन्नसमिद्धलोयसंपुन्नं ।
नामेण वड्ढमाणं पवड्ढमाणं जणधणेहिं ॥ १९
जिणमंदिरेसु जम्मी अणवरयपयट्टगीयनट्टेसु ।
पत्तो पिच्छइ लोओ तणं व भावेइ सुरलोयं ॥ २०
सालो जत्थ विसालो सुयणो व समुन्नओ परागम्मो ।
दीसंतो दूराओ भयंकरो वेरिवग्गस्स ॥ २१
निसिपडिबिंबियतारा नीलायणबज्झियं च दिवसम्मि ।
गयणंगणं[3] व रेहइ समंतओ खाइया जस्स ॥ २२
कयधम्मजणपसायो पासाया गयणमणुगया जत्थ ।
रेहंति सुरघरा इव अच्छरसारिच्छपुत्तलिया ॥ २३
सुयणो सरलसहावो परोवयारी कयत्थओ[7] धीरो ।
निवसइ जत्थ सुसीलो सज्जणलोओ सया मुइओ[8] ॥ २४
ससिनिम्मलसीलाओ लज्जाविन्नाणविणयकलियाओ ।
जत्थ वरअंगणाओ[9] घरंगणाइँ[10] वि न पासंति[11] ॥ २५

१ ग. २ °माणं माणं पवड्ढमाण°. ३ गयणगणं. ४ °धम्मा°. ५ °प्पासाया. ६ °सुयसु°. ७ °यत्थुओ. ८ सुइओ. ९ वरंगणाओ. १० घरगणाई. ११ पसंति.

तं नत्थि जं न दीसइ तम्मि पुरे वत्थु सुंदरसहावं ।
संपुन्नवन्नओ तो कह कीरइ तस्स विउसेहिं ॥ २६

अवि य –

दट्ठूण अ[न]न्नसमं निययसिरिं हरिसमज्झमत्तं व ।
नच्चइ व्व निच्चं पवणुद्धुयधयवडकरेहिं ॥ २७

तं पुण पालेइ तया असोगसिरिनत्तुओ कुणालसुओ ।
मोरियवंसपसूओ विक्खाओ संपई राया ॥ २८

पडिवन्नो जिणधम्मो जेण सुहत्थिस्स पायमूलम्मि ।
संबोहिओ य पायं भरहद्धे[1]णारियजणो वि ॥ २९

काराविया य पुहवी अणेगजिणभवणमंडिया जेण ।
जिणमयबहुमाणाओ अकरभरा सावया य कया ॥ ३०

तत्थेव पुरे निवसइ सिट्ठी नामेण उसभदत्तु त्ति ।
जीवाइतत्तवेई निच्चलचित्तो जिणमयम्मि ॥ ३१

जिणधम्मे धीरमई वीरमई नाम गेहिणी तस्स ।
कुंदेंदु[2]धवलसीला पिया हिया बंधुवग्गस्स ॥ ३२

तेसिं पि दुवे पुत्ता[3] कमेण जाया गुणेहिं संजुत्ता ।
कुलन[प. १ B]हयलससि-रविणो सहदेवो वीरदासो य ॥ ३३

एगा य वरा कन्ना पहसियरइलच्छिरूवलावन्ना ।
गुणसयभूसियगत्ता जाया नामेण रिसिदत्ता[4] ॥ ३४

उत्तमकुलुब्भवाणं कन्नाणं रूवकंतिकलियाणं ।
सहदेव-वीरदासा पिउणा गिन्हाविया पाणी ॥ ३५

एयं[5] च तेसिं सव्वेसिं कुलकमागयजिणधम्माणुपालणरयाणं इह-परलोयविरुद्धकिरियाविरयाणं जिणमुणिपूयासक्कारकरणुज्जयाणं परमयपयंडपासंडिवाहदुज्जयाणं विसुद्धववहारोवज्जियपहाणपसिद्धीणं पुव्वभवोवज्जियपुन्नाणुभावपवड्ढमाणधणं[6]समिद्धीणं सुहेण वच्चंति दीहा । इत्थंतरे रिसिदत्ता संपत्ता तरुणजणमणमयकोवणं जोव्वणं – जायाइं तसियकुरंगिलोअणसरिच्छाइं चंचलाइं लोयणाइं, पाउब्भूओ पओहरुग्गमो, खामीभूओ मज्झभागो पसाहिओ य तीहिं वलयरेहाहिं, समुट्ठिया य नाभिपउमस्स नालायमाणा रोमराई,

1 भरहद्धे°. 2 कुंदेंदु°. 3 पत्ता. 4 सिरिदत्ता. 5 एकं. 6 °माणवण°.

पवित्थरियं 'नियंबफलयं', अलंकियाओ जंघाओ हंसगमणलीलाए । किं बहुणा ? उक्कंठियाए व सव्वंगमालिंगिया एसा जोव्वणलच्छीए ।

तओ—

जत्तो जत्तो वचइ दंसणतण्हालुया नयरतरुणी ।
तत्तो घोलिरमालइलयं व फुल्लंधुया जंति ॥ ३६
विहवमयाओ केई रूवमयाओ बहुत्तेगवाओ ।
जायंति तं अणेगे कयविणया उसभदत्तस्स ॥ ३७
पडिभणइ उसभदत्तो—'तुम्मे सव्वे वि सुंदरा चेव ।
किंतु मम एस नियमो समाणधम्मस्स दायव्वा ॥ ३८
जं विसरिसधम्माणं न होइ परिणामसुंदरो नेहो ।
नेहं विणा विवाहो आजम्मं कुणइ परिदाहं ॥' ३९
जो जो वणेई कन्नं तं तं इब्भो निवारए एवं ।
नं य कोइ नियं धम्मं कन्नाकज्जे परिचयइ ॥ ४०

[रुद्ददत्तस्स रिसिदत्तोवरि रागाणुभावो]

अन्नया समागओ तत्थ कुवचंद्राभिहाण[नयर]वासी महेसरधम्माणुरत्तचित्तो महग्घभंडभरियजाणवाहणेहिं रुद्दत्तो सत्थवाहपुत्तो । आवासिओ समाणगुणधम्मस्स कुबेरदत्तस्स मित्तस्स भंडागारसालासु । तया य [प. २ A] तम्मि नयरे लोइओ कोइ महामहो वट्टइ । तत्थ य सविसेसुज्जलभूसणनेवत्थो सव्वलोओ समंतओ संचरइ । कोऊहललोयणलोलयाए रुद्दत्त-कुबेरदत्ता एगत्थं हट्टे निविट्ठा नायरजणचिट्ठियाइं निहालिउं पवत्ता ।

अवि य—

कत्थइ नचंति नडा कत्थइ कुद्दंति रासयं तरुणा ।
गायंति चचरीओ सिक्खाविविहकरणेहिं ॥ ४१
तह वट्टंते रंगे पिक्खणवक्खित्तमाणसा लोया ।
अन्नोन्नपेल्लणेणं इओ तओ तत्थ वियरंति ॥ ४२

एत्थंतरे मणिरयणकिरणुज्जोइयभूरिभूसणाडंबरा सुचंगदेवंगवसणंसुयनेवच्छा समाण[12]वयवेसाहिं सहियाहिं किंकरीहिं य परिवुडा[13] समागया तमुद्देसं रिसिदत्ता । सा य तम्मि जणसंवाहे पलोयणोगासमलहमाणी समारूढा

१ नियंनियबफलयं. २ अकलं°. ३ °वरणो. ४ बहुच°. ५ कुंदु. ६ वणेइ. ७ नि. ८ एगहत्थ. ९ °हातिय°. १० °यक्खेत्त°. ११ सुवंग°. १२ समाणं°. १३ परिखुडा.

पच्चासन्नहट्टोवरिं, निचलनयणा पेच्छणाइ पलोइउं पवत्ता । तं दट्ठूण विम्हिय-हियएण भणियं रुद्ददत्तेण – 'अहो छणपेच्छणयाणं वयंस ! रम्मया, जेण गयणंगणागयाउ अच्छराओ नियच्छंति ।' तओ हसिऊण भणियं कुवेरदत्तेण – 'किं दिट्ठाओ तए कहिंचि अच्छराओ जेण पच्चभियाणसि ।' इयरो भणइ – 'न दिट्ठाओ, किंतु अत्थि जणप्पवाओ जहा "ता[ओ] अणमिसनयणाओ हवंति" । अणमिसनयणाओ एयाओ समासन्नहट्टोवरिं चिट्ठंति, तेण भणामि अच्छराओ । न एरिसं रूवं माणुसीए संभवइ ।' पुणो पवुत्तं कुवेरदत्तेण –

'गामिल्लओ कलिज्जसि अदिट्ठकल्लाणओ य तं मित्त ! ।
जो माणुसि[1]-देवीणं रूवविसेसं न लक्खेसि[2] ॥ ४३
एसा इब्भस्स सुया नयरपहाणस्स उसभदत्तस्स ।
जा देवीसंकप्पं संपायइ माणसे तुज्झ ॥ ४४
एसा य विसालच्छी लच्छी व सुदुलहा अहन्नाणं ।
जम्हा न चेव लब्भइ कुलेण रूवेण विहवेण ॥ ४५
जो जिणसासणभत्तो रंजइ चित्तं इमीइ जणयस्स ।
सो सधणो अधणो वा लहइ इमं नन्नहा कहवि ॥ ४६
वत्थेहिं भूसणेहि य कीरइ न गुणो इमीएँ देहस्स ।
भुवणं उज्जोयंती छाइज्जइ केवलं कंती ॥' ४७
एयं निसामयंतो तं चेव पुणो पुणो पलोयंतो ।
सहस त्ति रुद्दत्तो विद्धो मयणस्स बाणेहिं ॥ ४८
परिभाविउं पवत्तो 'को णु उवाओ इमीएँ ला[प २B]भम्मि ? ।
न हु धारेउं तीरइ जीयं विरहम्मि[3] एयाए ॥ ४९
घेत्तुं बलॉ न तीरइ एसा भडचडयरेण महया वि ।
माव्वगज्जणस्स. भत्ते. संपड्डयम्मि. जीवंते. ॥ ५०
जइ मग्गिऊण पुव्वं अलहंतो सावयत्तणं काहं ।
तो डंभिउ त्ति काउं नियमा इच्छं नें साहिस्सं ॥' ५१

[रुद्ददत्तस्स कवडसावगधम्मांगीकरणं]

एवमणेगहा परिचिंतिऊण नत्थि उवायांतरमन्नं ति कयनिच्छओ गओ, धम्मदेवसूरिसमीवं । कयप्पणामेण पुच्छिओ धम्मं । साहिओ तेहिं साहुधम्मो । पसंसिओ तेण, भणियं च – 'अहो दुक्करकारया भगवंतो जेहिं एवंविहो कायर-

१ माणुस°. २ लक्खंसि. ३ विहरंगि. ४ तुला. ५ स. ६ साहिरस. ७ उवायंतेर°.

जणहिययउक्कंपकारओ 'दुरणुचरो'[1] अंगीकओ समणधम्मो । कया पुण होही सो अवसरो जया अम्हे वि एरिसं धम्ममणुचरिस्सामो ? संपयं पुण करेह मे गिहत्थोचियधम्मोवएसेणाणुग्गहो' त्ति । साहूहिं भणियं –

'जिणपूया मुणिभत्ती जीवाइपयत्थसद्दहाणं च ।
पालणमणुव्वयाणं वाया(सावय ?) गहिधम्मतत्तमिणं ॥' ५२
सोउं सवित्थरमिणं दंसियसंवेगसाहसो – 'भंते ! ।
लद्धं जं लहियव्वं पत्तं मे अज्ज जम्मफलं ॥ ५३
माया[3] पिया य तुब्भे वाढं परमोवयारिणो मज्झ ।
जेहिं इमो अइदुलहो[4] मोक्खपहो दंसिओ मज्झ ॥' ५४

तमेवं जाणिऊण संविग्गं, सिक्खावियं साहूहिं देवगुरुवंदणविहाणं, पच्चक्खाणपुव्वं सयलं सावयसमायारं । तओ सो सविसेस[5]दंसियसंवेगो विसिट्ठयरदेवपूयाइकिच्चं तहा काउमारद्धो जहा सव्वेसिं सावयाणं पहाणबहुमाणमायणं[6] संवुत्तो ।

अवि य –

'धन्नो महाणुभावो नूणं आसन्नसिद्धिगामि त्ति ।
जस्सेरिसो दुरप्पो (उदग्गो ?) समुज्जमो धम्मकिरियासु ॥' ५५
जणमणजणियच्छेरा उदारया सुट्ठु दाणधम्मम्मि ।
जिणसंघपूयणाइसु धणं तयाओऽव्वमं गणइ ॥ ५६
एवं पत्तपसंसो सगोरवं सावएहिं दीसंतो ।
सो रुद्ददत्तसड्ढो जाओ सुवियक्खणो धम्मे ॥ ५७
पव्वेसु सयलसंघं पूयइ वत्थाइएहिं वत्थूहिं ।
पडिलामेइ सुविहिए दिणे दिणे पत्तभरणेण ॥ ५८
जिणसाहुसावयाणं चरियाइं विम्हिओ निसामेइ ।
सिंगारकहासु पुणो न देइ कन्नं खणद्धं पि ॥ ५९
अवि पाविज्जइ खलियं सुसंजयाणं सुसावयाणं पि ।
निउणेहिं पंडिएहिं वि न तस्स मायापहाणस्स ॥ ६०

एवमाराहियइब्भपमुहसावयहिययस्स रुद्ददत्तस्स वोलिया गिम्ह [प. ३ A] पाउसा । समागओ निप्पन्नसयलसस्सासासियासेसकासयजणो वियसियकमलसंडमंडियमहिमंडलो पफुल्लमल्लियामालईपमुहपसत्थकुसुमुज्जलुज्जाणमणोहरो सर-

१ दुरणुचारो. २ °पहत्थ°. ३ मायो. ४ °दुछहो. ५ सविसेसविसेसदं°. ६ °भायणं. ७ °पूइया°. ८ °कहास. ९ पडिपुर्हि.

यसमओ । तमालोइऊण पुच्छिओ रुद्ददत्तेण उसभदत्तो–'समागओ मम जणयाएसो । तुम्हाणुन्नाए गच्छामि संपयं सट्ठाणं ।' इब्भेण भणियं–'जणयसमीवं[3] पट्ठियस्स को विग्घं करेइ ? तहा वि अम्ह धम्मे चेत्ता-ऽऽसोएसु चेइयभवणेसु समब्भुयभूयाओ अट्ठाहियामहिमाओ कीरंति । ताओ[5] ताव पेच्छाहि, तओ जहिच्छमणुचेट्ठेज्जासि ।' तेण भणियं–'जमाइसह । एअमाइसं-[6] तेहिँ भवंतेहिँ कओ महंतो ममाणुग्गहो । कहमन्नहा अम्हारिसाणमेरिसमहूसवदंसणं ति ।

धन्नो धन्नयरो हं साहम्मियसीह ! अज्ज मह तुमए ।
जं भवणनाहमहिमा निवेइया धम्मतिसियस्स ॥ ६१
जइ कहवि न साहिंतो गमणाभिप्पायमप्पणो[7] तुज्झ ।
मन्ने कल्लाणाणं अहो अहं वंचिओ होंतो ॥ ६२
सा सा पभवइ बुद्धी हुंति सहाया वि तारिसा नूणं ।
जारिसया संपत्ती उवट्ठिया होइ पुरिसस्स ॥' ६३

इच्चाइणा[8] कन्नसुहावहेण वयणविन्नासेणोसभदत्तस्स हियमाणंदिऊण अच्छिउं पवत्तो[9] रुद्ददत्तो जाव अट्ठाहियामहिमा संपत्ता ।

तत्थ य ता पढमं चिय उक्कंठियमाणसेहिँ सव्वेहिँ ।
पउणीकयं समग्गं जिणिंदभवणं[10] तुरंतेहिँ ॥ ६४
पढमं जिणबिंबाइं विहिणा विमलीकयाइँ सयलाइं ।
पवरेहिँ भूसणेहिँ पसाहियाइं[11] जहाजोगं[12] ॥ ६५
ससहरपंडरकोट्टं बहुवन्नविचित्तचित्तरमणिज्जं ।
मणितारियाभिरामं पडिलंबिरमोत्तिओऊलं ॥ ६६
नाणाविहवरवेहिँ पट्टंसुयदेवदूसपमुहेहिँ ।
कयउल्लोयं लोयं विम्हावितं समंतेण ॥ ६७
एयारिसमइरम्मं अमरविमाणं व कयजणपमोअं ।
इय विहियं जिणभवणं सहावरम्मं पि अहरम्मं ॥ ६८
तो रइया वरपूया जिणाण कुसुमेहिँ[13] पंचवन्नेहिँ ।
बहुविह[14]वंभत्तिसारा महुयरझंकार[15]सोहिल्ला ॥ ६९
तत्तो कुसुम[16]कुडीओ पडिमाण कयाउ परिमलड्ढाओ ।
कप्पूरागरुमाराउ धूवघडियाउ ठवियाओ ॥ ७०

---

१ ताम°. २ जाणया°. ३ °समीयं. ४ ममभूय°. ५ तीओ. ६ एमाइभसंवेहिँ. ७ °मप्पमाणो. ८ इचाणा ९ पवत्तो. १० जिणिंद°. ११ पसाहियाइं. १२ जया°. १३ कुसमेहिँ. १४ °विहड°. १५ °झंकार. १६ कुसम°.

सव्वत्थ विरइयाइं[1] फुल्लघराइं विचित्तरूवाइं ।
उड्डीकयपेच्छयजणमुहाइं[2] ममरोलिमुहलाइं ॥ ७१
बहुवन्नएहिं बहुभंचिएहिं बहुसत्थि [प ३ B]एहिं कयचोज्जं ।
रइयं जिणाण पुरओ सुट्ठु पहाणं बलिविहाणं ॥ ७२
खज्जगमोयगपमुहेहिं[3] विविहभक्खेहिं रइयसिहराइं ।
थालाइँ विसालाइं पुरओ थेगाइँ दिन्नाइं ॥ ७३
तह नालिकेरखज्जूरमुद्दियाअंबजंबपमुहाइं ।
विविहाइँ वणफलाइं पुरओ दिन्नाइँ धन्नेहिं ॥ ७४
इय निम्माणे[4] रम्मे पूयाबलिवित्थरे महत्थम्मि ।
हरिसुल्लुसियसरीरो मिलिओ लोओ तओ बहुओ ॥ ७५
गुमुगुमिंतगहिरमद्दलं, वासंतकुसुमवद्दलं;
कीरंतकरडरडरटं, पयट्टपट्टपडहपट्ट(ड ?)प्पडं;
वज्जंतसंखकाहलं, समुच्छलंतकंसालकोलाहलं;
भवियजणपावरयपमज्जणं, पारद्धं[5] भुवणनाहस्स मज्जणं;
चित्तेहिं विचित्तेहिं, उद्दामथुत्तेहिं;[6]
संजायतोसेहिं, गंभीरघोसेहिं;
पच्छा वियड्ढेहिं, त[......]सड्ढेहिं;
पम्हुट्ठसोएहिं, साहम्मियलोएहिं ।
जणजणियमहातोसो पए पए नच्चमाणवरगेओ ।
मज्जणमहो पयट्टो तिलोयनाहस्स वीरस्स ॥ ७६
कत्थइ विविहभूसणभासिणीओ नच्चंति विलासिणीओ;
कत्थइ गायंति[9] मंगलगीयाइं सोनासिणीओ;
कत्थइ लीलाए दिंति तालियाओ कुदंति रासयं कुलबालियाओ[10];
कत्थइ मंदमंदप्पणच्चिरीओ खइनाओ दिंति चच्चरीओ ।
एवं वड्ढियकड्डो बहुविच्छड्डो जणस्स सुहजणओ ।
विहिविहियसयलकिच्चो जिणनाहमहूसवो[11] वत्तो ॥ ७७
कयसयलदिनसकिच्चो काऊण य जागरं महापूयं ।
पडमट्ठाहियकारी परितुट्ठो वासरे बीए ॥ ७८
साहम्मियाण पूयं करेइ तोसेइ[12] गायणाईए ।
समण-समणीण विहिणा विहेइ पडिलाहणं हिट्ठो ॥ ७९

---

१ विरइयाउ. २ °मुहाइ ३ °पमुहेहिं ४ निम्माण ५ °नद्धि°. ६ थुथु°. ७ पारद्द. ८ °थुत्तेहिं. ९ गाइति. १० °वालिओ. ११ जिणनाण°. १२ तोसेय.

एवं सत्त तिहीओ विहियाओ अट्ठमे दिणे इब्भं।
विन्नवइ रुद्ददत्तो भालयलनिहिचकरमउलो ॥ ८०
'तुब्भे धन्नसउन्ना महाफलं जम्मजीवियं तुम्ह।
जे वीयरायमहिमं करेह एवं महासत्ता ॥ ८१
ता मह कुणसु पसायं अट्ठममहिमं करेमि जहसत्ती।
तुम्हाण पसाएणं करेमि नियजीवियं सहलं ॥' ८२
परिवड्डियपरितोसो इब्भो पडिभणइ–'होउ एवं ति।
गोरवठाणं अम्हं तुमाउ नऽन्नो मणे होइ ॥ ८३

किंतु–

अट्ठसयं दअ[······]लग्गं मोल्लेण पढमपूयाए।
तत्तो सयसयवुड्ढी जाया सव्वासु पूयासु ॥ ८४
तं कुणसु जहासत्तिं सेसं अम्हाण वच्छ! साहेज्जं।
तं चिय सफलं वित्तं जं वचइ तुम्हँ साहेज्जे ॥' [प. ४ A] ८५
इय वुत्तो सो धुत्तो ईसि हसंतो भणेइ तं इब्भं।
'तं होसु सुप्पसन्नो तो सव्वं सुंदरं होही ॥' ८६
इय भणिय गए तम्मी 'तओ वि अन्नो सुसावगो कत्तो?'।
इब्भस्स मणे फुरियं 'दिज्जउ एयस्स रिसिदत्ता ॥' ८७
इय चिंतिऊण तुरियं पुच्छइ सूरिं परेण विणएण।
'भयवं! अहिणवसड्ढो पडिहासइ केरिसो तुम्ह? ॥' ८८
इय पुट्ठो भणइ गुरू–'छउमत्था किं वयं वियाणामो।
जत्तियमेत्तं तुब्भे जाणामो तत्तियं अम्हे ॥ ८९
दीसइ अणन्नसरिसो सव्वो एयस्स धम्मववहारो।
परमत्थं पुण सावय! मुणंति सवन्नुणो चेव ॥' ९०
अह अट्ठमम्मि दिवसे पूया सव्वायरेण तेण कया।
तीयचउविहा जाओ सत्तसु पूयासु जावइओ ॥ ९१
दीणारकयसिहाइं थालाइं मत्थिएसु ठवियाइं।
जाइं दट्ठूण पुणो सव्वो वि हु विम्हयं पत्तो ॥ ९२

[रुद्ददत्तस्स रिसिदत्ताए सह परिणयणं]

अइविम्हिएण तत्तो इब्भेण सुसावया समाहूया।
भणिया य–'एस तुम्हं नवसड्ढो केरिसो भाइ? ॥' ९३

१ कुणस. २ सव्वीसु. ३ वग्ह. ४ सा. ५ रिसिदत्तो. ६ °चउविह.

एगेण तत्थ भणियं – 'अम्हे पुव्वं पमाइणो आसि।
एयस्स सन्निहाणा संपइ सुस्सावया[1] जाया ॥'　　९४
अन्नेण पुणो भन्नइ – 'धणवइ! सब्भावसावओ एसो।
किं जंपि[ए]ण बहुणा न हु दुद्धे[2] पूअरा[3] हुंति ॥　　९५
कन्नडेण किं कयाई इत्थियदव्वस्स कीरए चाओ?।
पज्जालिऊण भुवणं को किर उज्जालयं कुणइ? ॥'　　९६
इच्चाइ जंपियाइं निसुणंतो सावयाण सव्वेसिं।
जाओ कन्नादाणे निच्छियचित्तो इब्भो इब्भो ॥　　९७
निप्पाइया य तत्तो चरिमा अट्ठाहिया[4] महामहिमा।
इब्भेण तो तयंते निमंतिया सावया सव्वे ॥　　९८
सम्माणिऊण बहुहा सपुत्तसयणेण उसभदत्तेण।
सो रुद्दत्तसड्ढो एवं भणिओ सबहुमाणं ॥　　९९
'उत्तमकुलप्पसूओ कलाकलावम्मि सुट्ठु कुसलो त्ति।
जिणसासणभत्तीए अम्हं साहम्मिओ[5] जाओ ॥　　१००
जा जा कीरइ पूया उत्तमसाहम्मियस्स तुह अम्हे।
सा सव्वा वि हु तुच्छा पडिहायइ अम्ह चित्तम्मि ॥　　१०१
ता परिगिन्हसु इन्हिं कन्नारयणं इमं अणग्घेयं।
जीवियसव्वस्स इमं अम्हाणं तह य सयणाणं ॥'　　१०२
पडिभणइ रुद्दत्तो–'को वयणं[6] तुम्ह अन्नहा कुणइ?।
किं पुण मायावित्ते पुच्छिय जुत्तं[7] इमं काउं ॥'　　१०३
इब्भेण पुणो भणियं–'मा गिण्हालंबणं इमं अलियं।
जणएण लाभकज्जे जम्हा इह पेसिओ तेसिं ॥　　१०४
एसो परमो लाभो एयं दट्ठुं न रूसिही[8] जणओ।
घरमायंती लच्छी सुहावहा कस्स नो होइ? ॥' [प. ४B]　　१०५
'एवं' ति तेण वुत्ते[9] कारियमिब्भेण हट्ठतुट्ठेण।
लग्गे गणयविदिन्ने विवाहकिच्चं निरवसेसं ॥　　१०६
आणंदियसयलजणो वित्ते वीवाहमंगले तुट्ठो।
हिययम्मि रुद्दत्तो संपुन्नमणोरहो[10] जाओ ॥　　१०७
ठाऊण केइ दियहे सबुद्धिकोसल्लरंजिओ धणियं।
तं रिसिदत्तालाभं मन्नंतो रज्जलाभं व ॥　　१०८

---

१ सुसावया. २ दुद्धे. ३ पुंअरा. ४ अट्ठाहिया. ५ साहम्मिम्मिओ. ६ वयणं. ७ जुत्तं. ८ रुसिही. ९ वुत्तो. १० °मणोहरो.

तत्तो पसत्थदिवसे संभासियसयणपरियणं सयलं।
ससुरकुलाणुन्नाओ संचल्लो नियपुराभिमुहो[1] ॥ १०९
संभासिया य पिउणा रिसिदत्ता नेहनिब्भरमणेण।
'सयलसुहमूलभूए सम्मत्ते निच्छिया होज्ज ॥ ११०
चियवंदणसज्झाए पच्चक्खाणम्मि उज्जुया होज्ज।
सुद्धं[2] सुसीलविणीया दयालुया सव्वजीवेसु ॥ १११
जह सायरमज्झगओ पोयं मोत्तूण मंदबुद्धिल्लो।
जलहिम्मि दिन्नझंपो होइ नरो दुहसयाभागी ॥ ११२
तह भवसायरमज्झे जिणमयपोयं सुदुल्लहं मुद्धे!।
मा मुंचसु जेण न होसि भायणं दुक्खलक्खाणं ॥' ११३
एवं बहुप्पयारमणुसासिऊण [...............]।
मउवंचिया(?) सपरियणेणोसभदत्तेण रिसिदत्ता ॥ ११४
जामाउगो वि भणिओ – 'चिंतामणिकप्पसालसारिच्छं।
जिणधम्मं मा मुंचसु कल्लाणपरंपराहेऊ ॥ ११५
साहम्मिणि तुह एसा धम्मसहाओ इमीइ तं होज्ज।
मुद्धजणोहसणाओ मा मुंचसु धम्मबोहित्थं ॥' ११६
इयरेण सो पवुत्तो – 'भरियं उयरं गुरूवएसेणं[3]।
दिट्ठं निसुणेसु पुणो अहयं काहं जमेत्ताहे ॥ ११७
मा कुण इमीएँ चिंतं नासीभूया[4] इमा ममेयाणिं।
तह काहामि जहेसा न सरइ करिणि[5] व विंझस्स ॥' ११८
एवं कयसंभासो सहायसहिओ इमो[6] समुच्चलिओ।
उचियसमएण तत्तो संपत्तो कूवचंद्रम्मि[7] ॥ ११९

[रिसिदत्ताए सस्सुरगिहे गमणं, सधम्मा परिब्भंसो य]

चिरकालाओ मिलिओ उक्कंठियमाणसाण सयणाण।
लज्जाएँ नेय गेण्हइ नामं पि जिणिंदधम्मस्स ॥ १२०
रिसिदत्ता वि हसिज्जइ कुणमाणी पूयवंदणाईयं।
जणएण विदिन्नाणं मणिकंचणघडियपडिमाणं ॥ १२१
सासूयं पिव भणिया सासु-नणंदाहिँ सा वि पुणरुत्तं।
'जइ चिट्ठसि अम्ह गिहे ता मुंचसु अप्पणो धम्मं ॥ १२२

१ °राभिसहो. २ सुन्दु. ३ °एसण. ४ नासइ°. ५ करणी. ६ इमी. ७ °चंद्रम्मि.

भत्तारदेवयाओ नारीओ होंति जीवलोगम्मि ।
जं किं पि कुणइ भत्ता ताओ वि कुणंति तं धम्मं ॥ १२३
अम्हाण वि धूयाओ येगाओ संति सावयकुलेसु ।
ताओ सावयधम्मं कुणंति अम्हे न रूसामो ॥' १२४
एसो पुण वुत्तंतो रिसिदत्ताए वि भत्तुणो सिट्ठो ।
तेणावि तओ भणियं दंसियनेहं इमं वयणं ॥ १२५
'इट्ठा सि मज्झ सुंदरि ! जीवियभूया सि सुणसु म[ह] वयणं ।
सयणाणं लज्जाए न हु तीरइ पालिउं धम्मो ॥ [पृ. ५ A] १२६
तुह कज्जे मइँ धम्मो परिचत्तो ताव तित्तियं कालं ।
मम कज्जेण पुणो तं न चयसि किं दिट्ठचेट्ठो वि ॥ १२७
एयं घरसव्वस्सं सव्वं पि समप्पियं मए तुज्झ ।
को जाणेइ किसोअरि ! को धम्मो सुंदरो नो वा ॥' १२८

तओ सा किंचि तस्से नेहाओ, किंचि सासुय-नणंदा[ण] भयाओ, किंचि उवहासलज्जाए, किंचि अप्पसत्तयाए पम्हुसिऊण जणयवयणं परिचत्तजिणसासणकिच्चा तेसिं चेव अणुट्ठाणं काउमारद्धा ।

अवि य–

किच्छेण [ए]स जीवो ठाविज्जइ उत्तमे गुणट्ठाणे ।
लीलाए च्चिय निवडइ किच्छे मिच्छत्तपंकम्मि ॥ १२९
जिणधम्मममयभूयं काउं को रमइ तुच्छमिच्छत्ते ।
जइ ता पुव्वकयाइं न होंति कम्माइँ गरुयाइं ॥ १३०
पुव्वज्जियमायवसा अमयं वमिऊण तेहिँ दोहिं पि ।
हालाहलं महाविसमापीयं मूढचित्तेहिं ॥ १३१

[पीइगिहाओ रिसिदत्ताए संबंधविच्छेओ, पुत्तजम्मं च]

मग्गंतेण पउत्तिं विन्नायं सव्वमेवमिब्भेण ।
सिट्ठं च बंधवाणं–'मुट्ठा मो ! तेण धुत्तेण ॥ १३२
कन्नालाभनिमित्तं सुसावगत्तं पयासियं तेणं ।
पेच्छ कह सयलसंघो वि मोहिओ गूढहियएण ॥ १३३
धम्मच्छलेण छलिया अम्हे निउणा वि तेण पावेण ।
ता सच्चमिणं जायं धुत्ताण वि होंति पडिधुत्ता ॥ १३४

निद्धम्मकुलप्पसुओ[1] पावो सो ताव तारिसो होउ।
चालत्तगहियधम्मा चुक्का कह पिच्छ रिसिदत्ता॥ १३५
सच्चमिणं सा वरई[3] दिन्ना अम्हेहिं तस्स पावस्स।
तहवि कुलागयधम्मो तीए न हु आसि मोत्तव्वो॥ १३६
ता इत्थ इमं जुत्तं तीए तत्ती न काइ कायव्वा।
सा पुव्विं पि न जाया मया य सव्वेहिं दट्ठव्वा॥ १३७
जो पुण तीसे तत्तिं[5] काही अम्हाण सो वि तत्तुल्लो।
इय साहियम्मि तत्ते मा अम्हं को वि कुप्पिज्जा॥' १३८

किं बहुणा?–

तह सा चत्ता तेहिं जह किर नगराणमंतरं तेसिं।
जोयणदुगमेत्तं पि हु संजायं जोअणसयं च॥ १३९

तओ 'जो पुव्विं गहियपाहुडे पईदियहं मम पउत्तिनिमित्तं पुरिसे पेसंतो सो संपइ मासाओ वासाओ वि न पेसइ' त्ति मुणियजणयकोवाइसया किंकायव्वमूढा कालं गमेउमारद्धा रिसिदत्ता, जाया य कालेण आवन्नसत्ता। तओ दूयपेसणेण भणिओ तीए ताओ–'कीसाहं तुब्भेहिं परिचत्ता?। तुब्भेहिं चेव अहमत्थ मिच्छत्तपंके पक्खित्ता। ता खमसु मम एगमवराहं। नेहि ताव गिहं। तत्थ-ट्ठिया आएसकारिणी चिट्ठिस्सामि। अन्नं च सव्वाओ विलयाओ पढमं पिइगिहेसु पसवंति, ता कह लोयाववायाओ न बीहेसि?।' इच्चाइ बहुहा भणिए-[प. ५ B]ण पडिभणियमिब्भेण–

'जप्पभिइ चिय तुमए धम्मो चत्तो जिणिंदपन्नत्तो।
तप्पभिइ चिय अम्हं मया तुमं किमिह बहुएण॥' १४०
सोऊण जणयवयणं सुइरं परिझूरिऊण हिययम्मि।
जाया मणे निरासा संठवइ पुणो वि अप्पाणं॥ १४१
जाओ कमेण पुत्तो[9] बहुलक्खणसंगओ कणयगोरो।
नियकुलजणियाणंदो तुट्ठा दट्ठूण तं माया॥ १४२
सोऊण सुयं जायं कयाइ तूसेज्ज मज्झ जइ जणओ।
इय पेसेइ तुरंती वद्धावयमाणवं पिउणो॥ १४३
इब्भेण सो पवुत्तो–'अवरस्स वद्धावओ तुमं होसु।
अम्हाण नत्थि धूया रिसिदत्तानामिया कावि॥' १४४

---

१ °प्पसूओ. २ चुक्का. ३ सच्चमि°. ४ विरई. ५ तत्ती. ६ पयदि°. ७ °काइयव°. ८ दूया°. ९ पत्तो. १० ससेज्ज. ११ मस.

एवं च नामकरणे वुट्ठावण-मुंडणाइपव्वेसु ।
आहूओ वि न पत्तो कुलगेहाओ मणूसो वि ॥ १४५
तं चेव बालयं तो हियए आलंबणं दढं काउं ।
परिवालिउं पवत्ता एसा एगग्गचित्तेण ॥ १४६

[नम्मयासुंदरीजम्मवण्णणा]

अह वद्धमाणनयरे जिट्ठाए उसमदत्तसुण्हाए ।
नामेण गुणेहिँ य सुंदरीएँ सहदेवभज्जाए ॥ १४७
उववन्नो कयपुन्नो को वि जिओ सुंदरो [······] गब्भे[1] ।
घणियं धम्मज्झाणे यं उज्जमा(या?) जेण संजाया ॥ १४८
परिवड्ढियलायन्ना इट्ठा पइणो सपरियणस्सावि ।
ससुरस्स सासुयाए सा जाया तो विसेसेण ॥ १४९
नवरं पंचममासे संजाओ तीएँ दोहलो एसो ।
नम्मयँमहानईए गंतूण करेमि मज्जणयं ॥ १५०
सा पुण परिगट्ठदेसे गंतुं तीरइ सुहेण नो तत्थ ।
फज्जमसज्झं नाउं द[इ]यस्स वि सा न साहेइ ॥ १५१
झिज्झइ अपुज्जमाणे डोहलएँ सयलमंगमेईए ।
तत्तो तं सहदेवो दट्ठूणं पुच्छए एवं ॥ १५२

'किं सुयणु ! तुह मणिट्ठं संपज्जइ नऽम्ह मंदिरे किंचि ।
किं केणइ परिभूआ बाहइ किं कोइ तुह रोगो ? ॥ १५३
जेणेवं छउयंगी दरिद्दघरिणि व्व नज्जसि सचिंता ।
साहेहि फुडं मुद्धे ! जेण पणासेमि ते दुक्खं ॥' १५४
तीए भणियं – 'पिययम ! असज्झमेयं न साहिमो तेण ।
वरमेगा हं झीर्णा किं तुह उव्वेयकरणेण ? ॥' १५५
सहदेवेण पवुत्तं – 'नासज्झं मज्झ विज्जइ जयम्मि ।
ता कहसु फुडं अग्घं को जाणइ थवि(गि?)यरयणाई(णं ?)'॥१५६
इय वुत्ताए ताए सब्भावो साहिओ तओ तेण ।
भणियं – 'किंचिंयमेत्तं निव्वुयहियया दढं होसु ॥' १५७
आपुच्छिऊण जणयं भणिया सव्वे वयंसया तेण ।
'तुरियं करेह कडयं गच्छामो नम्मयं दट्ठुं ॥' १५८

1 °द वि सह°. 2 गब्भे. 3 °णे जाय उ°. 4 नम्मइ°. 5 सिज्झइ. 6 पीणा. 7 किंचेय°. 8 वियंसया.

भणियाणंतरमेव य पमोयभरनिब्भरेहिं तेहिं पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, गहियाइं अणेगाइं कयाणगाइं, सहाईकओ नाणाविहपहरणविहत्थो सुहडसत्थो। चालियाओ बहुविहाओ [प. ६ A] पयईओ। समुच्छाहिया गंधव्वनट्टकारया चारणगणा। पयट्टा कोउगावलोयणलालसा सयमेव पभूया लोया। तओ पसत्थवासरे कयकोउयमंगला परिवारपरिवारिया पवड्ढंतपमोयउद्धुरेहिं[1] बंधवेहिं सपुत्तकलत्तेहिं मेत्तेहिं सहिया चलिया दो वि सहदेव-वीरदासो[2]। कहं?

गंभीरतूरघोसपडिसद्दपूरियनहंगणा, बहलधूलीपडलधूसरियपेच्छयजणा;
वज्जंतसंखकाहला, वणे वणे पलायमाणपुलिंदनाहला;
गामे गामे पलोएज्जमाणा गामिएहिं, गोरविज्जमाणा गामसामिएहिं;

कुणमाणा महब्भुयभूयाओ पूयाओ जिणिंदाणं गामनगरेसु, अट्टया(?)-विलंबिएहिं पयाणएहिं सुत्थीकयसमत्थसत्थिया सुहंसुहेण संपत्थिया। पत्ता कमेण नाणावणराइरमणीयं रेवासन्न[3]भूमिभागं। परितुट्ठा[4] य सुंदरी दट्ठूण बहलतरंगरंगंतकुंचकारंडव[6]हंससारसाइविहंगसंगसंपत्तरम्मयं महा[नइं?] नम्मयं।

आवासिओ य सव्वो कडयजणो हरिसनिब्भरो तत्थ।
सहदेवसमाएसा भूभाए सग्गरमणीए॥ १५९
बीयदिणम्मि सदारा कयसिंगारा मणोहरायारा।
मज्जणकीलाहेउं रेवातीरं गया सव्वे॥ १६०
पेच्छंति तयं सरियं महल्लकल्लोलभीसणायारं।
कत्थइ अन्नत्थ तरंगभंगुरं सुप्पसन्नं च॥ १६१
कत्थइ गहिरावत्तं कत्थइ कीलंततारुयनरोहं।
कत्थइ मज्जंतमहागयंदमयसुरहिजलवाहं॥ १६२
विंझगिरिपायपायवपगलियघणकुसुमगोच्छचिंचइयं।
अनिमिसलोयणाओ थिरोदयं तं दहं दट्ठुं॥ १६३
हरिसेण तं पविट्ठा उब्बुडनिब्बुड्डणेण कयहासा।
विलसंति ते सहेलं सम्मं महिलाहिं परितुट्ठा॥ १६४
सिंगियजलेण केई पहणंति परोप्परं पहासिल्ला।
अन्ने हरियंदणपंडियाहिं हम्मंति महिलाणं॥ १६५
परिकीलिऊण सुइरं संपत्तपरिस्समा समुत्तिन्ना।
तत्तो महद्दहाओ करिंति जिणबिंबपूयाइं॥ १६६

---

१ °उद्धरेहिं. २ °दसो. ३ °सवव°. ४ पडिगुट्ठा. ५ छहल°. ६ °कारंडव°. ७ महा°. ८ कीइ.

अइसयपमोयपडिहत्थमाणसा सुंदरी विसेसेण ।
कुणइ पडिमाण पूयं पडिपुन्नमणोरहा जाया ॥ १६७

एवं दियहे दियहे कीलंताणं अतित्तचित्ताणं ।
पोसदिवसो व्व सहसा मासो समइच्छिओ तेसिं ॥ १६८

[नम्मयानईतीरे नम्मयपुरनिवेसो]

नाणादेसाहिंतो कडयं आवासियं निएऊण ।
विविहकयाणगकलिया पत्ता वेगे तहिं वणिया ॥ १६९

कयविक्कओ[1] पवत्तो दिणे दिणे सयलकडयलोयस्स ।
कयपरिओसो लाभो मणोरहागोयरो जाओ ॥ १७०

संलवियं च जणेहिं—'कयउन्नो को वि सुंदरीगब्भे ।
जस्स कएणऽम्हाणं[2] पवड्डिया[3] संपया एसा ॥' १७१

अन्ने भणंति—'वलियं[4] वत्थू एयस्स भूमिभाग[प. ६ B]स्स ।
नयरनिवेसं काउं चिट्ठह भो किं न एत्थेव ? ॥ १७२

किं तत्थ वड्ढमाणे[5] मुंडा(?) अम्हाण रोविया वाडा ।
चिट्ठंति जेण गम्मइ सुरलोयसमं इमं मोत्तुं ॥' १७३

उवलद्धजणाकूओ सहदेवो सुंदरिं[6] तओ भणइ ।
'चिट्ठामो किं भद्दे ! रम्मम्मि इहेव ठाणम्मि ॥' १७४

तीए भणइ—'पिययम ! रेहंतमहंतलोलकल्लोलं ।
पिच्छंतीए एयं ममावि मणनिव्वुई जाया ॥ १७५

ता जइ रोचइ तुम्हे कुणह निवेसं इहेव ठाणम्मि ।
किर सव्वो लोओ जुत्ताजुत्तं फुडं मुणइ ॥' १७६

तओ सहदेवेण वीरदासेण सद्धिं[7] समच्छिऊण पसत्थवासरे पारद्धो नयरनिवेसो—ठावियाइं वत्थुविज्जाविय़क्खणेहिं सुत्तहारेहिं तियचउक्कचच्चराइं, संठावियाओ जहाजोगं पासायभवणपंतीओ, आहूओ सव्वेहिं पि नियनियकुडुंबपरिगरो, कारियं च सुरिंदमंदिरसुंदरं जिणमंदिरं, दिन्नं च नामं नयरस्स नम्मयपुरं ति । किं बहुणा ?—

विन्नायमयलवत्तो[8] संजुत्तो सयलसयणवग्गेणं ।
सेट्ठी वि उसभदत्तो तुरियं तत्थेव संपत्तो ॥ १७७

---

१ °विक्कए. २ न्हाण. ३ पवड्डिया. ४ बलिय. ५ चिय. ६ वड्ढमाणा. ७ गम्मई. ८ सुंदरी. ९ सिद्धिं. १० °वग्गेण.

°करभरविवज्जियाणं[1] अपीडियाणं परेण केणावि ।
वच्चइ सुहेण कालो जणाण सग्गे सुराणं च ॥ १७८
अह वट्टंते चंदे गहबलजुत्तम्मि सुंदरे लग्गे ।
सा सुंदरी पसूया धूयारयणं कमलनयणं ॥ १७९
पढमो-अवच्चलाभो पुत्तऽब्भहिया य वालिया एसा ।
इय पुत्तजम्मणम्मिव वद्धावणयं कयं पिउणा[2] ॥ १८०
सयलो वि नगरलोगो जंपइ आणंदपुलइयसरीरो ।
'धन्नाण इमा बाला लच्छि व [घ]रे समोइन्ना ॥' १८१
छट्ठीजागरणाई किचं सयलं पमोयकलिएहिं ।
जणएहिं तीएँ विहियं पढमम्मिव पुत्तजम्मम्मि ॥ १८२
वत्तम्मि वारसाहे सयणसमक्खं [च ?] सुहमहुत्तम्मि ।
गेज्जंतगीयमंगलमविरयवज्जंतवरतूरं ॥ १८३
जं नम्मयसरियामज्जणम्मि जणणीएँ डोहलो जाओ ।
तं होउ नम्मयासुंदरि त्ति नामं धरमिमीएँ[3] ॥ १८४
अइसुंदरनाममिमं पस्सइ सव्वो वि पुरजणो सुइओ ।
पुन्नब्भहिओ जीवो किर कस्स न वल्लहो होइ ॥ १८५
हत्थाहत्थं घिप्पइ जणेण अन्नोन्नपेच्छणपरेण ।
वड्ढइ वड्ढियंकंती सियपक्खे चंदलेह व्व ॥ १८६
बोल्लाविज्जइ पिउणा पंचनमोक्कारभणणकुड्डेण ।
देवगुरूण पणामं सिक्खाविज्जइ हसिरवयणा ॥ १८७
सव्वस्स चेव इट्ठा विसेसओ वीरदासलहुपिउणो ।
चीवंदणाइकिचं पढमं सिक्खाविया तेण ॥ १८८
नारीजणोचियाइं विन्नाणाइं तओ वि चउसट्ठी ।
तओ [य] समप्पिया साहुणीण सम्मत्त[प. ७ A]नाणट्ठा ॥ १८९
जीवाइनवपयत्था नाया तीए विसुद्धपन्नाए ।
पढियाइँ पगरणाइं वेरग्गकराइँ णेगाइं ॥ १९०
सरमंडलाभिहाणं तीए कुड्डेण पगरणं पढियं ।
नर-नारीण सरूवं गुणागुणे जेण नज्जंति ॥ १९१
गिण्हइ सुहेण जं जं सुणेइ पाएण एगसंघातं ।
पम्हुसइ नेव गहियं तहावि पढणुज्जमो तीसे ॥ १९२

१ °भरतिविज्जियाणं. २ पिउणो. ३ वरममीए. ४ वढिय°. ५ समत्य°. ? नम° ३

सो वि महेसरदत्तो रिसिदत्तानंदणो नियपिउणा ।
बावत्तरीकलाओ पढाविओ लोगपयडाओ ॥ १९३

[नम्मयासुंदरीरूववण्णणा]

अह नम्मयापुराओ केई वणिया कयाणगमपुव्वं ।
घेत्तूण लाहहेउं संपत्ता कूवचंदम्मि ॥ १९४
रिसिदत्ताए पुट्ठा–'नम्मयपुरवासिणो फुडं तुब्भे ।
तो उसभदत्तमिब्भं परियाणह निच्छयं नो वा ? ॥ १९५
सहदेव-वीरदासा तस्स सुया विस्सुया पुहइवीढे ।
ते परियाणह तुब्भे तह तेसिं पुत्तभंडाइं ? ॥' १९६
हसिऊण तेहिं भणियं–'चंदं गुरुसुक्कसंगयगयाणं ।
को न वियाणइ सुंदरि ! जं भणियव्वं तयं भणसु ॥' १९७
तीए भणियं–
'नम्मयसुंदरिनामा सुवइ सहदेववल्लहा धूया ।
पयरूवाई तीसे जइ जाणह तो फुडं कहह ॥' १९८
वणिएहिं वुत्तं–
'तारुन्नयकयसोहं तीसे रूवं न वन्निउं सक्का ।
वन्नंताणं नियमा अलियपलावत्तणं होइ ॥ १९९
जइ सुंदरि ! भासेमो छत्तं पिव मेहडंबर सीसं ।
ता सीमंतयसोहा तीसे वि निवारिया होइ ॥ २००
छणचंदसमं वयणं तीसे जइ साहिमो सुय[णु !] तुज्झ ।
तो तकलंकपंको तम्मि समारोविओ होइ ॥ २०१
संखुव्वेसमं गीवं रेहातिगसंजुयं चि जइ भणिमो ।
वंकत्तणेणं सा दूसिय च्चि मन्नइ जणो सव्वो ॥ २०२
करिकुंभविब्भमं जइ तीसे वच्छत्थलं च जंपामो ।
तो चम्मयोरयाफासफरुसया ठाविया होइ ॥ २०३
विब्भहलकमलनालोवमाउ बाहाउ तीएँ जो कहइ ।
सो तिक्खकंटयाहिट्ठियत्तदोसं पयासेइ ॥ २०४
किंकिल्लिपल्लवेहिं तुल्लो करपल्लवि च्चि भितेहिं ।
नियमा निम्मलनहमणिमंडणयं होइ अंतरियं ॥ २०५

१ नम्मइ°. २ °ल्लुस. ३ मासेसो ४ सवुक्क°. ५ °इगमज्जुप. ६ पंकत्तणेण. ७ घइ. ८ शुछ. ९ वितेहिं.

जइ भासिज्जइ तीसे रंभाथंभोवमाउ जंघाओ।
ता किर तासिभवस्सं असारया होइ वज्जरिया॥ २०६
कीरंते चलणाणं कुम्मुन्नमाणम्मि बुहजणो[1] भणिही।
निम्मंसकक्खडाणं नणु तेसिं केरिसी सोहा?॥ २०७
जं जं तीसे अंगं वन्नेमो तस्स तस्स भुवणम्मि।
नत्थि समं उवमाणं कह तीए वन्निमो रूवं॥ २०८
सग्गम्मि अच्छरा जइ तीए तुल्ला इमं न वत्तव्वं।
जं सा विलोलनयणा इयरीओ[2] थद्ध[3]दिट्ठीओ॥' २०९

[रिसिदत्ताए सपुत्तकये नम्मयासुंदरीमग्गणा]

[ए]वं वणिएहिं वन्निज्जमाणं नम्मयाए निरुवमरूवसंपयं[4] निसामयं[प ७B]ती चिंतिउं पवत्ता रिसिदत्ता 'कह नाम तं कन्नारयणं महेसरदत्तस्स करे विलग्गिही'[5]? न ताव ताओ असाहम्मियस्स दाही। पडिवन्नसावगधम्मस्सावि दिट्ठजणयचरिया ते न पत्तियंति। एगवारमेव कट्ठमयथालीए रज्झइ। को दिट्ठतक्करेहिं अप्पा मोसेइ? न चाहं[6] तत्थ गया दंसणमवि लहिस्सं। ताव पेसेमि पडिवत्तिवयणकुसलं कं पि दूयं ति। मा कया[इ] समागयकालम्मभावा[7] वे पसीयंति' एवं संपहारिऊण पेसिओ तीए पडिवत्तिवयणकुसलो विसिट्ठपुरिसो। संपत्तउचियसम्माणेण य[8] भणिओ तेण इब्भो—'ताय! अबलाओ अबलाओ चेव हुंति, विसेसओ ससुरकुलगयाओ। जओ—

एगत्तो रडइ पई एगत्तो सासुया य परिसवइ।
दूमंति नणंदाओ रूसइ सेसो वि कुललोगो॥ २१०
परऽहीणाणं ताणं नियधम्मो तह य कह णु निव्वहइ।
की किर रिसिदत्ताए दोसो सम्मं विभावेह॥ २११
अणुतावग्गिपलित्ता अवराहं अप्पणो खमावेइ।
मग्गइ धम्मसहायं सा नम्मयसुंदरीकन्नं॥ २१२
काही जिणवरधम्मं तीए संगेण नत्थि संदेहो।
एस महेसरदत्तो कुणह इमं पत्थणं तीए॥' २१३
इब्भेण तओ भन्नइ—'पत्तिज्जामो न तस्स धुत्तस्स।
जेण तया डंभाओ सयजणो[9] विम्हयं नीओ॥ २१४
जारिसओ सो जणओ तणएण वि तारिसेणं[10] होयव्वं।
न कयावि अंबगुलिया निवडइ पासम्मि निंबस्स॥ २१५

१ बुहजणो. २ इइयरीओ. ३ थद्धदि°. ४ °रूवस°. ५ विलग्गही. ६ चाहं. ७ °भाता. ८ स. ९ °जण. १० आरिसेण.

एवं ता रिसिदत्ता अणवरयं दहइ माणसं अम्ह ।
ता जाणंता वीयं न पक्खिवामो तहिं अम्हे ॥' २१६

एवं बहुप्पयारं भणिओ रुद्देण सत्थवाहेण ।
दूओ विलक्खहियओ गओ निरासो नियं ठाणं ॥ २१७

सोउं दूयमुहाओ सयणुल्लावं सिणेहनिरविक्खं ।
'हा सव्वहा वि चत्ता नियपिउणा पावकम्मा हं ॥' २१८

इय सा विमुक्ककंठं रिसिदत्ता रोविउं तह पवत्ता ।
कारुन्नपुन्नहियओ अन्नो वि जणो जह परुन्नो ॥ २१९

आसासिऊण बहुसो भणिया सा नंदणेण—'किं अम्मो! ।
किं रुअसि अणाहा इय कहेहि दुहकारणं मज्झ ॥' २२०

तीए भणियं—'पुत्तय! तुह पिउणा डंभिएण होऊण ।
परिणित्तु इहाणीया चयाविया तह य जिणधम्मं ॥ २२१

उज्झियजिणधम्माए चत्ता चत्ता वि मज्झ सयणेहिं ।
आलानडियाएँ ममावि वोलिओ एत्तिओ कालो ॥ २२२

अत्थी उत्तमरूवा दुहिया तुह माउलस्स मे पिसुयं ।
सा दूयपेसणेणं तुह कज्जे जाइ[या] वच्छ! ॥ २२३

सा ताव न रुद्द च्चिय मह पिउणा निट्ठुरं तहा भणिओ ।
पुत्तऽसहिएण दूओ जहा निरासा अहं जाया ॥ २२४

अणुरूवा तुह पुत्तय! जइ सा हत्थे न लग्ग[प ८ A]ई बाला ।
किं जीविएण ता मह इय दुक्खाओ मए रुन्नं ॥' २२५

तेण पवुत्तं—'अम्मो! कयावराहाण किमिह रुन्नेण ।
कुवियसयणेहिँ विहिओ सहियव्वो परिभवो सव्वो ॥ २२६

अन्नं च—

कारणवसेण कुविया वि सज्जणा मगुलं न चिंतंति ।
विहडंति नेव वसणे जो उ परो सो परो चेव ॥ २२७

जइ तुज्झ इमं दुक्खं ता हं गंतूण तं विवाहेमि ।
अवराहविरहिओ हं न कोवहेऊ जओ तेसिं ॥ २२८

कुविओ वि दड्ढ ताओ विणीयवयणस्स तूसिही मज्झ ।
पज्जलइ नेव जलणो सिंचंतो वारिधाराहिं ॥' २२९

तीए वुत्तं – 'पुत्तय ! माइण्हियमोहिओ जणो पायं ।
परिहरइ दूरउ चिय महासरं नीरपडिपुन्नं ॥ २३०
विणएण य चाएण य तुह पिउणा रंजिओ जणो तइया ।
सब्भावविणीयस्स वि पत्तियइ कहं तओ ताओ ? ॥' २३१
भणियमियरेण – 'अम्मो ! पेच्छाहि ममावि ताव कोसल्लं ।
आइससु जेण तुरियं पूरेमि मणोरहा तुज्झ ॥' २३२
पडिभणइ तो हसंती रिसिदत्ता – 'पुत्त ! होउ तुह सिद्धी ।
समणुन्नाओ सि मए होउ सिवं मंगलं तुज्झ ॥' २३३

[महेसरदत्तस्स मायामहगिहगमणं]

आपुच्छिऊण जणयं महया सत्थेण सो तओ चलिओ ।
पत्तो कमेण तत्तो अइरम्मं नम्मयानयरं ॥ २३४

तओ नयररम्मयाविम्हियमणेण बहिरुज्जाणे संठिएणेवं पेसिओ जाणावणत्थं मायामहस्स समीवं पुरिसो । तेणावि सपुत्तपरियणो सुहनिसन्नो पणमिऊण भणिओ सत्थवाहो – 'एस तुम्ह नंदणीनंदणो मायामहस्स दंसणुक्कंठिओ विविहभंडभरियजाणवाहणो समागओ महेसरदत्तो, विन्नवेई य – "दंसेह कं पि भंडनिक्खेवणट्ठाणं ति" । तमायन्निऊणं तिवलीतरंगभंगभालवट्टेण सकोवं भणिओ सत्थवाहेण – 'न किंचि अम्ह तेण पओयणं । चिट्ठउ जत्थ अन्ने वि देसंतरवणिया चिट्ठंति ।' तओ कयकरंजलिमउलिणा विन्नत्तं सहदेवेण – 'ताय ! मा एवमाणवेह । सो बालो अदिट्ठदोसो तुम्ह दंसणुक्कंठिओ समागओ । अन्नस्स वि घरमागयस्स उचियउवयारो कीरइ । जेण भणियं –

जेण न किंचि वि कज्जं तस्स वि घरमागयस्स जे सुयणा ।
न्यूणं, प्रहट्ठवयणा, ललियसीसं, आसणं, दिति ॥, २३५,

ता सव्वहा तस्सावमाणकरणं न जुत्तं । सम्माणिओ समुप्पन्नसिणेहो मा कयाइ जिणधम्मं पडिवज्जेज्जा ।' 'एवं होउ त्ति ।'

तओ भणिओ पगंतुं [·········] सहदेव-वीरदासेहिं ।
दंसियगरुयसणेहो पवेसिओ नयरमज्झम्मि ॥ २३६
उत्तारियं च भंडं भंडागारेसु निरुवसग्गेसु ।
तओ [य] विणयमहग्घं पणओ माया[प. ८ B]महो तेण ॥ २३७

---

१ इब्भाविवणीयस्स. २ संठिपणव. ३ °निसन्ना. ४ विन्नवइ. ५ तमाइन्निऊण. ६ तिवल्ली°. ७ सो. ८ °दोसा. ९ °मज्झम्मि.

आलिंगिऊण गाढं मायामहिगाइ चुंबिओ सीसे।
दिन्ना पवराऽऽसीसा–'अक्खयअजरामरो होसु॥' २३८
तो मायामहघरणीओ उ(ताओ ?) सव्वायरेण पणमेइ।
लद्धासीसो तत्तो पणमइ सव्वं सयणवग्गं॥ २३९
वच्चइ चेइयभवणं तेहिँ समं नमइ मुणिवरे विहिणा।
जिणबिंबदंसणाओ वहइ पमोयं हिययमज्झे॥ २४०
सुविणीओ सुहचरियो[1] पियंवओ वच्छलो गुरुजणस्स।
जं पुण मिच्छद्दिट्ठी [चि] मणागमरुइकरं एयं॥ २४१
भणिही सव्वो लोगो पारद्धं जणयचेट्ठियं[2]मणेण।
तेण न सिक्खइ धम्मं मामयभणिओ वि पुणरुत्तं॥ २४२

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीए सह परिचओ]

पेच्छंतो रूवं सुंदरीएँ चिंतेइ माणसे धणियं।
'कह नाम समुल्लावो होही एयाएँ सह मज्झ॥' २४३
अन्नदिणे वचंती दिट्ठा अज्जाउवस्सए तेण।
तो सो वि तयणुमग्गं गओ तहिं दंसणसुहत्थी॥ २४४
[ल]ज्जोणयाएँ तीए ईसिं हसिऊण सो इमं भणिओ।
'पाहुणय! किं न वंदसि अज्जा अम्हाण गुरुणीओ ?॥' २४५
'जइ तुम्हं गुरुणीओ तुम्हे वंदेह अम्ह किं इत्थ ?।'
'होही तुहावि धम्मो गुरुभत्तीए नमंतस्स॥' २४६
काऊण पणामं अज्जियाण इयरेण सा इमं भणिया।
'तुह वयणाओ सुंदरि! पणमामि न धम्मबुद्धीए॥ २४७
कुलधम्मं मोत्तूणं सुंदरि! अन्नोन्नधम्मनिरयाणं।
नासंति दो वि धम्मा को गच्छइ दोहिँ मग्गेहिँ ?॥' २४८
दाऊण आसणं तो भणिओ–'नियमाहि एत्थ ख[ण]मेकं।
मज्झत्थचित्तयाए धम्मसरूवं वियारेमो॥' २४९
उवविट्ठस्स य भणियं–'विकंति कयाणगाइं[3] हट्टेसु।
मंगुलमणोरमाइं नियनियविभवाणुसारेण॥ २५०
निच्छंति विकणंता मंगुलनयणं[4] ति मंगुलं चोत्तुं।
कइएण उ घेत्तव्वं सुंदर! सुपरिक्खियं[5] काउं॥ २५१

१ °चरियं २ °चेट्ठिय°. ३ कयाणगाइं. ४ °नयणं. ५ °क्खियं

धम्मकयाणगमेवं परलोगसुहत्थिणा वि घेत्तव्वं ।
जो तत्थ वंचिओ किर सो चुक्कइ सव्वसोक्खाणं ॥ २५२
अम्हाणं[1] ताव धम्मे अट्ठारसदोसवज्जिओ देवो ।
ते पुण बुहेहिं[2] सुंदर ! दोसा एवं पढिज्जंति ॥ २५३
अन्नाणकोहमयमाणलोहमाया रई य अरई य ।
निद्दासोयअलियवयणचोरिया मच्छरभया य ॥ २५४
पाणिवहपेमकीडापसंगहासा य जस्सऽमी दोसा ।
अट्ठारस य पणट्ठा नमामि देवाधिदेवं[3] तं ॥ २५५
जीवदय सच्चवयणं परधणपरिवज्जणं च बंभं च ।
पंचिंदियनिग्गहणं आरंभपरिग्गहच्चाओ ॥ २५६
[ए]स विसिट्ठो धम्मो उवइट्ठोऽणुट्ठिओ सयं जेण ।
सो अम्ह वीयराओ देवो देविंदकयपूओ ॥ [प.९A] २५७
एसो न चेव तूसइ न य रूसइ दुट्ठचिट्ठियस्सावि ।
सावाणुग्गहरहिओ तारेइ भवन्नवं नियमा ॥ २५८

तहा–

अवगयधम्मसरूवो सुधम्मकरणुज्जुओ य जो निच्चं ।
धम्मोवएसदाया निरीहचित्तो गुरू अम्ह ॥ २५९
एयारिसगुणहीणो देवो गुरुणो वि नऽम्ह रोयंति ।
जइ अत्थि पहाणयरा अन्ने साहेहि तो अम्ह ॥' २६०
इय देवाइसरूवे सवित्थरं[4] नम्मयाएँ परिकहिए ।
कम्माण खओवसमा महेसरो मणसि पडिबुद्धो ॥ २६१
तह वि परिहाससारं पुणो वि सो नम्मयं[5] इमं भणइ ।
'अम्हाण वि देवाणं सुणसु सरूवं तुमं भद्दे ! ॥ २६२

सुयणु ! अम्ह संतिया देवा अप्पडिमल्ला इच्छाए हसंति, इच्छाए कीलंति गायंति नचंति । जइ रूसंति सावे य पयच्छंति, जइ तूसंति वरे [य]वियरंति । तेण जुत्ता तेसिं पूयाविहाणेणाराहणा । तुम्ह संतिओ वीयरागदेवो न रुट्ठो निग्गहसमत्थो, न तुट्ठो कस्स वि पसिज्जई[6] । ता किं तस्साराहणेण ?' तो नम्मयासुंदरीए भणियं – 'एए हासतोससावाणुग्गहपयाणभावा सव्वजणसामन्ना, ता देवाण जणस्स य को विसेसो ? जं च भणसि "सावाणुग्गहपयाणविगलस्स किमाराहणेण ?" तत्थ सुण । मणिमंताइणो अचेयणा वि विहिसेवगस्स समी-

१ अम्हाणं. २ पुहेहिं. ३ °विदेवं. ४ सवित्थुरं. ५ नम्मय. ६ पसज्जइ.

हियफलदाइणो भवंति, अविहिसेवगस्स अवयारकारिणो भवंति। एवं वीयरागा वि विहिअविहिसेवगाण कल्लाणाकल्लाणकारणं संपज्जंति।' पुणो भणियं महेसरदत्तेण–'जइ न रूससि ता अन्नं पि किं पि पुच्छामि।' तीए भणियं–'पुच्छाहि को धम्मवियारे[1] रूसणस्सावगासो?' इयरेण भणियं–'जइ तुम्ह देवो वीयरागो ता कीस न्हाइ कीस गंधपुप्फाइनट्टगीयाइं वा पडिच्छइ।' तओ ईसि हसिऊण भणियं नम्मयाए–'अहो निउणबुद्धीओ तुमं अओ चेव अरिहो सि धम्मवियारस्स, ता निसामेह परमत्थं। अरहंता भगवंतो मुत्तिपयं संपत्ता। न तेसिं भोगुवभोगेहिं पओयणं। जं पुण तप्पडिमाणं ण्हाणाइ कीरइ एस सव्वो वि ववहारो सुहभावनिमित्तं धम्मियजणेण कीरइ, तओ चेव सुहसंपत्ती भवइ' त्ति। तओ महेसरदत्तो भणइ–'सुलहाइं इत्थियाणं पडिउत्तराइं। जओ पढिज्जइ विउसेहिं–

दो चेव असिक्खियपंडियाइँ दीसंति जीवलोगम्मि।
कुक्कुडयाण य जुद्धं तत्थुप्पवं(?) च महिलाण॥ २६३

सुंदरि! विजिओ वाए अहं तुमए।' सुंदरीए भणियं–'मा एवं भणह। न मए वायबुद्धीए किं पि भणियं। किंतु तायाईण [प १ B] अईवलट्ठो तुमं, तेण इहागयस्स मए पाणेहिंतो वि पियं घरसारभूयमेयं नियधम्मपाहुडं तुहोवणीयं।' इयरेण भणियं–'ममावि मामयधूया तुमं ति गोरवट्ठाणं वट्टसि,[2] ता पडिच्छियं मए तुह संतियं पाहुडं' ति भणंतो उट्ठिओ महेसरदत्तो।

तप्पभिइमेव धम्मं नाउं काउं च सो समारद्धो।
मूढजणोहसणाणं कन्नमदेंतो सुथिरचित्तो॥ २६४

[महेसरदत्तस्स मायामहसमीवे नम्मयासुंदरीअत्थे पत्थणा]

गहिओ सावगधम्मो भणइ य मायामहं अह कयाइ।
'कीरउ एक्क पसाओ दिज्जउ मम नम्मयं ताय! ॥' २६५

सो याऽऽह–'को न इच्छइ संजोगं नागवल्लिपूगाणं।
नवरं तुह परिणामं अम्हे सम्मं न याणामो॥ २६६

अम्ह कुले एस कमो घेत्तुं जो चयइ वीरजिणधम्मं।
जाईकुलपंतीणं चज्झो सोऽवस्स कायव्वो॥ २६७

एत्तो च्चिय तुह माया चत्ताऽम्हेहिं न कोवदोसेण।
को सक्को नियदुहियं विसुद्धसीलं जए मोत्तुं? ॥ २६८

1 °वयारे. – 2 गइ°.। 3 ममाय°. 4 वट्टइसि. 5 सक्का.

पुत्त ! पिओ सयणाणं गेहं गंतूण चयसि जइ धम्मं ।
दिन्ना वि इमा कन्ना तुमं च ता दूरओ होसि ॥'	२६९
भणइ महेसरदत्तो – 'न मए कवडेण एस पडिवन्नो ।
जिणपन्नत्तो धम्मो ता मा एवं विगप्पेह ॥'	२७०
'परिभाविऊण सम्मं जं जुत्तं वच्छ ! तं करिस्सामो ।
मा होसु उच्छुगो[1] तं पुच्छामो मामए तुज्झ ॥'	२७१
'एवं'ति तेण वुत्ते सिट्ठं गंतूण तेण एगंते ।
इब्भेण सपुत्ताणं भणियं–'तो किमिह जुत्तं'ति ॥	२७२
आह तओ सहदेवो – 'धुत्ताणं ताय ! को णु पत्तियइ ।
किंतु निसुणेह एगं मह वयणं एगचित्तेण ॥	२७३
बहुजणरंजणकज्जे उब्भडवेसाउं[2] होंति वेसाओ ।
न तहा कुलंगणाओ नियसणपरिओसरसियाओ ॥	२७४
धम्मरया वि हु पुरिसा किच्चिमसाभाविया कलिज्जंति ।
अच्चुब्भडसाहावियकिरियाकरणेहिं निउणेहिं ॥	२७५
जह चेव जणसमक्खं तहेव एगागिणो जइ कुणंति ।
ता नज्जइ सुस्समणो सुसावओ वा सुबुद्धीहिं ॥	२७६
एस महेसरदत्तो जणरंजणकारि उब्भडं किं पि ।
न कुणइ न चेव जंपइ कुणइ विसुद्धं अणुट्ठाणं ॥	२७७
सचविओ सो य मए एगागी चेइयाइं वंदंतो ।
रोमंचंचियगत्तो संपुन्नविहिं[4] अणुट्ठितो[5] ॥	२७८
सब्भावसावगो खलु तम्हा एसो न इत्थ संदेहो ।
एसा वि अम्ह धूया निच्चलचित्ता जिणमयम्मि ॥	२७९
ता कीरउ संजोगो एयाण न किं चि अणुचियं मुणिमो ।
अहवा जं पडिहासइ तायस्स तमेव अम्हाणं ॥	२८०
सुंदर ! अमोहबुद्धी सुदीहदंसी तमाउ को अन्नो ।
ता की[र]उ एवमिणं' इय भणिए उसभदत्ते[प. १० A.]ण ॥ २८१
जे नयरम्मि[6] पहाणा गणया सव्वे वि ते समाहूया ।
संपूइऊण भणिया 'विवाहलग्गं गणह सारं[7]' ॥'	२८२
नाउं रविगुरुसुद्धिं सुमीलियं[8] तह[9] य जम्मं[10]रिक्खाणं ।
तिहिनक्खत्तपवित्ते ससिनलजुत्तम्मि दिवसम्मि ॥	२८३

1 उच्छगो. 2 °वेसांउ. 3 °रसण°. 4 °विही. 5 अणुट्ठवो. 6 नरयम्मि. 7 गणसहार.
8 सुसीलियं. 9 यह. 10 जस्म°.

संपुन्नगहवलं सव्वसुंदरं सोहियं तहा लग्गं।
सयलसुहसिद्धिजणयं एगग्गमणेहिँ गणएहिं ॥ २८४

[नम्मयासुंदरीविवाहोसवो]

समायन्निऊण नम्मयासुंदरीए विवाहो त्ति हरिसिओ नयरलोगो। उब्भियाइं[1] घरे घरे तोरणाइं, ठाणे ठाणे पिणद्धाओ[2] वंदणमालाओ, मंदिरे मंदिरे पवज्जियाइं मंगलतूराइं, पणच्चियाओ सुहवनारीओ, जाओ परमाणंदसमुद्दनिवुड्ढो[3] इव सुहियओ पुरिसवग्गो। सहदेवेणावि तिय-चउक्क-चच्चराईसु पवत्तियाइं अवारियसत्ताइं, निमंतिओ सयलनायरलोगो, सम्माणिओ वत्थतंबोलाइएहिं। किं बहुणा ?–

वज्जंततूरमणहरं, नच्चंतलोयसुहयरं;
पढंतभट्टचट्टयं, पए पए पयट्टयं;
पमोइयासेसमग्गणं, जणसंवाहविसट्टहाररंडमंडियघरंगणं;
कीरंतको[उ]यमंगलसोहणं, सयलपेच्छयजणमणमोहणं;
पिईमाइचित्तभारनिम्महणं[4], संजायं नम्मयासुंदरी-महेस[र]दत्ताणं[5] पाणिग्गहणं।

अवि य–

दाणेण य माणेण य पिउणा तह तोसिओ जणो सव्वो।
आसीसायसयाइं अन्नत्थगओ वि जह देइ ॥ २८५
भणइ जणो–'भो सुंदर ! केहि तुमं आगओ सि सउणेहिं।
जं एसा संपत्ता घरणी लच्छि व पच्चक्खा ॥' २८६
अन्नाओ वुड्ढाओ अक्खयमुट्ठिं[7] सिरम्मि मोत्तूण।
जंपंति–'नंद मिहुणय ! णहंगणे जाव ससि-सूरा ॥' २८७
'अणुरूवो संजोगो विहिणा घडिओ' भणंति अन्नाओ।
'कोमुई-गहनाहाण य मा विरहो होज्ज कइया वि ॥' २८८
इय नयरजणासीसे[9] पडिच्छमाणो[10] गुरूण कयतोसो।
उप्पाइयनेहो नम्मयाएँ सो[11] संठिओ तत्थ ॥ २८९
आपुच्छिय सुहिसयणो महेसरो पत्थिओ निययं नयरं।
जणएण दिन्नसिक्खा विसज्जिया नम्मया चलिया ॥ २९०
केहि वि दिणेहिँ पत्तो भडेहिँ वद्धाविया य रिसिदत्ता।
कयमंगलोवयारा पवोणि निग्गया सयणा ॥ २९१

---

[1] °म्मयाइ. [2] पिणद्धाओ. [3] °निवुड्डो [4] पीइ°. [5] °चित्ताभारनिम्महणं. [6] °सुंदरीए महे°. [7] °मुट्ठि [8] कोइमुइ°. [9] °सीसो. [10] °माणा. [11] से.

तओ पढमाणेहिं मंगलपाढगेहिं अग्घिज्जमाणो पायमूले[1], पलोइज्जमाणो नयरलोएहिं, रोलंतचंदणमालं दुवारोभयपासपइट्ठियकणयकलसं पविट्ठो समं वहूएँ महेसरदत्तो नियमंदिरं ति। निवडिओ चलणेसु जणयस्स जणणीए सेस-गुरुजणस्स य। नम्मयासुंदरी वि चलणेसु निवडमा[प. १० B]णी चिरकालु-कंठियाए रिसिदत्ताए समालिंगिऊण दिन्नासीसा पवेसिया निहेलम्मि।

परितोसियसुहिसयणं वद्धावणयं सवित्थरं काउं।
रिसिदत्ता परितुट्ठा कालं गमिउं समारद्धा ॥ २९२
चियवंदणसज्झायं कुणमाणिं[3] नम्मयं सुणंतीओ।
गोयरिमिव हरिणीओ सासुरयाओ न तिप्पंति ॥ २९३
उवसंतं सयलकुलं [ती]य समीवे सुणेइ जिणधम्मं।
परियाणियपरमत्थं जायं धम्मुज्जुयं[4] सव्वं ॥ २९४
अह अन्नया कयाई [·········]यणो।
भणइ महेसरदत्तो जणयं महुराएँ वाणीए ॥ २९५
'ताय! इमो जिणधम्मो चिंतारयणं व दुलहो सुद्ध।
लद्धूण कीस तुमए बालेण व उज्झिओ ज्झ त्ति ॥ २९६
जइ कीरइ जीवदया अलियं चोरिकया य मुचंति।
पालिज्जइ बंभवयं कीरइ न परिग्गहारंभो ॥ २९७
किं इत्थ ता न जुत्तं भणियमिणं सासणेसु सव्वेसु।
पागयनरा वि एए पंच वि बाढं[6] विघुज्झंति[7] ॥ २९८
एए जो परिवज्जइ सो देवो सो गुरु त्ति किमजुत्तं।
समदोसाणं दोण्हं तारेइ तरेइ को भणसु ॥ २९९
विन्नायमिणं सव्वं तुमए तइया गुरुप्पसाएण।
न य धरियं नियहियए चोज्जमिणं अम्ह पडिहाइ ॥ ३००
आसाइयअमयरसो पिचुमंदरसस्स को नरो सरइ।
पत्तम्मि पुहइरज्जे हलियत्ते को मइं कुणइ ?॥' ३०१
इय महुरगिरा भणिओ[8] लग्गो[9] मग्गम्मि जिणवरुद्दिट्ठे।
पच्छायावपरद्धो संविग्गो रुद्दत्तो वि ॥ ३०२
इय मुणियधम्मतत्तं सासुरयं सव्वमेव संपत्तं।
संगेण नम्मयासुंदरीएँ गुणरयणखाणीए ॥ ३०३

१ °मूलेहिं. २ विहूए. ३ कुणमाणी. ४ चरसुज्झुयं. ५ भजया. ६ पाढं. ७ विपुरसंति. ८ भरणिओ. ९ लग्गो.

[मुणिपदत्तसावप्पसंगो]

अन्नदिणे मुत्तुत्तरकालं एगागिणी गवक्खम्मि ।
तंबोलपुन्नवयणा चिट्ठइ नयरं नियच्छंति ॥ ३०४
मुक्कोऽणाभोगाओ तंबोलावीलबहलगंडूसो[1] ।
सहस त्ति पमायाओ हेट्ठाहुत्तं अपेहित्ता ॥ ३०५
सो खलिवलिनाया इरियाउत्तस्स[2] खवगसाहुस्स ।
सहस त्ति सिरे पडिओ तुरियं पि हु वच्चमाणस्स ॥ ३०६
आलिंगियं च अंगं सहसा साहुस्स सोणबिंदूहिं ।
अवलोइओ न कोई नियच्छमाणेणुवरिहुत्तं ॥ ३०७

जाहे न कोइ उवलद्धो ताहे कोवानलपरद्धमाणसेण भणियमुच्चसद्दं – 'जेण केणावि पक्खित्तमेसो इहेव जम्मे घोरवसणमणुभविस्सइ ।' ताहे को एसो त्ति संभंताए पलोयमाणीए सच्चविओ[3] महारिसी । तयणु 'हद्धि कयं मए महापावं' ति संभंती ओतिन्ना पासायाओ, गहियफासुयसलिला गया मुणिसमीवं तुरियं । पक्खालि[प. ११ A.]ऊण मुणिअंगाइं लूहिऊण य चोक्खवत्थेहिं कयपंचंगपणामा रोयमाणी भणिउं पयत्ता – 'भयवं महापावा हं जीए तुह सयलसत्तवच्छलस्स देवासुरमणुयपूयणिज्जस्स एयारिसं समायरियं ति । पमायमहागहमोहियाए न निज्झाइओ भूमिभागो, ता खमाहि मे महंतमेगमवराहं ति । तुब्भे चेव खमिउं जाणह, तुब्भे चेव खमासीला, तुब्भे चेव सव्वजीवहियाणुपेहिणो ।' एवं पुणो पुणो पलवमाणिं[4] पेच्छमाणस्स य रिसिणो विज्झाओ हिययकुंडे कोवग्गी । सोमदिट्ठीए पलोयमाणस्स नमयासुंदरी एस त्ति जायं पच्चभिन्नाणं । तओ साणुतावं[5] भणिया एसा – 'महाणुभावे ! नमयासुंदरि ! न मए वियाणिया तुमं कोवानलपलित्तचित्तेण । संपयं पुण अदुट्ठभावा तुमं ति निच्छियं मए, ता नत्थि तुहोवरि रोसलेसो वि । ता धम्मसीले ! मा रुयाहि । कुणसु वीसत्था धम्माणुट्ठाणपालणं ति ।' तीए भणियं – 'भयवं ! जहा आणवेह तुब्भे । किंतु बीहेमि दढं घोरवसणसावाओ, ता देहि मे अभयं' ति । साहुणा भणियं – 'भद्दे ! ठिई[6] एसा सावो अन्नहा काउं न तीरइ त्ति, ता होसु तुमं देवच्चणदाणसीलतवाणुट्ठाणपरायणा । तओ सव्वं सुंदरं भविस्सइ' त्ति दिन्नपडिवयणो गओ सट्ठाणं रिसी । इयरी वि सावसंकियमाणसा विसेसओ पयत्ता धम्मकज्जेसु ।

१ °गंडूसो. २ हट्ठा°. ३ °उः तस्स. ४ मच्चविओ. ५ नि. ६ सव्वे पीवदिया°. ७ पलवमाणी. ८ पुच्छ. ९ °णुत्तावं. १० ठिई.

[महेसरदत्तनम्मयासुंदरीण जवणदीवं पइ पयाणं]

अन्नया महेसरदत्तो उज्जाणे कीलंतो भणिओ सिणिद्धमित्तेहिं[1]—'किमम्हे[2] कूपदद्दुरेणेवादिट्ठदेसंतराण जीविएण? किं वा जणणिसमाए जणयविढत्ताए लच्छीए परिचाएण कीरमाणेहिं चाय[3]भोगाइविलासेहिं? अवि य—

नियभुयविढत्तदव्वो मणोरहे मग्गणाण पूरिंतो।
विलसइ जो न जहिच्छं चलंतथाणू[4] न सो पुरिसो॥ ३०८
जे च्चिय भमंति भमरा ति च्चिय पावंति बहलमयरंदं।
मंदपरिसक्किराणं होइ रई निंबकुसुमेसु॥ ३०९
अइपंडिओ वि पुरिसो अदिट्ठदेसंतरो हवइ अबुहो।
देसंतरनीईओ भासाओ वा अयाणंतो॥ ३१०
पुन्नापुन्नपरिच्छा कीरइ दढमप्पणो मणुस्सेहिं।
हिंडंतेहिं धणज्जणकज्जे नाणाविहे देसे॥ ३११
किं बहुणा?—
होसु तुमं अम्हाणं [सव्वाणं] अग्गणी जवणदीवं।
वच्चामो नाणाविहमणिमोत्तियरयणपडिहत्था॥' ३१२
एवं बहुप्पयारं[5] वयंसयाणं सुणेत्तु विन्नत्तिं।
आह महेसरदत्तो—'किमजुत्तं होउ एवं ति॥' ३१३

तओ आपुच्छिऊण नियनियजणए पारद्धा संजत्ती—गहियाइं तद्दीवपाउग्गाइं भंडाइं, पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, सज्जिया निज्जामया, निरूवियं[6] पत्थाणदिवसं। एत्थंतरे पुच्छिया भत्तुणा नम्मयासुंदरी—'पिए! वच्चामो वयं जवणदीवं।' नम्मयाए भणइ—'हो[P 11 B]उ एवं, ममावि सायरदंसणकुड्डं संपु[रि]ज्जँ[7]' त्ति। इयरेण भणियं—'तुमं ताव अंब-तायपायसुस्सूसणपरा इहेव चिट्ठाहि जाव वयमागच्छामो।'

पडिभणइ सुंदरी तं—'मा एरिसमाणवेसि कइया वि।
न तरामि तुह विओए पाणा धरिउं मुहुत्तं पि॥ ३१४
अवि जीवइ कुंथुरिया नीरविउत्ता वि किंचियं कालं।
तुह विरहे पुण नियमा सहसा पाणेहिं मोच्चामो॥ ३१५
एक्कपए च्चिय पिययम! किं एवं निट्ठुरो तुमं आओ।
किं नु सुया चेव तए लोगपसिद्धा इमा गाहा॥ ३१६
भत्ता महिलाण गई भत्ता सरणं च जीवियं भत्ता।
भत्तारविरहियाओ वसणसहस्साइँ पावंति॥' ३१७

१ °मेवेहिं. २ किमिम्ह. ३ चाइ°. ४ °थाणु ५ °पयारे. ६ निरवय. ७ संपुजंति. ८ तु.

भणइ महेसरदत्तो– 'सुंदरि'! अच्चंतभीसणो जलही।
तेण तुमए समाणं गमणं न हु [जु]ज्जए काउं॥ ३१८
मा कुण बालग्गाहं मह भणियं सुयणु! सव्वहा कुणसु।
आणाकारि कलत्तं सलहिज्जइ लोयमज्झम्मि॥' ३१९
निच्छयनिवारणत्तं आयन्निय नम्मया तह परुन्ना।
जह निट्ठुरो वि भत्ता जाओ करुणापरो धणियं॥ ३२०
भणइ य पुणो वि– 'सुंदरि! रोयसि तं कीस तुह दुहभएणं।
अहमाइसामि एवं मा मन्नसु कारणं अन्नं॥' ३२१
सा साहुसाममीया विरहं दइएण सह अणिच्छंती।
भणइ– 'सुहं दुक्खं वा तुमए सहिया सहिस्सामि॥ ३२२
अहवा चिट्ठ गिहे चियँ अहवा मं नेहि अप्पणा सद्धिं।
जइ ता जीवंतीए पुणो वि मिलियाइ तुह कज्जं॥' ३२३
विन्नायनिच्छयं तो अणुणेत्ता नम्मयं महुरवयणं।
भणइ महेसरदत्तो– 'तं काहं जंपियं तुज्झ॥' ३२४
सो नम्मयाइ सहिओ सहिओ मेत्तेहिं एगचित्तेहिं।
भडचडयरेण गुरुणा पत्तो सरिनम्मयाकूलं॥ ३२५

तत्थ य पत्तेहिं संजत्तियाइं पव[ह]णाइं आयामेण वित्थरेणावि पावंचासहत्थैपमाणाइं, मुणिकुलाइं व परिहरियलोहाइं पहाणगुणसंजमपगिट्ठकट्ठाहिट्ठियाइं च, चित्तकम्माइं पिव सुनिम्मायविचित्तभूमिभागाइं महुवन्नरूवयसंगयाइं च। कओ तेसु बहुकालजोग्गजलघणधन्नाइसंगहो, निबद्धा चउसुं पि दिसासु नंगरा, पवेसियाइं च पसत्थवासरे गंभीरनीरे पोयपवेसठाणे। आरूढा नियनियजाणवत्तेसु संजत्तिया। महेसरदत्तो वि समारूढो सह पिययमाए विसेसरमणिज्जे उवरिमभूमिविरइए वासमंदिरे। तो कुसलनिज्जामगकन्नधारेहिं पावियऽणुकूलपवणप्पयारेहिं विमज्जियाइं पवेसियाइं च महासमुद्दं जाणवत्ताइं। कत्थइ गिरिसिहरायमाणमहल्लकल्लोलेहिं गयणाभिमुहं निज्जमाणाइं, अन्नत्थ विलीयमाणेहिं तेहिं चेव पायालं पिव पवेसिज्ज[प. १२ A]माणाइं, खलिज्जमाणाइं महामच्छेहिं, पेल्लिज्जमाणाइं जलहत्थिमत्थएहिं, आहम्ममाणाइं मगरनक्कपुच्छच्छडाहिं, विलग्गमाणाइं विद्दुमवणगहणेसु, उप्पयमाणाइं पिव पवणुद्धुयसेयवडेहिं गयाइं अणेगाइं जोयणसयाइं। तओ नम्मयासुंदरी[ए] भणियं– 'सामि! अच्चंतभीसणो एस समुद्दो तेण जिणभासणे संसारउवमाणं

१ सुदरि. २ सलहेमइ. ३ आइच्चिय. ४ दुट्ठभाएण. ५ विय ६ गुरुणो.
७ °धाइसाय°. ८ °रमणेसे. ९ °महहि°. १० विदिग्ग°. ११ विद्दुम°.

कीरइ । अन्नं च कत्थ गया नगरकाणणासया मेइणी, रविससिगहाइणो वि ? एए किं जलयरा जेण जले उग्गमंति जले चेव अत्थमंति?' इयरेण भणियं – 'सुंदरि! मा भाहि पभूयमज्ज वि अपुव्वं दट्ठव्वं ।' तीए भणियं – 'तए सन्निहिए कयंताओ वि न बीहेमि ।' इच्चाइ समुल्लावपरायणं वोलिया गेगे दियहा ।

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीचरियम्मि कुसंका]

अन्नया मज्झरत्तसमए[1] कोइ पुरिसो सुइसुहयं किपि गाइउं पवत्तो । तस्स सरं सुणमाणीए नम्मयासुंदरीए सरियं सरमंडलं पगरणं[2] विन्नायं च तस्स सरूवं । तओ अइपरिओसाओ भणिओ भत्ता – 'जो एस पुरिसो गायइ तस्सँ[3]रूवमहमिहट्ठिया चेव जाणामि ।' 'केरिसं ?[4]' ति वुत्ते साहिउं पवत्ता – 'पिययम ! एस तावें वन्नेण सामो पंसुलो पंसुलजुवइवल्लहो य । अन्नं च एयस्स गुज्झदेसे पवालसमवन्नो मसो अत्थि ।' तं सोऊण विम्हिएण भणियं भत्तुणा – 'कहं पुण तुममिहट्ठिया जाणासि[5] ?' तीए भणियं – 'सवन्नुनयणाओ ।' तओ 'सच्चमेयं न व ?' त्ति गंतूण बीयदिवसे एगंते पुच्छिओ सो तेणावि 'एवमेयं' ति भणिए समुप्पन्नविलीओ समालिंगिओ ईसापिसाईए असंभावणिज्जं[6] इमं भाविउं पयत्तो । अवि य –

ईसावसेण पुरिसा हवंति धुत्तूरिय व्व विवरीया ।
न नियंति गुणं संतं दोसमसंतं पि पेच्छंति ॥　　३२६
चिंतेइ कहं जाणइ गुज्झपएसट्ठियं[7] मसं[8] एसा ।
जइ ताव न परिमिलिओ पंसुलपुरिसो इमो बहुद्दा[9] ॥　　३२७
नूण निरंतरमेसो[10] एयाए हिययमंदिरे वसइ ।
अन्नह किह देइ मणो एसा एयस्स गीयम्मि ॥　　३२८
एसो वि महीं[11] धुत्तो गायइ उच्चं निसीहसमयम्मि ।
जेण निवामेइ इमा संकेओ वा इमो दुन्ह ॥　　३२९
मोत्तूण चंदणं मच्छियाउं[12] लग्गंति असुइदव्वेसु ।
पयई इह महिलाणं विलीणपुरिसेसु रज्जंति ॥　　३३०

भणियं च –

अइरूवयाण लज्जं कुणंति बीहंति पंडियजणस्स ।
महिलाण एस पयई काणयँ[13]कुटेसु रचंति ॥　　३३१

---

१ °मज्झ　२ पयगरण　३ यस्स°　४ ताव　५ जाणामि　६ असंभावणेज्जं. ७ °पएसं ठिय. ८ मस　९ बहुहण　१० एसो　११ मुद्दा°. १२ मिच्छियाउ, १३ काणइ°.

अन्नं चिंतिंति[1] मणे पेसलवयणाइँ दिंति अन्नस्स ।
[अन्नस्स] निद्धदिट्ठिं खिवंति रामंति पुण अन्नं ॥ ३३२
तह दंसिओ सिणेहो तहा तहा रंजियं मणं मज्झ ।
एया एरिमचरियं[2] अहो महेलाण निउणत्तं ॥ [प. १२ B] ३३३
एयस्स विरहभीया[3] नूणं एसा ठिया न गेहम्मि[4] ।
बहुकूडकवडभरिया नज्जइ पुण उज्जुया एसा ॥ ३३४
का होज्ज एत्थ दूई किं नामं केयठाणमेएसिं ।
कह नाम वंचिओ हं एयाए गूढचरियाए ॥ ३३५
मिज्जइ जलहिस्स जलं तोलिज्जइ मंदरो य धीरेहिं ।
कूडकवडाण भरियं दुन्नेयं महिलियाचरियं ॥ ३३६
कुवियप्पसप्पग[सि]ओ पणट्ठसन्नो इमो दढं जाओ ।
पम्हट्ठधम्मकम्मो परलोयभएण वि विमुक्को ॥ ३३७

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीपरिच्छाओ]

विम्हारिऊण सव्वे गुरूवएसे पयत्तपत्ते वि ।
तम्मारणेक्कचित्तो चिंतइ कोहाउलो एवं ॥ ३३८
को होज्ज मे पयारो जेण इमा दिट्ठिगोयरे मज्झ ।
चिट्ठइ न खणं पि खला मलिणियनिम्मलकुला पावा ॥ ३३९
जइ ता घाएमि सयं[5] अवन्नवाओ तओ दढं होइ ।
जम्हा जणो न याणइ दुच्चरियं को वि पावाए ॥' ३४०
छणमग्गणत्थमच्छइ गोवियकोवो विसेसियपसाओ ।
जइ कह वि निसातिमिरे छुभेज्ज एयं[7] समुद्दम्मि ॥ ३४१
सम[इ]क्कंते दियहे वट्टंते रयणिपढमजामम्मि ।
निज्जामएण केणइ घुट्ठं उद्दामसद्देण ॥ ३४२
'भो अत्थि जलहिमज्झे दीवं निम्माणुसं अइपमाणं[8] ।
नामेण भूयरमणं तम्मि पहायम्मि[9] गंतव्वं ॥ ३४३
तत्थऽत्थि महाहरओ गंभीरो महुरनीरपडिपुन्नो ।
घेत्तव्वं तत्थ जलं सुणंतु संजत्तिया सव्वे ॥' ३४४
सोऊण घोसणं तं महेसरो पमुइओ विचिंतेइ ।
'होही सुंदरमेयं छड्डिस्सं तत्थ दीवम्मि ॥' ३४५

१ चिंतिति. २ एरिस चरियं. ३ °भीहा. ४ पाया. ५ सयं. ६ मरयइ. ७ एयं. ८ °पमाणं. ९ पहाइम्मि.

तत्तो पहायसमए पोयं धरिऊण दीवनियडम्मि ।
जलगहणत्थं चलिओ पवहणलोगो तहिं बहुओ ॥ ३४६
भणइ महेसरदत्तो – 'पेच्छामो ता वयं इमं दीवं ।
जइ रोचइ तुह सुंदरि !' तीए भणियं – 'हवउ एवं ॥' ३४७
चलियाइँ तओ दुन्नि वि सलिलं पाऊण तम्मि हरयम्मि ।
'अइरमणिओ दीवो पेच्छामो ताव एयं पि ॥' ३४८
इय एवं जंपंतो हियए दुट्ठो मुहम्मि पियवाई ।
परिसक्किउं पवत्तो दंसिंतो तीएँ वणराई ॥ ३४९
कत्थइ असोगतरुणो निरंतरं मेहवंदसारिच्छा ।
कोइलकलरवमुहला कत्थइ सहयारतरुनिवहा ॥ ३५०
फलरससित्तधराओ निरंतराओ कहिंचि सिंदीओ ।
नालीरीओ कत्थइ अविरललुंबंतलुंबीओ ॥ ३५१
कत्थइ दाडिमरुक्खा कत्थइ जंबीरगहिरगुम्माइं ।
कत्थइ दक्खामंडवछायापरिसुत्तसारंगे ॥ ३५२
दाइंतो दइयाए सुंदरवणराइराइयं दीवं ।
पत्तो हरयासन्नं पेच्छइ व[प. ११ A]णगहणमइगुविलं ॥ ३५३
मालइजाईकलियं साहाचियकयलिगेहरूयसोहं ।
दट्ठूण भणइ – 'सुंदरि ! संता परिसक्कणेण तुमं ॥ ३५४
ता माणेमो[1] एयं कयलीहरयं मणोहरच्छायं ।
तरुपल्लवेहिं सेज्जं काऊण खणं पि वज्जामो ॥' ३५५
तीए 'तह' त्ति भणिए रइयाए सुहयरीएँ सिज्जाए ।
सुत्ता पसन्नचित्ता सुविसत्था नम्मया तहियं ॥ ३५६
पेत्तस्स सच्छयाए परिस्समाओ सुसीयपवणाओ ।
भयसंभमरहियमणा वसीकया झ त्ति निद्दाए ॥ ३५७
इयरो वि कूरचित्तो दट्ठुं निद्दापरवसं एयं ।
सणियं ऊसरिऊणं पहाविओ वहणजणसमुहो ॥ ३५८
दोहिं वि करेहिं सीसं निविडं[2] वच्छ[त्थ]लं च ताडिंतो ।
लद्धयमुयपुयो 'हा हा ! मुट्ठो' त्ति पलवितो ॥ ३५९
सहस त्ति तओ भणिओ रोयंतो वारिऊण मित्तेहिं ।
'सत्थवइ ! केण मुट्ठो कहिं चं मा चट्ठहा तुज्झ ? ॥' ३६०

१ मेहचइ°. २ °सुरका. ३ त मोणेमो. ४ ग्ग. ५ निविड. ६ वि.

सो आह—'इत्थ गहणे अत्थि महारक्खसो अइपमाणो।
पेच्छंतस्स य दइया खणेण कवलीकया तेण॥ ३६१
अहमवि देवनिओआ पलायमाणो इहं समायाओ।
संचलह ताव तुरियं खज्जामो तेण मा सवे॥' ३६२
इय भेसिएहिं[1] तेहिं सहसा परिपेल्लियाइँ वहणाइं।
संठाविओ य एसो रुयमाणो कह वि किच्छेण॥ ३६३
तो सो वि सुट्ठु तुट्ठो चिंतइ 'सिद्धं[2] समीहियं मज्झ।
निच्छूढा सा पावा निवारिओऽवन्नवाओ वि॥' ३६४

[नम्मयासुंदरीए सुन्नदीवम्मि पलावो]

नमयासुंदरी वि सुइरमच्छिऊण निद्दावगमे विउद्धा, उट्ठावणबुद्धीए भत्तारामिमुहं भुयं पसारेइ। तत्थापेच्छंती तं दुइयपासं निरूवेइ 'नूणं सरीरचिंताइकज्जे कत्थइ गओ। मा निद्दाविग्घं ति नाहं विबोहिया, तुरियमेवेहेहि[3]' त्ति ठिया मुहुत्तं। जाव नागच्छइ ता 'मम धीरियं परिच्छइ' त्ति भाविंती भणइ—'पाणवल्लह! कओ अबलाणं धीरिमा? तुरियमेहि बीहेमि एगागिणी। किं वा लिह(निलु?)क्कणखेड्डयमारद्धं? दिट्ठो सि मालइजालंतरिओ, कयलीवणे चिट्ठसि। इत्तिओ चेव परिहासो सुंदरो होइ, एहि तुरियं, वाहराहि[4]' वा जेणाहमागच्छामि।' बहुं पि भणिए न कोइ जंपइ 'नूणं सत्थाभिमुहो गओ भविस्सइ त्ति। सत्थरोलो[5] वि [न?] सुबइ [त्ति?]' संभया संठविओवरिल्लकडिल्ला पहाविया, पत्ता वासट्ठाणं। तं पोयट्ठाणं पि सुन्नं दट्ठूण दढमाउलीहूया चिंतइ 'सबमेयं[6]मसंभावणिज्जं, नूणं सुमिणयं[प. १२ B]महं पेच्छामि। भूयपेयाइणा वा केणावि विमोहिय म्हि' त्ति भीयहियया रोयमाणी विलविउं पवत्ता। कहं?—'हा कंत! नाथ! दइय! नाहं पेच्छामि मोहिय म्हि केणावि, देहि देहि दंसणं निग्घिणो सि' एवं कहि जाओ।

वीसरिया कीस अहं बहुजणवावारमाउलमणस्स।
अहवा न घडइ एयं कहेहि ता कारणं अन्नं॥ ३६५
काऊण मज्झ रूवं वेलविओ किमासि [भूय]रूवेण।
भूयरमणु त्ति नामं सुबइ एयस्स दीवस्स॥' ३६६
मुच्छिज्जइ खणमेक्कं खणमेक्कं लद्धचेयणा रुयइ।
मुणइ[7] पलावे विविहे खणं खणं किं पि झाएइ॥ ३६७

१ भेमेसिएहिं. २ सिद्ध. ३ °वेहेहे. ४ वाहिराहि. ५ सत्थारावो. ६ °मेवम°. ७ भि.

एमेव सुन्नपु(सु)न्ना वणंतराइं खणं निहालेइ।
'एएहि दइय! दइयय!' वाहरइ पुणो पुणो मूढा॥ ३६८
सोऊण य पडिसद्दं तच्चोहुत्तं पहावए तुरियं।
पुणरवि अपेच्छमाणी कुणइ पलावे बहुपयारे॥ ३६९
भणइ वणदेवयाओ—'तुब्भे जाणह फुडं कहह मज्झ।
मोत्तूण मं पसुत्तं कत्थ पलाणो पिओ सो मे'[1]?॥' ३७०
सोऊण सउणविरवं एसो मं कोवई[2] चि पहसंती।
धावइ तच्चोहुत्तं अपेच्छमाणी पुणो रुयइ॥ ३७१
एयं जाव दिणंते[3] रुयमाणिं[4] तं तहा करुणसद्दं।
दट्ठुमचाइंतो इव सूरो बुड्डो जलहि[मज्झे]॥ ३७२
दट्ठूण पजंपइ—'किं नं नियसि अंधारियं [तुमं?] भुवणं?।
"एगागिणी वराई कह होही सा पिया मज्झ॥" ३७३
भुज्जो वि करुणसद्दं तह रुन्नं तत्थ भीयहिययाए।
जह दीनदेवयाओ समं परुन्नाउ णेगाओ॥ ३७४
अलहंती निद्दसुहं ताडंती नियउरं पुणो भणइ।
'किं हियय! वज्जघडिय न फुट्टसि जं एरिसे वसणे॥' ३७५
उदहिरवं अइभीमं निसुणंती विविहसावयसरे य।
कंपंतसयलगत्ता कह [वि] गमेई तयं रयणिं[5]॥ ३७६
ताव [य] उइओ सूरो विहुणेंतो रयणितिमिरपब्भारं।
किं जियइ सा वराई किं धा वि मय चि नाउं वा॥ ३७७
उयरपंलमारूढा निज्झायंती दिसाउ सव्वाओ।
भणइ—'कहिं[6] नाह! गओ इण्हि मे देहि पडिवयणं॥ ३७८
वच्चामि कत्थ संपइ कं सरणमुवेमि कस्स साहेमि?।
पियपम! सुन्नारन्ने कत्तो ठाणं लहिस्सामि?॥ ३७९
कम्मे अणे[ण] केणइ मम्मे वं नाह! मज्झ रूसविओ[7]।
तह वि[8] पडिवन्नवच्छल! काउं न हु एरिसं जुत्तं॥ ३८०
किर जीवदयामग्गे उवइट्ठो मुणिवरेहिं तुह धम्मो।
सो वीसरिओ किं मं सुन्नारन्ने चयंतस्स॥ ३८१

---

१ मो. २ कोवइ. ३ दिणं ४ रुयमाणी. ५ विय. ६ रयणि. ७ सो उवयओ. ८ पई. ९ लहिसो. १० कि न पत्ती.

जह परिचत्ता अहयं[1] दुज्जणवयणेहिं मोहियमणेण ।
तह मा जिणवरधम्मं एगंतसुहावहं चयसु ॥ ३८२
मं मोत्तुमणो[2] जइ ता आसि तुमं कीस जणणिजणयाणं ।
पासे नाहं मुक्का जम्मंतरवेरिओ किं मे[3] ? ॥' ३८३

[नम्मयासुंदरीए धम्मज्झाणेण कालगमणं]

करुणं रुयमाणीए तीए उव्वेविएण भू(भू ?)एण ।
नहयलगएण दिन्ना फुडक्खरं एरिसा वाया ॥ ३८४
'नट्ठो सो पावपई मुद्धे ! किं रुयसि कारणे तस्स ? ।
किं पलविएण सुंदरि ! सुन्नारन्नम्मि एयम्मि ? ॥' ३८५

तं सोऊण नम्मयाए चिंतियं—

'आगासगया वाया एसा सुरजाइयस्स कस्सा[प १४ A]वि ।
नूणं न होइ अलियं गओ पिओ मं पमोत्तूण ॥ ३८६
न कयं किं पि अजुत्तं आणा वि न खंडिया मए तस्स ।
तह दंसिऊण नेहं परिचत्ता कीस सुन्नम्मि ? ॥ ३८७
सुयणा सरलसहावा असमिक्खियकारिणो न खलु हुंति ।
एमेव अहं चत्ता अहयं कह तेण विउसेण ॥ ३८८
मुणिसावाओ भीया पडिया कह इत्थ दारुणे वसणे ।
कूयमिवाओ(?) तत्था खित्ता रुद्दे समुद्दम्मि ॥ ३८९
धी धी अहो ! अकज्जं कयं अणज्जेण विगयलज्जेण ।
संचालिऊण गेहा एत्थाहं पाडिया दुक्खे ॥ ३९०
अहवा न तस्स दोसो पुव्वकयं दारुणं समोइन्नं ।
तह रुट्ठिएण मुणिणा दिन्नो कहमन्नहा सावो ? ॥ ३९१
मु[णि]णो वि नत्थि दोसो महावराहेण चोइयमणस्स ।
उच्छलइ जेण अग्गी चंदणकट्ठे वि अइमहिए ॥ ३९२
किं झूरिएणं संपइ आयहियं सव्वहा विचिंतेमि ।
धीरेहिं कायरेहिं वि सोढव्वं जेण सुहदुक्खं ॥ ३९३
होऊण कायरा जइ करेमि मरणं न दुक्करं तं तु ।
किं तु अविहाणमरणं निवारियं वीरनाहेण ॥ ३९४
मन्ने ता धन्नाओ कुमारसमणीओ जीवलोगम्मि ।
पियविप्पओगदुक्खं जाओ सुमिणे वि न मुणंति ॥ ३९५

१ अहई. २ °मणं. ३ मो. ४ खेत्ता. ५ झूरिएण. ६ अव°.

'अहयं पि वालभावे जइ ता गेण्हेज्ज जिणमए दिक्खं।
एयारिसदुक्खाणं नामं पि न ताव जाणंती॥ ३९६
अज्ज वि जइ जीवंती जंबुद्दीवं कहं पि पाविज्जा।
गेण्हेस्सं[1] पवज्जं सुहत्थिसूरिस्स पामूले॥ ३९७
एसो इहेव नियमो पारिस्सं छट्ठभत्तपज्जंते।
नियमेण एगवारं फासुयफलपत्तपुप्फेहिं॥' ३९८
संठाविऊण हिययं घेत्तूण अभिग्गहं[2] इमं घोरं।
निहणइ[3] उदयस्स तडे संकेयपटं[4] चिरपसिद्धं॥ ३९९
'जिणधम्मो वोहित्थं साहू संजत्तिया सहाया मे।
निज्जामओ जिणिंदो भवजलही दुत्तरो कह णु॥ ४००
चत्तारि मंगलं मे अरहंता तह य सव्वसिद्धा य।
सव्वो वि साहुवग्गो धम्मो सव्वन्नुपन्नत्तो॥ ४०१
धन्ना हं जीय मए सामग्गी एरिसा समणुपत्ता।
भवसयसहस्सदुलहं निबंधणं सग्गमोक्खाणं॥ ४०२
ता संपइ मम देवो वीरजिणो विगयरागभयमोहो।
सयलसुरासुरमहिओ सहिओ अइसयसमूहेण॥ ४०३
संसारभउव्विग्गा एगग्गा गुरुवएसु जा लग्गा।
सेवंति सुद्धचरणं ते गुरुणो साहुणो मज्झ॥ ४०४
जीवाइए पयत्थे जिणभणिए सद्दहामि सव्वे वि।
न रमइ एक्कं पि खणं कुतित्थसत्थे मणं[5] मज्झ॥ ४०५
इय दढसम्मत्ताए पत्ताए दारुणम्मि वसणम्मि।
सा होज्ज मज्झ चिंता जीवामि मरामि वा इं[6] त्ति॥ ४०६
कित्तियमेयं वसणं महाणुभावेहिं धीरचित्तेहिं।
सहियाइं[7] मुणिवरेहिं सुव्वंति जिणागमे जाइं॥ ४०७
निप्फोडियाणि दोन्नि वि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि।
न[8] य संजमाउ[9] चलिओ मेयज्जो मं[प १४ B]दरगिरि व॥ ४०८
कस्स न करेइ चोज्जं असमोपसमो चिलाइपुत्तस्स।
दुक्करकरणं पि तहा अवंतिसुकुमाल[10]महरिसिणो॥ ४०९
धन्नो गयसुकुमालो[11] मत्थयजलिएण जस्स जलणेण।
दड्ढुमसेसं[12] सहसा कम्मवणं[13] चिरपरूढं[14] पि॥ ४१०

१ गण्हेस्सा. २ अभिग्गहं ३ निनिहणइ. ४ सकेयवयं ५ खण. ६ जम.
७ साहियाइं. ८ नि. ९ संजमाओ. १० °सुकमाल°. ११ °सुकमाळो. १२ दड्ढम°.
१३ कम्मावणं. १४ °परुढं.

धन्नो मुणिवइसाहू धम्मज्झाणम्मि निचलो धणियं ।
दड्ढो[1] ससीसपाओ जलिएण वणे हुयासेण ॥ ४११
रिसिदत्ता-सीयाहिं अन्नाहि वि अंजणापमुक्खाहिं ।
सुव्वइ महासईहिं दुस्सहदुक्खाइँ[2] सोढाइं ॥ ४१२
ता जीव ! मा किलम्मसु उव्वेयं नियमणम्मि मा कुणसु ।
साहससहायसहिया कल्लाणसयाइँ पावंति ॥' ४१३
इय बहुविहमप्पाणं अणुसासिंती गमेइ सा कालं ।
वयइ य पोयठाणं दिणे दिणे उभयकालं पि ॥ ४१४
'जइ ता लहामि कत्थइ जंबुद्दीवाणुगामियं सत्थं ।
मिलिऊण सज्जणाणं करेमि ता उत्तमं चरणं ॥' ४१५
एवं चिट्ठंतीए वोलीणं माससत्तगं तत्थ ।
अणुयंतीए सत्तं सद्धिं सम्मत्तरयणेण ॥ ४१६
सक्काराभावाओ सीयायवपवणसोसियसरीरा[3] ।
तीए तणुयंगीएँ[4] संजाया केरिसी छाया ? ॥ ४१७
अवि य –
उत्तत्तकणयवन्नो देहो जो आसि पुव्वकालम्मि ।
सो लक्खिज्जइ इण्हिं पडियं नवमेहखंडं वँ[5] ॥ ४१८
कोहंडस्स वँ[6] विंटं कंठो तणुयत्तणेण संवुत्तो ।
तायससिरं वँ सीसं केसेहिँ छडत्तपत्तेहिं ॥ ४१९
परिसुसियनीलपंकयनालिं पिव सहइ बाहियाजुयलं[7] ।
पक्का मा[स]फली इव हत्थंगुलियाउ सुक्काओ ॥ ४२०
चुंचुगमेत्तवलक्खियपओहरं पयडपंसुलं वच्छं[8] ।
चामुंडोयरतुल्लं उदरं खामत्तणुवहइ ॥ ४२१
कट्ठमयं पिव घडियं नियंबफलयं अमंसलं जायं ।
अइथूलगुंफियाओ[9] जंघाओ कागजंघ व्व ॥ ४२२
तं तारिसयं तीसे अंगं दट्ठूण नूणमुव्विग्गो ।
आसालग्गो जीवो न मुयइ वोढुं असत्तो वि ॥ ४२३

[नम्मयासुंदरीए चुल्लपिउणा सह मिलणं वब्बरकूलगमणं च]

एत्थंतरे नम्मयासुंदरीए पुन्नोदयरज्जुसंदाणिओ व वब्बरकूलं[10] उद्दिस्स चलिओ नम्मयापुराओ वीरदासो । कहाणयविसेसेण संपत्तो भूयरमणदीनासन्नं । दट्ठूणं

1 दड्ढा. 2 °दुक्खाइं. 3 °सरीरो. 4 °यगीए. 5 व. 6 व. 7 °बाहिया°. 8 वत्थं.
9 अइवूलगुंफियं जायं अइथूलगुंफियाओ जंघाओ. 10 बब्बर°

नम्मयासुंदरीसमुब्भियं चिंधं भणिउमाढत्तो–'भो भो ! अत्थि इह दीवे कोइ भिन्नवाहणिओ[1] । समओ एस पोयवणियाणं, एयं मोत्तूण न गंतव्वं । ता ठवेह एयस्स समीवे पवहणाइं ।' ठवियाइं च तेहिं । तओ समुत्तिण्णो[2] समागओ हरयतीरे । दिट्ठाइं च मसिणधूलीए अचिरागयाए नमयासुंदरीए पयाइं । ताइं च सपुव्वाइं पिव मन्नंतो सविसेसं[3] पलोइऊण भणिउमाढत्तो–'भो भो वाणियगा ! एह एह, दंसेमि किं पि कोउगं ।' समागयाणं च दंसियाइं, भणियं च वीरदासे[प. १५४]ण–'न ताव एयाइं पुरिसपयाइं, जओ एएसिं पच्छिमभागो भारिओ इव लक्खिज्जइ । किं बहुणा ? एयाइं नम्मयासुंदरीए संतियाइं पयाइं ।' तेहिं भणियं–'अहो अच्छेरयं । कत्थ नम्मयासुंदरी ?' वीरदासेण भणियं–'जइ अहमन्नो भवामि ता एयाइं पि अन्नाइं भवंति । धम्मागिणी य एसा, जओ पुरिसपयाइं नत्थि । चिरआगया य नज्जइ जओ पहओ[4] दंडओ एस । ता एह ताव सम्मं निरिक्खिमो' त्ति भणंतो चलिओ दंडएण । नाइदूरगएण निसुओ[5] जिणगुणपडिबद्धाइं[6] थुइथोत्ताइं पढंतीए सद्दो । पच्चभिन्नाया, 'मा संखोहं गच्छिही' [चि ?] महया सद्देण भणियं–'निसीही' । सा वि कहिं इत्थ चुल्लबप्पो[7] त्ति विम्हिया अप्पाणं संठविउं सम्मुही समुट्ठिया । तओ दट्ठूण वीरदासं पम्हुट्ठं[8] पि दुक्खं सयणजण-दंसणे पुणन्नवं[9] होइ त्ति दुक्खभरभारिया चलणेसु निवडिऊण विमुक्ककंठं रोविउं पवत्ता । तओ–

खणमेक्कं रुयमाणी पडिसिद्धा [सा न] वीरदासेण ।
उग्गिलियहिययदुक्खा जेण सुहं कहइ नियवुत्तं ॥ ४२४

दोहि वि करेहिं सीसं गहिऊणुद्धीकया खणद्धेण ।
आलिंगिऊण गाढं निवेसिया निययअंकम्मि ॥ ४२५

भणिया–'पुत्ति ! कहिज्जउ काऽवत्था एरिसी इमा तुज्झ ।
साहिज्जउ वुत्तंतो असंभवो तुह कहं जाओ ? ॥' ४२६

आखमरिसिसावाओ[10] सिट्ठो तीए असेसवुत्तंतो ।
'इह ठाणम्मि पसुत्तं मोत्तूण गओ पिओ जाव ॥ ४२७

अहमवि [चि]रस्स बुद्धा सुन्नमणा एत्थ घणवणे दीवे ।
असुणिपत्तण्हुण्हछुहा अवियाणियजामिणीदियहा ॥ ४२८

गहगहिया इव भमिया "हा पियपम ! हा पिय !" त्ति पलवंती ।
भीमम्मि एत्थ दीवे केइ दिणे तं न याणामि ॥ ४२९

1 वाहणीओ. 2 समुत्तिन्ने. 3 सविसेसं. 4 इ. 5 पदव. 6 निसुओ. 7 °बद्धाइं. 8 °बप्पो. 9 समुट्ठिया. 10 पम्हुट्ठं. 11 पुणन्नवं. 12 °सावाउ.

कइवयदिणपेरंते आगासगएण केणइ सुरेण ।
भणियं "न एत्थ भत्ता कस्स कए रुयसि तं मुद्धे ! ॥" ४३०
मुणियं च मए सव्वं नूणं अवउज्झिया अहं तेण ।
कत्तो अवराहाओ एयं पुण नेव जाणामि ॥ ४३१
परिमुक्कजीवियासा भाविय संसारविलसियं विसमं ।
जिणवरभणियं धम्मं करेमि हा ताय ! एगग्गा ॥ ४३२
अणवरयमेव सुव्वइ अइघोरो एस जलहिनिग्घोसो ।
सावयजणा अणेगे भमंति पासेसु भयजणगा ॥ ४३३
कोकंति[1] कोल्हुयगणा निसासु फेकंति महुयसंघाया ।
घुरुग्घुरंति[2] वग्घा उप्पज्जइ नो भयं मज्झ ॥ ४३४
ताव चिय होइ भयं निवसइ हिययम्मि जाव जीवासा ।
सा वि मए परिचत्ता तत्तो कत्तो भउप्पत्ती ॥ ४३५
झायंती[3] वीरजिणं भावेंती विविहभावणाजालं ।
दूरियअट्टदुहट्टा तायाहं[4] एत्थ चिट्ठामि ॥ ४३६
ताय ! ममावि कहिज्जउ कहं [प. १५ B] तए जाणिया अहं इत्थ ।
अचब्भुयं महंतं ताय ! इमं भासए मज्झ ॥[5] ४३७
तो[6] भणइ चुल्लबप्पो–'पुत्ति ! तुहावट्टिई[7] इह पएसे ।
तह सुहियाए जाया किं न हु अचब्भुयं एयं ॥ ४३८
सा संपज्जइ बुद्धी हुंति सहाया वि तारिसा चेव ।
जारिसया जियलोए नरस्स भवियव्वया होइ ॥ ४३९
न कयाइ मज्झ सुंदरि ! मणोरहो आसि पोयवाणिज्जे ।
अत्थि घरे चिय विहवो सुहाइं संतोससाराइं ॥ ४४०
तुह पुन्नचोइयस्स व जाया एयारिसी मई कह वि ।
गंतुं बब्बरकूलं करेमि अत्थज्जणं इण्हिं ॥ ४४१
चलिओ मित्तेहिं समं संपत्तो जाव इह पएसम्मि ।
दिट्ठा सायरतीरे ताव पडाया पवणविहुया ॥ ४४२
तं दट्ठुं[8] ओइण्णो सुंदरि ! एयम्मि भूयरमणम्मि ।
दिट्ठाइं तुह पयाइं नायाइं परिचयगुणेणं ॥ ४४३
तेसिं अणुसारेणं संपत्तो सुयणु ! तुह समीवम्मि ।
दिट्ठा सि तुमं संपइ निहि व्व दारिद्दविएण ॥ ४४४

चिंतेमि तओ हद्धी सा तारिसरूपकंतिगुणकलिया ।
केण इमा मह धूया उवणीया एरिसमवत्थं ॥ ४४५
हा हा ! खलो अणज्जो निल्लज्जो निग्घिणो[1] महापावो ।
को नाम हुज्ज पुरिसो जेण इमा पाडिया दुक्खे ॥ ४४६
नूणं न अत्थि ठाणं नरयं मोत्तूण तस्स पावस्स ।
जेण जणवल्लहगुणा एसा दुहसंकडे छूढा ॥ ४४७
कह से चलिया चलणा कह वा हिययं झडे[2] त्ति न हु फुट्टं[3] ।
कह सो जीवइ लोए जेण कयं एरिसं पावं ? ॥ ४४८
हा बाले ! हा वच्छे ! सुलक्खणे ! सरलसुंदरसहावे ! ।
संपत्तं कह णु तए सुंदरि ! एवंविहं दुक्खं ? ॥ ४४९
अज्जेव तुमं जाया जाओ परमूसवो इमो अम्ह ।
दिट्ठा सि तुमं वच्छे ! जीवंती कह वि तं अज्ज ॥' ४५०
भणियं च सुंदरीए—'सीईभूयाइं मज्झ अंगाइं ।
जाया य जीवियासा तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥ ४५१
वसइ मम जीवलोओ विमलीभूयाइं दिसिमुहाइं ।
अमएण व सित्ता हं तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥' ४५२

तओ महुरवयणोदएणं निव्वावियदुक्खानलो नीया वीरदासेण महइमहासत्त-लयाभवणे । अब्भंगिया कल्लाणतिल्लेण, उवट्टिया सुरहिसोमालेहिं उवट्टणेहिं, मज्जाविया तिहिं उदएहिं, अलंकिया पहाणवत्थाइएहिं, भोइया विविहोसहस-णाहं सरीरसुहकारिणीमहापेज्जं । किं बहुणा ? महाविज्जेणेव विसिट्ठपत्थाइएहिं तहा तहा पडियरिया जहा थेवेहिं चेव वासरेहिं जाया साहावियसरीरा । तओ भणिया तेण सहायमणुस्सा—'भो ! संपन्नो अम्ह मणोरहाइरित्तो महालाभो नम्मयासुंदरिलंभेण, ता देह पच्छाहुत्तं पयाणयं ।' तेहिं भणियं—'मा एवं भणाहि । जओ आगया बहूणि जोयणसयाणि पच्चासन्नं बब्बरकूलं वट्टइ । अन्नं च एस नम्मयालाभो उत्तमो [प १६ A] सउणो । अओ चेव तत्थ गयाणं विसिट्ठो लाभो भविस्सइ त्ति । अओ सव्वहा जुत्ता बब्बरकूलजत्ता ।' एवं भणिओ दक्खिन्नसारयाए तहाविहभवियव्वयानिओगओ पयट्टो वीरदासो ।

थेवदिवसेहिं पत्तो पेल्लिज्जंतोऽणुकूलपवणेण ।
पत्तो बब्बरकूले पोयट्ठाणं मणभिरामं ॥ ४५३

1 निघिणो. 2 उहाड. 3 फुट्टमा. 4 यद्दु° 5 °दुक्खानल. 6 हुयणा. 7 बब्बर°.

उत्तारिऊण भंडं संजंत्तियवाडयस्स मज्झम्मि ।
निम्माविया य सहसा गुणलयणी भियगपुरिसेहिं ॥ ४५४
तीसे मज्झे सिज्जा निम्मविया नम्मयाइ पाओगा ।
चिट्ठइ य सुहासीणा सुत्ता वा नम्मया तत्थ ॥ ४५५
अह अत्थि तत्थ दीवे नयरं नामेण वब्बरं रम्मं ।
मणिकणगरयणपुन्नं वब्बरलोयस्स कयतोसं ॥ ४५६
तत्थऽत्थि हरिणलंछणलंछणकिरणुज्जलो जसपयासो ।
नामेण इंदसेणो सुपयासो पुहइवीढम्मि ॥ ४५७
सो पुण हिओ पयाणं जणओ इव निययमंडलगयाणं ।
दीवंतरागयाणं विसेसओ पोयवणियाणं ॥ ४५८
पोयट्ठाणपुराणं अंतो दोन्हं पि नाइदूरम्मि ।
बहुजणकयपरिओसं वेसाण निवेसणं अत्थि ॥ ४५९
विज्जइ य तत्थ गणिया हरिणीनामेण नयरसुपसिद्धा ।
नरवइकयसामित्ता गणियाण सयाण सत्तण्हं ॥ ४६०
गिन्हइ सा वि विढत्तं तासिं सव्वासिमेव दासीणं ।
सा वि पयच्छइ रन्नो भागं तइयं चउत्थं वा ॥ ४६१
अत्थि यं रायपसाओ तीए सव्वेहिं पोयनाहेहिं ।
अट्ठसयं दम्माणं दायव्वं रायभाडीए ॥ ४६२
नरवइकयप्पसाओ गव्वं सव्वो जणो वहइ पायं ।
पयईतुच्छसहावो किं पुण पन्नंगणावग्गो ॥ ४६३
सोहग्गरूवगव्वं समुव्वहंती तओ विसेसेण ।
उम्मत्ता इव हिंडइ हीलंति न[य]रजणं सव्वं ॥ ४६४

[वीरदासस्स हरिणीवेसागिहे गमणं]

निसुयं च तओ तीए जंबुदीवाउ आगयं वहणं ।
सामी उ वीरदासो तस्स त्ति जणप्पवायाओ ॥ ४६५
गोससमयम्मि ताहे महग्घरयणाण जुवलयं घेत्तुं ।
पहियं चेडीजुयलं निमंतयं पोयसामिस्स ॥ ४६६
भणिओ य सप्पणामं कोसल्लियमप्पिऊण सो तेण ।
'विन्नवइ अज्ज ! हरिणी अम्हाणं सामिणी एवं ॥ ४६७

होयव्वमज्झं सामिय! अम्हाणं पाहुणेहिँ तुब्भेहिं।
अम्हं रायाएसो कायव्वं तुम्ह पाहुन्नं ॥' ४६८
ता भणइ वीरदासो–'कहियव्वं सामिणीय तुह वयणं।
मवि(दी?)यमेयं सव्वं कयं च तुब्भेहिँ दट्ठव्वं ॥ ४६९
अम्ह वि रायाएसो पडिवज्जेयव्वं[2] इमं तुमं भद्दे!।'
भणिऊण तासिमप्पइ अट्ठसयं रूढ(वा?)दम्माणं ॥ ४७०
गंतूण चेडियाहिं[3] कहियं हरिणीएँ वीरसंलवियं।
उवणीयं अट्ठसयं दम्माणं पाहुडं ताहिं ॥ ४७१
जाणियहिययाकूया कुविया हरिणी विचिंतई 'नूणं।
आगंतुं[5] सो नेच्छइ करेइ मम माणपरिहाणिं[6] ॥ ४७२
दोहग्गिणि त्ति लोए मज्झ पसिद्धी अणागए होही।
ता पेसिऊण दव्वं कोकेमि[7] तमेव गेहम्मि ॥' ४७३
पेसेइ तओ चेडिं[8]–'भणिज्ज धणमप्पिऊण तं वणियं।
न हि मह धणेण कज्जं तुमम्मि गेहे [प. १६ B] अणिंतम्मि ॥ ४७४
नो खलु रायाएसो "मुहाइ गेण्हेज्ज तं तओ वित्तं।
किंतु विणएण भामिणि! आराहित्ता मणं तस्स ॥" ४७५
पडिभणइ वीरदासो–'आराहियमेव मह मणं तुमए।
सब्भावसारमेयं निमंतणं कारयंतीए ॥ ४७६

भणियं च–

वाया सहस्समइया सिणेहनिज्झाइयं सयसहस्सं।
सब्भावो सज्जणमाणुसस्स कोडिं विसेसेइ ॥ ४७७
ता मा काहिसि भद्दे[11]! अम्होवरि अन्नहा मणं किंपि।'
इय भणिऊण सदव्वा विसज्जिया सा गया तुरियं ॥ ४७८
किं पुण सो नागच्छइ वाओ[12] अन्नाउ वयणकुसलाओ।
अन्नो वि पेसियाओ पेगाओ छेयचेडीओ ॥ ४७९
तम्मि समयम्मि दिट्ठा आसन्ना नम्मया जणयनयणं।
मुहु मुहु निज्झायंती सिणिद्धलोलेहिँ नयणेहिं ॥ ४८०
तीए सरीरसोहं दट्ठूण सविम्हियाउ मवाओ।
अन्नोन्नं वयणाइं पलोइउं ते चि लग्गाओ ॥ ४८१

१ °मज्झ. २ °यव्वं. ३ चोडियाहिंई. ४ °पाहुणा. ५ आगंतु. ६ °हाणी. ७ कोकेमि. ८ चेरी. ९ वाया. १० °माणुसस्स. ११ भिद्दे. १२ वाओ. १३ °चेड°. १४ मुद्ध.

भणंति य–

'ता रूववई नारी आसन्नं जा न होइ एयाए ।
सहइ गहनाहजुण्हा सरूपहा जा न अल्लियइ ॥' ४८२

पुणरवि सविणयमेवं भणिओ पोयस्स नायगो ताहिं ।
'अज्ज ! पसीयसु हरिणिं[3] हरिणीवयणं सुणसु कन्ने ॥ ४८३

नयणेहिं को न दीसइ केण समाणं न हुंति उल्लावा ।
हिययाणंदं जं पुणु जणेइ[4] तं माणुसं विरलं ॥ ४८४

दिट्ठो त्ति न तं सुंदर ! निसामिया तुह गुणा अणन्नसमा ।
तुह दंसणूसुयमणो तेणाहं सुट्ठु संजाया ॥ ४८५

न धणेण मज्झ कज्जं किं पुण नासेइ मज्झ गुणमाणो ।
जइ न सुणसि नियचलणुप्पलेहिं गेहं मम पवित्तं ॥ ४८६

नासइ तुज्झ वि नियमा गरुयत्तं मह गिहं अणितस्स ।
जं संलविही लोगो विहुणो(?) तिट्ठानरो एस ॥' ४८७

एवं बहुप्पयारं भणियं सोऊण तासि दासीणं ।
'जणरंजणत्थगमणे धयणड ! को नाम दोसो त्ति ॥' ४८८

इय मिचनयणमवणा काममकामो वि पुरिसदुगसहिओ ।
सहस त्ति वीरदासो पत्तो गेहम्मि हरिणीए ॥ ४८९

अब्भुट्ठिऊण तीए पारद्धा आसणाइपडिवत्ती ।
एत्थंतरम्मि निहुयं[6] पढियं एगाए चेडीए ॥ ४९०

'अन्नस्स बंधभोइणि ! नवपवईसेट्ठ[फ]यबइल्लस्स ।
आयारमेत्तनसिओ न कज्जकरणक्खमो[9] एस ॥' ४९१

अमुणियतब्भावाए हरिणीए पुच्छिया रहे[10] चेडी ।
'साहेहि फुडं भद्दे ! भावत्थमिमस्स पढियस्स ॥' ४९२

तीए भणियं–

'एय समीवे रमणी[11] दिट्ठा अम्हाहिं तत्थ पत्ताहिं ।
उवसिरमतिलोत्तमं[12]गोरीणं[-- ······ --] ॥ ४९३

तरुणजणमोहकारणभुवणब्भुयभूयदेहसोहाए ।
तीसे पासम्मि धुवं न सहसि तं हरिणि ! हरिणि व ॥ ४९४

तं मोत्तूण न कत्थइ मणभमरो रमइ नूणमेयस्स ।
ता किं उवयारपरिस्समेण वज्झेण एयस्स ॥ ४९५

---

१ °प्पहा. २ पसीयस ३ हरिण्णी ४ जाणइ ५ °मणो. ६ तिहुयं. ७ °पत्थय°.
८ आयर°. ९ °क्समो. १० दहे ११ रमणीहिं १२ °तिलोत्तिम°.

भावत्थो तुह कहिओ सामिणि! एयस्स नियपढियस्स।
नाऊण इमं तत्थं जं रोयइ तं करिज्जासु॥' ४९६
हरिणी भणइ — 'हला जइ न करिस्स[प. १७ A]इ मज्झ इच्छियं एसो
ता एयनामसुद्दं तुह अप्पिस्सं कह वि घेत्तुं॥ ४९७
चिंधेण तेणं हरिउं आणेज्जह एयवल्लहं तरुणिं।
पच्छिमदारेण पवेसिऊण भूमीगिहं निज्ज॥' ४९८
कायव्वं पडिकूलं दक्खिन्नविवज्जियस्स एयस्स।'
सामच्छिऊण एवं अल्लीणा सत्थवाहस्स॥ ४९९
अवउज्झियनेहाण वि विन्नाणं किंपि होइ वेसाणं।
पयडंतीओ नेहं जेण जणं पत्तियावंति॥ ५००
अब्भंगिओ तओ सो, सुगंधनेहेण नेहरहियाए।
संवाहिय उव्वट्टिय ण्हविओ[3] ण्हाणेहिं विविहेहिं॥ ५०१
परिहाविओ[4] य तत्तो सोमालाइं महग्घवत्थाइं[5]।
आलिंपियं च अंगं गंधुक्कडचंदणाईहिं॥ ५०२
काऊण कोउयाइं कप्पूरागरुतुरुक्कमाईहिं।
विहिया से धूवणिया तस्स मणोरंजणपराए॥ ५०३
बहुहावभावसारं नाणाविहचाडुकम्मकुसलाए।
तह तह भणिओ वि घणं न पवत्तो तीय वयणम्मि॥ ५०४
माणीय मुंचमइंहरि(भणिया च सुंदरि अहं?) संपइ वचामि अप्पणो ठाणं।'
अंसुजलल्लियवयणा पुणो वि धुत्ती इमं भणइ॥ ५०५
'[······] अभग्गमाणा नयरपहाणा बहुं पि झम्खंती।
तुमए नाहं गणिया उट्टारूढेण सुणिय व्व॥ ५०६
तह वि हु मे नयणाइं निम्माणाइं न चेव तिप्पंति।
तुह दंसणस्स ता कुण खणमेक्कं जूयगोट्ठिं पि॥' ५०७
हरिणिपरिओसहेउं पडिवन्नं तेण उज्जुहियएण।
कंजियजलेण छलिओ धुत्तीए जुन्नमज्जारो॥ ५०८
विस्संभभावियाणं पवंचणे किमिह नाम पंडिच्चं।
अंकपसुत्ते हणिए संसिज्जइ केण सूरत्तं॥ ५०९
अह सा पहट्ठवयणा सारीपट्टं ठवित्तु तस्सग्गे।
परिकीलिउमारद्धा चिंचियगयदंतसारीहिं॥ ५१०

१ नेण. २ भूमि°. ३ ण्हविउ. ४ परिहारिओ. ५ °वत्थाहिं. ६ °रागर°. ७ °वयणो. ८ धुत्त°. ९ हणिओ.

लद्धावसरा घेत्तुं दाहिणपाणिं' भणेइ–'ते सुहय ! ।
मुद्दारयणमपुव्वं कुऊहलं एरिसे मज्झ ॥' ५११
भणइ य नियंचेडिं तो–'दंसेहि इमं सुवन्नयारस्स ।
एयाए घडणीए मुद्दं सिग्घं घडावेहि ॥ ५१२
उट्ठिउकामो एसो आगंतव्वं अओ तुरियतुरियं ।'
इय भणिय पुव्वचेडी पट्ठविया गहियसंकेया ॥ ५१३

[हरिणीचेडीहिं नम्मयासुंदरीए हरणं, तीए पलावं च]

चेडीवंद्रसमेया पत्ता सहस त्ति पोयठाणम्मि ।
दिट्ठा य सुहनिसन्ना असहाया नम्मया ताहिं ॥ ५१४
'भद्दे ! सो तुह वणिओ हरिणीभवणम्मि संठिओ संतो ।
जाओ अपडुसरीरो तेण तुमं सिग्घमाहूया ॥ ५१५
तुह पच्चयजणणत्थं मुद्दारयणं इमं तु पट्ठवियं ।'
एयं भणमाणाहिं समप्पिया मुद्दिया तीसे ॥ ५१६
सोऊण इमं वयणं संभंता नम्मया विचिंतेइ ।
'न घडइ तायस्स इमं अलियं जंपंति एयाओ ॥ ५१७
अहवा पयइअणिच्चे संसारे एरिसं पि संभवइ ।
अन्नह मुद्दारयणं कीस इमं पेसियं तेण ॥ ५१८
तह वि न जुत्तं गंतुं' असहायाए इमाइ सह मज्झ ।
मग्गेमि ता सहायं परियणमज्झे जणं कं' पि ॥' ५१९
उट्ठेइ निहालेइ य पुणो पुणो निययमाणुसं कं' पि ।
भवियव्वयानिओ[प १७ B]या न य दिट्ठो को वि कत्थावि ॥ ५२०
किंकायव्वविमूढा ठाउं गंतुं च नेव चाएइ ।
तो ताहिँ पुणो भणिया–'न एसि जइ मुंच ता अम्हे ॥' ५२१
चिंतइ पुणो वि एसा अगयाए नूण रूसिही ताओ ।
जाणइ जुत्ताजुत्तं सो चेव किमम्ह चिंताए ॥ ५२२
पुव्वकयासुहकम्मेहिँ चोइया तासिमग्गओ ठाउं ।
संचलिया सा बाला बलवं' खलु कम्मपरिणामो ॥ ५२३
ताहिँ परिवेढिया सा नाया केणावि नेवं वच्चंती ।
भूमीगिहम्मि छूढा पिहियं दारं च तो ताहिं ॥ ५२४

दिट्ठम्मि अंधयारे हरिया एयाहिँ इय परिन्नाए।
मुच्छानिमीलियच्छी पडिया सहस त्ति धरणीए॥ ५२५
कहकह वि लद्धसन्ना विमुक्कपुक्कं सरेण करुणेण।
घणमवि चिरं परुन्ना न सुया केणावि वज्झेणं॥ ५२६
'हा हा! अकज्जमेयं किं राया नत्थि कोइ इह नयरे।
हरियाऽहमणवराहा निब्भयचित्ताहि दासीहिं॥ ५२७
एसा णु मिल्लपल्ली किं वा चोराण एस आवासो।
जमहमकयावराहा हरिया एयाहिँ रंडाहिं॥ ५२८
किं नत्थि कोइ रक्खो सोयाँ वा नायपेच्छओ को उँ।
जेणेवमणवराहा हरिया हं चोरनारीहिं॥ ५२९
सूरपयडम्मि दिवसे हरिया हं पिच्छ पावविलयाहिँ।
सो एस छत्तेहंगो जाओ रायम्मि जीवंते॥ ५३०
हा तायय! कत्थ गओ मा मा अन्नत्थ मं गवेसेसु।
अच्छामि एत्थ अहयं छूढा नरओवमे घरए॥ ५३१
तं ताय! कत्थ चिट्ठसि पत्ता तुह मुद्दिया कहमिमाहिं।
अम्हाण वि जीएणं कुसलत्तं होज्ज तुह ताय!॥ ५३२
तुह मुद्दादंसणओ मुट्ठा हं ताय! जाणमाणा वि।
मा रूसि[हि] त्ति ताओ मीया एयाहिँ सह चलिया॥ ५३३
हा! निविडा कम्मगई पत्तो बीओ न कोइ तुह सत्थे।
विहिणा खलेण तायय! रुद्धा सव्वे वि दिसिभाया॥ ५३४
तुह दंसणेण तायय! छुट्टा पुव्वं पि घोरदुक्खाओ।
ता एहि एहि पुणरवि तुरियं मह दंसणं देसु॥ ५३५
आमं भणंती तायय! तं किर अच्चंतवल्लहो मज्झ।
तं अलियं चिय जायं तुह विरहे जीवमाणीए॥ ५३६
हा ताय! मज्झ हिययं वज्जसिलायाहिँ निम्मियं नूणं।
जं अज्ज वि तुह विरहे न जाइ सयसिक्कर सहसा॥ ५३७
हा ताय! अहं मूढा जुत्ताजुत्तं वियाणमाणी वि।
तुह करभूसणमुद्धा पडिया दुक्खद्दहे घोरे॥ ५३८
वरमासि तम्मि दीवे मया अहं ताय! सुद्धपरिणामा।
संपइ इयदुक्खत्ता न याणिमो कह भविस्सामि॥ ५३९

---

१ वज्झेण. २ सोदा. ३ ओ. ४ °वडियाहिं. ५ सो सए ससळत्त°. ६ निबडा. ७ बीओ. ८ भास.

ताहे येच्छेस्सामो[1] वियरंति[2] नम्मयं न संदेहो।
परियाणियपरमत्था जं जुत्तं तं करीहामो॥' ५६८
सोऊण मित्तवयणं उवायमन्नं अपिच्छमाणेण।
जुत्तमिणं ति कलिचा पडिवन्नं वीरदासेण॥ ५६९
विणिओइऊण सिप्पं नियमंडं[3] गहियपउरपडिभंडा।
चलिया पडिप्पहेणं संपत्ता नम्मयानयरं॥ ५७०
सिट्ठा य बंधवाणं वत्ता मेचेहिं जा जहावत्ता।
भुज्जो वि वीरदासो घणं[4] परुन्नो सयणसहिओ॥ ५७१
रोइत्तु[5] चिरं सयणा सोयंता संलवंति अन्नोन्नं।
'हा! निग्घिणो हयासो पुत्तो सो रुद्ददत्तस्स॥ ५७२
नत्थि वयणे पइट्ठा[6] एयाण कुले य निच्छओ[7] चेव।
दिट्ठसयस्स(?) वि वयं पयारिया तेण पावेण॥ ५७३
अहवा सो चेव खलो निहओ[8] केणावि असुहकम्मेण।
एरिसमित्थीरयणं[9] उज्झइ कहमन्नहा मूढो॥ ५७४
मा गेण्हह से नामं न कज्जमम्हाण तस्स वत्तीए।
सोएमो तं बालं निद्दोसं आवयावडियं॥ ५७५
सा परघरंसंपत्ता[10] सहिही नूणं कयत्थणा भीमा।
काही न सीलभंगं पाणचाए वि नियमेण॥ ५७६
अवि य–
अवि कंपइ कणयगिरी उदेइ[11] सूरो वि पच्छिमदिसाए।
उद्दइ जलम्मि अग्गी न हु खंडइ नम्मया सीलं॥ ५७७
उइयं न णु पुवकयं कम्मं तीए महाणुभावाए।
उवरुवरिमावयाओ उवेंति[12] जं सुद्धसीलाए[13]॥' ५७८

एवं च नम्मयासुंदरीदुक्खदावानलडज्झमाणमाणसो[14] सबो वि नम्मयापुरजणो दुक्खेण कालं गमंतो चिट्ठइ।

[हरिणीए नम्मयासुंदरिं पइ कवडसंभासणं]

सा वि पुण नम्मयासुंदरी तम्मि य चारगगिहे रुयमाणी विलवमाणी, बीयेदिवसे[15] चेडीहिं उवणीयं भोयणं [अ]भुंजमाणी, बहुकूडकवडभरियाए हरिणीए [भणिया]–'वच्छे! भुंजाहि भोयणं। न किंचि अम्हे तुहासुंदरं[16]

१ देच्छेस्सामो. २ वियरंति. ३ हियमंड. ४ घग. ५ रोइत्तु ६ पयट्टा. ७ नेच्छमो. ८ निहमो. ९ °मित्थी°. १० परघू°. ११ °घइ. १२ उवेइ. १३ सुद्द°. १४ °माणमा. १५ बीय°. १६ °सुंदर.

चिंतेमो। किं तु सो तुह वाणियगो अम्ह संतियं किं[1] पि आहवं न देइ तेण तुममवरुद्धा सि। जया सो दाही तया तुमं पि मुचिहिसि[2]। मा मन्नेसि "सो मम दत्तं न याणइ[3]" जाणेइ चेव। किं तु वणियाणं जणयाओ तणयाओ जणणीओ घरणीओ वि सयासाओ अत्थो अच्चंतवल्लहो होइ। तेण दायवं पि दुक्खेण देंति। जइ तस्स तुमं पिया ता सिग्घमेव दाही। तुमं पि मुचिहिसि। एस परमत्थो।' तओ नम्मयाए चिंतियं—

'एसा जंपइ महुरं हियए हालाहलं विसं वसइ।
को पत्तियइ खलाए यायाए चप्फलगिराए॥ ५७९
न कयाइ मज्झ ताओ न देइ आहवयं मुहुत्तं पि।
एवभणियस्स उचियं[4] करेमि पडिउत्तरं किं पि॥' ५८०

एवमालोचिऊणं[5] भणियं नम्मयासुंदरीए—'भोइणि! जइ एवं ता मुंचाहि मं जेण अज्जेव तुह [आ]हवं दुगुणं तिगुणं वा दवावेमि। देमि तुह दाहिण[ह]त्थं, अन्नं [प. ११ A] वा दुक्करं सवहं कारेहि।' तओ तीए भणियं—'भुंजाहि जइ ते इच्छा। नाहं सवहेहि पत्तियामि' त्ति भणंती उट्ठिऊण निग्गया हरिणी। न भुत्तं नम्मयाए। तयइदेहम्मओ(तइयदियहे मरउ?) ताव छुहाए त्ति भाविंती न पत्ता चेव तीए सगासं ह्यासा नोवणीयं च भोयणं। पुणो चउत्थे दिणे 'मा मरिहि' त्ति संकाए समागया भणिउं च पवत्ता—'निब्भग्गे! करेहि कवलग्गहणं। जीवंतो जीवो कल्लाणभायणं भवइ त्ति।' ताहे 'अणुकूलो[7] मम एस घाइओ सउणो। नूणं भविस्सइ मे जीयमाणीए सामन्नसंपत्ती। एसा वि अणुवत्तियवयणा सिसिरहियया होइ' त्ति कलिऊण वत्ताजुत्ताजुत्तवियारिणीए—'मम[8] एगंतहियया लक्खिज्जसि ता करेमि तुहाएसं जेण अन्नं पि मे[9] हियं तुमए चिंतियवं' ति चिंतीए[10] अट्ठमभत्ताओ पाणधारणनिमित्तं भुत्तं नम्मयाए।

एवं अट्ठमभत्ता पुणो पुणो पारणं करेमाणी।
तम्मि घरयम्मि चिट्ठइ[11] रुयमाणी नरयसारिच्छे॥ ५८१
हंसी पंजरछूढा सरइ जहा अविरयं कमलसंडं।
तह नम्मया वि सुमरइ निरंतरं जणणिजणयाणं॥ ५८२
न तहा बाहइ[12] तीए नियअंगे उट्ठिया महापीडा।
जह पित्तियस्स हियए भाविंतीए विरहदुक्खं॥ ५८३
पच्चासन्नावासा वग्घीए कंपइ(ए) जहा हरिणी।
तह कंपमाणहियया भएण एमा[13] वि हरिणीए॥ ५८४

---

१ किं. २ सुविहिसि. ३ याणाइ. ४ उच्चियं. ५ °मालोचिऊण. ६ नियया. ७ अनुकूलो. ८ सम. ९ से. १० चीतीए. ११ चिट्ठइ. १२ वाहइ. १३ एमा.

जिणगुणगणगहियाइं थुइथोत्ताइं पुणो परिगुणंती ।
चिट्ठइ मोक्खासाए परिभावेंती इमं हियए ॥ ५८५
'कइया होज्ज दिणं तं जत्थाहं साहुणीण मज्झम्मि ।
धम्मज्झाणोवगया करेज्ज सिद्धंतसज्झायं ॥' ५८६

[नम्मयासुंदरीए गणियत्तणे हरिणीकयोवएसो]

अन्नया जाणिऊण पडिगए पवहणवणिए 'सिद्धं मम वद्दं(कव्वडं?) ति पहट्ठहियया समागया नम्मयासुंदरिसमीवं हरिणी, भणिउं पवत्ता – 'हला! पेच्छ तेण वणिएण जं कयं । न दिन्नं मम देयं । तुमं पि मोत्तूण नट्ठो । धिरत्थु तस्स ववहारो जो तिट्ठाए मोहिओ नियमाणुसं परिच्चयइ । ता भद्दे! मा तुमं तस्स कारणे खिज्जिहिसि । चेट्ठ निव्वुया मम गिहे इमिणा मम परियणेण सद्धिं[1] विलसंती । नाहं तुह माराओ बीहेमि । मम वयणकारिणीए न ते किं पि मंगुलं भविस्सइ ।' तओ 'नूणं मम पउत्तिमपाविऊण निरासीभूओ पडिगओ ताओ । होउ तस्स कुसलं ममाए मंदभग्गाए न याणामि[2] किं पि अणुभवियव्वं' ति चिंतिऊण पडिभणियं—'का ममानिव्वुई तुह समीवट्ठियाए? तुममेव मम हियाहियं चिंतेसि' त्ति वुत्ते नीणिया भूमिगिहाओ, गिहमज्झे मोक्कलाचारेण चेट्ठइ त्ति । अन्नया पुणो वि भणिया हरिणीए – 'सुंदरि! दुल्लहो माणुसीभावो, खणभंगुरं तारुन्नं, एयस्स विसिट्ठसुहासुभवणमेव फलं । तं च संपुन्नं वेसाणमेव संपडइ, न कुलंगणाणं । जओ पहाणमवि भोयणं पइदियहं भुंजमाणं न जीहाए तहा सुहमुप्पा[ए]इ, जहा नवनवं दि[प. ११ B]णे दिणे । एवं पुरिसो नवनवो नवनवं भोगसुहं जणइ य ।

अन्नं च –

वियरिज्जइ सच्छंदं पेज्जइ मज्जं च अमयसारिच्छं ।
पच्चक्खो विय सग्गो वेसाभावो किमिह बहुणा? ॥ ५८७
तुज्झ वि रइरूवाए पुरिसा होहिंति किंकरागारा ।
वसियरणभाविया इव दाहिंति मणिच्छियं[3] दव्वं ॥ ५८८
एयाओ सव्वाओ अद्धं मे दिंति नियविढत्तस्स ।
तं पुण मह इट्ठयरी देज्जाहि चउत्थयं भायं ॥' ५८९
इय दासीधुत्तीए नाणाविहजुत्तिउत्तिनिउणाए ।
भणिया वि न सा भिन्ना जलेण कुहलियभित्ति व ॥ ५९०

[1] पइद्द॰. [2] सट्ठि. [3] याणिमो. [4] मणच्छियं.

भणिउं च पवत्ता–

'जं जस्स जणे रूढं जुज्जइ तस्सेव मामि! दं(तं) कम्मं।
न सहइ चलणाभरणं सीसम्मि निवेसियं कह वि॥ ५९१

भणियं च–

जं जसु घडियं तं तसु छज्जइ उड्डह पाइ कि नेउरु वज्जइ?।
सुट्ठ वि भुक्खइ भुल्लउ न कुणइ कइय वि चम्मयरत्तणु गिहिवइ॥ ५९२

तुम्हाणं चिय सोहइ एसायारो न जाउ अम्हाणं।
लज्जाए मह हिययं फुट्टइ व इमं सुणंतीए॥ ५९३

जं जस्स कुले रूढं तं तस्मासुंदरं न पडिहाइ।
भणइ जणे चम्मयरो सुट्ठ सुयंधं घरं मज्झ॥ ५९४

वुत्ता सि मए भामिणि! सव्वं काहामि जं तुमं भणसि।
एसंजली कओ मे मा गणियत्तं समाइससु॥' ५९५

पुणरवि भणेइ धुत्ती–'एसो धम्मो जयम्मि सुपहाणो।
जं बहुनराण सोक्खं कीरइ अंगप्पयाणेण॥ ५९६

अहवा धम्मे दिज्जइ नियसरीरेण अज्जिओ अत्थो।
एसो वि महाधम्मो जइ कज्जं तुज्झ धम्मेण॥' ५९७

पडिभणइ नम्मया तं–'धम्मो पाविज्जए ण विभवेण।
उप्पज्जइ इह भामिणि! सुणेहि इत्थं पि दिट्ठंतं॥ ५९८

धत्तुरीयंबीयाओ न होइ अंबस्स उग्गमो लोए।
एवंज्जियदव्वाओ एवं धम्मो वि ना होइ॥' ५९९

पुणरवि हरिणी जंपइ–'नूणं अइपंडिया सि तं बाले!।
न सुणसि अत्थेण विणा कह पूरिज्जइ जठरपिठरी॥ ६००

अत्थस्संगोवाओ किलेसरहिओ सरीरसुहजणओ।
विहिणा अम्हं सिद्धो तम्हा इत्थं समुज्जमसु॥' ६०१

भणियं च नम्मयाए–'अत्थमुप्पज्जेमि जइ तुमं भणसि।
कत्तेमि लण्हसोत्तं करेमि गंधि व धूयं वा॥ ६०२

जाणामि रसनइविहिं पत्तच्छेज्जविहिं च बहुविहं काउं।
दंसेहि कंचि कम्मं एगं गणियत्तणं मोत्तुं॥' ६०३

---

१ इम. २ पाविज्जिए. ३ धुत्तीरय°. ४ भवस. ५ एव°. ६ हारिणी. ७ विण. ८ °गोवाओ. ९ भप्पमु°. १० एण्हसोत्तं.

[हरिणीकया नम्मयासुंदरीकयत्थणा]

इय सोउं आरुट्ठा पाविट्ठा निट्ठुरेहिं[1] वयणेहिं ।
हिययगयकालकूडं[2] सहसा उग्गिरिउमारद्धा ॥ ६०४
'पावे ! सामेण मए भणिया न करेसि तह वि मह वयणं ।
नूणं पयंडदंडं अज्ज वि मग्गेसि निब्भग्गे ? ॥ ६०५
संपइ तं मज्झ वसे कारिस्समवस्स तो मणोभिट्ठं[3] ।
किं कइया वि हयासे[4] ! छुज्जइ अह गड्डरा सवसा ॥' ६०६
पडिभ[प २० A]णइ नम्मया तं – 'जीवंती न हु करेमि गणियत्तं ।
मारेसु व चूरेसु व जं वा रोयइ तयं कुणसु ॥' ६०७
तो तीए क(हु)ट्ठाए आरुट्ठो कामुओ[5] समाहूओ ।
भणिओ – 'बला वि भुंजसु इह भवणे महिलियं एयं ॥' ६०८
आलवइ सुंदरी तं – 'भाय ? अहं तुज्झ भइणिया एसा ।
मा कुणसु मज्झ दोहं जणणीसनेहेण सविओ सि ॥' ६०९
सो वि विलक्खो नट्ठो अन्ने अन्ने वि सा महापावा ।
जे जे पेसेइ नरे ते वारइ नम्मया एवं ॥ ६१०
सुट्ठुअरं सा पावा कुविया दंडाहया भुयंगे व्व ।
आणवइ निययदासे[6] – 'रे रे ! आणेह कंबाओ ॥' ६११
आणीयाओ तेहिं कणवीराईण लंबरुंबाओ ।
भणिया – 'पहणह एयं जह चयइ पइव्वयायारं ॥' ६१२
ते वि चिरवेरिया इव तामाहंतुं तहा समारद्धा ।
जह सुकुमालंमसरीरे[7] तीसे ताडिंति मम्माइं[8] ॥ ६१३
जह जह सरइ सरीरा रुहिरं रत्तीभवंति कंबाओ ।
तह तह सा हरिसिज्जइ पावा गड्डिक्कघराणि व्व ॥ ६१४
भणइ य – 'अज्ज वि पहणह जेणं सा मुयइ कुलवहूवायं[9] ।
ते वि जह नरयपाला तह तह ताडिंति निस्तिंसा ॥ ६१५
न मुयइं[10] सेकार पि हु ताडिज्जंती वि नम्मया तेहिं ।
चिंतइ 'मए वि एवं केइ जिया ताडिया पुव्विं ॥ ६१६
सव्वो पुव्वकयाणं कम्माणं पावए फलविवागं ।
अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमत्तं परो होइ ॥ ६१७

---

१ निट्ठरेहिं. २ °कूडं ३ °भिट्टं. ४ हायासे. ५ कामुगो. ६ °दोसे. ७ सुकुमाल°. ८ मंसाइं. ९ °वहू°. १० मुयइ.

होउ सरीरे पीडा नाहं पीलेमि अप्पणो सीलं।
अकलंकियसीलाए मरणं पि [न] बाहए मज्झ ॥ ६१८
बाहइ[1] पुण जं एसा अयाणमाणी मणोगयं मज्झ।
संतावइ अप्पाणं इमे वि आणाकरे पुरिसे[2] ॥' ६१९
वारं वारं पुच्छइ हरिणी—'किं रमसि अम्ह मग्गम्मि ?।'
'न हि न हि न हि' त्ति जंपइ सा वि दढं हम्ममाणा वि ॥ ६२०
पभणइ हरिणी—'पहणह मारह चूरेह निग्घिणा होउं।
मुचइ जेण हयासा छिज्जंती अप्पणो गाहं।' ६२१
इय[3] चोइएहिं तेहिं वि तह तह [सा] निद्दयं हया बाला।
जह संपत्ता मुच्छं खणेण सुनिरुद्धनीसासा ॥ ६२२
'मा मरिहि' त्ति पुणो वि हु सित्ता सलिलेण दाविओ पवणो[4]।
कहकह वि लद्धसन्ना पुट्ठा तं चेव सा भणइ ॥ ६२३
'वीसमउ' त्ति विमुक्का मज्झण्हे तह पुणो दढं पहया।
अवरण्हे वि तहेव य पहया जा पाविया मुच्छं ॥ ६२४
इय कित्तियं व भन्नइ तीए पावाइ निग्घिणमणाए।
बहुहा कयत्थिया सा संपुन्ना तिन्नि जा मासा ॥ ६२५

[करिणीकयं नम्मयासुंदरीए दुक्खमोयणं]

अह अत्थि तत्थ वेसा करिणी नामेण भद्दिया[5] किंचि।
दट्ठुं कयत्थणं तं जाया करुणावरा धणियं ॥ ६२६
ता एगंते तीए संलत्ता नम्मया—'तुमं भद्दे !।
किं सहसि जायणाओ[6] एयाओ घोररूवाओ ॥ ६२७
कीरउ हरिणीवयणं कुट्टिज्जसि दुक्करं तुमं किमि[प. २० B]ह ?।
कीरउ सुहिओ लोओ जेण इमा हरिणिया चड्ड(?) ॥ ६२८
तंबोलकुसुमपमुहो भोगो सव्वो वि सुंदरो अम्ह।
ता कीस तुमं मुद्धे[7] ! एवं वंचेसि अप्पाणं ? ॥' ६२९
वज्जरइ नम्मया तो—'पियसहि ! नेहेण देसि मह सिक्खं।
ता साहेमि फुडं तुह पच्छन्नं नत्थि सहियाणं ॥ ६३०
जावज्जीवं गहिओ नियमो मे सुयणु ! पुरिससंगस्स।
नियवायापडिवन्नं जीवंतो को जए चयइ ? ॥ ६३१

---

१ पाहइ. २ पुरिसो. ३ इह. ४ पयणो. ५ भट्टिया. ६ जायणाउ. ७ मुद्धे.

कस्स य न होइ मरणं जियलोओ कस्स सासओ होइ ? ।
अंगीकयमरणाए पियसहि ! जं होइ तं होउ ॥' ६३२
पुणरवि पुच्छइ करिणी – 'सुंदरि ! किं होइ तुज्झ सो वणिओ ? ।'
इयरी पभणइ – 'सुहए ! पिंचियओ मज्झ सो होइ ॥' ६३३
'जइ एवं सुचिसत्था चिट्ठसु मोएमि अज्ज दुक्खाणं ।'
इय जंपिऊण पत्ता करिणी हरिणीसमीवम्मि ॥ ६३४
पभणइ – 'सामिणि ! एसा मारिज्जइ कीस वंदिणी दीणा ? ।
किं वसइ तुज्झ हियए एसा वणियस्स तस्स पिया ? ॥' ६३५
सा भणइ – 'सचमेयं एयाए मोहिएण वणिएण ।
नाहं खणं पि भुत्ता ता एसा वेरिणी मज्झ ॥' ६३६
करिणी पभणइ – 'सामिणि ! मा कुणसु मणम्मि एरिसं संकं ।
जेण सहोयरधूया एसा भत्तिज्जिया तस्स ॥ ६३७
कयपुरिससंगनियमा वंभवया निच्छिएण[1] हियएण ।
अब्भुवगच्छइ मरणं न य करणं पुरिसभोगस्स ॥ ६३८
तिहि मासेहिँ न भिन्नं चित्तं एयस्स अवहा काउं ।
एत्तो[2] ताडिज्जंती मरइ चिय सव्वहा एसा ॥ ६३९
ता सुय ईसादोसं उवरिं एईएँ कुणसु कारुन्नं ।
कुणमाणी घरकम्मं धारउ पाणे तुह पसाया ॥ ६४०
अम्हाहि एत्तियाहिं भंडागारं न पूरियं तुज्झ ।
किं पूरिस्सइ एसा अंगीकयतणुपरिच्चाया ? ॥ ६४१
सुवइ इत्थीरज्झा बहुदोसा सव्वधम्मसत्थेसु ।
ता मा कुणसु कलंकं मह विन्नत्तिं कुणसु एयं ॥' ६४२
तीसे सोऊण गिरं[3] मणयं उवसंतमच्छरा हरिणी ।
वाहरइ[5] तक्खणं चिय नम्मयमेवं च भाणीया ॥ ६४३
'जइ ता घयपुन्नेहिं गड्डा[6] कुट्टंति तुज्झ निब्भग्गे ? ।
ता चेट्ठ मज्झ गेहे रसवइकिच्चाइँ कुव्वंती ॥' ६४४
हियए अणुग्गहं सा मन्नंती भणइ 'होउ एवं' ति ।
तो तीएँ अणुन्नाया पारद्धा रंधिउं भत्तं ॥ ६४५
सा आहारं साहइ जह सव्वो परियणो भणइ तुट्ठो ।
'ताइं चिय दव्वाइं नज्जइ अमिएण सित्ताइं ॥ ६४६

१ मच्छिएण. २ पत्तो. ३ गिरिं. ४ उवएन्त°. ५ याहरइ. ६ गड्डो.

को वि अउव्वो साओ संजाओ अज्ज सव्ववत्थूणं ।
जह अम्हाणं जीहा तित्तिं न हु पावइ कहंचि[1] ॥' ६४७
नाणावंजणपक्कन्नरंजिया हरिणियो[2] विचिंतेइ ।
'पढमं चिय किं न मए ठविया एसा इह निओए ॥' ६४८
संरोहिया य तत्तो कंथाघाया पयाइदव्वेहिं ।
भणिया—'अज्जप्पभिइं अभयं ते चिट्ठसु जहिच्छं ॥' ६४९
चिंतेइ न[प. २१ A]म्मया वि हु 'जायं असुहस्स कालहरणं मे ।
जाया जीवियआसा करेमि ता निवुया धम्मं ॥' ६५०
तत्तो य उभयसंझं हियए ठविऊण जिणवरं वीरं ।
वंदइ जायाणुन्ना करेइ उचियं च सज्झायं ॥ ६५१
भावेइ भावणाओ वेरग्गकराइँ गुणइ कुलयाइं ।
सव्वजणो अणुकूलो[3] वाघायं को वि नो कुणइ ॥ ६५२
पहिरेइ डंडियाइं थालीमसिमंडियाइँ[4] मलिणाइं ।
परिकम्मेइ[5] न अंगं लिंपइ य मसीएँ सविसेसं ॥ ६५३
भुंजइ थोवं थोवं तहा वि चित्तस्स निवुइगुणेण ।
गेन्हइ उवचयमंगं उववासं कुणइ तो बहुसो ॥ ६५४
विसहइ सीयं तावं 'मा कंती [होउ] मह सरीरस्स ।'
तह वि हु तणुलायन्नं न होइ से अन्नहा कह वि ॥ ६५५
जइ वि सरीरं सुत्थं तावेइ तहा वि माणसं दुक्खं ।
रोयइ कलुणं कलुणं सुमरंती कुलहरं बहुसो ॥ ६५६

[हरिणीमरणं, नम्मयासुंदरीए वेसाए सामिणिकरणं च]

अह अन्नया कयाइ हरिणी उग्गाइ सूलवियणाए ।
अभिभूया विलवंती पत्ता सहस त्ति पंचत्तं ॥ ६५७
तो भणइ परियणो सो—'महासई सेहिया इयासाए ।
तेण अकाले वि मया तारुन्नभरम्मि वट्टंती ॥' ६५८
रुन्ना केणइ न खला न विहियमन्नं[6] पि पेयकरणिज्जं ।
दासीसुएहिँ केहि वि पक्खित्ता सा मसाणम्मि ॥ ६५९
जाणावियं च रन्नो हरिणी हरिया कयंतचोरेहिं ।
तेणावि समाइट्ठं पंचउलं जाणगं निययं ॥ ६६०

---

१ कहिंचि. २ हरिणया. ३ अणुकूले. ४ थालीमसिमुडियाइं. ५ परिकागमइ. ६ विहिय भत्तं.

भणियं – 'जा तुम्हाणं पडिहासइ रूलक्खणेहिं जुया ।
तीसे करेह टिक्कं[1] हरिणीठाणम्मि वेसाए ॥' ६६१
कयसिंगारो मिलिओ वेसावग्गो तहिं निरवसेसो ।
अहमहमियाएँ पंचउलगाण देहं पयासितो ॥ ६६२
तेसि निरूवित्ताणं[2] संपत्ता दिट्ठिगोयरं कह वि ।
सहस त्ति नम्मयासुंदरि उ मलमलिणतणु[3]वसणा ॥ ६६३
रूवसरूवं तीसे दट्ठूणं विम्हिएहि तो वुत्तं ।
'धूली(लि?)तरियं रयणं भो ! एयं किं न पेच्छेहें[4] ॥ ६६४
लक्खणरूवसणाहा[5] अन्ना न हि अत्थि महिलिया एत्थ ।
कीस निरूवह अग्गिं दीवेण करम्मि गहिएण ? ॥' ६६५
भणियाओ चेडीओ – 'उव्वट्टियमज्जियं इमं कुणह ।
परिहावेह य तुरियं वत्थाभरणाणि हरिणीए ॥' ६६६
विहियं च चेडियाहिं अणिच्छमाणीए नम्मयाए तं ।
'हद्धी किमेयमवरं उवट्टियमिमं' ति[6] चिंतेइ ॥ ६६७
ठविऊण हरिणियाविट्टरम्मि पंचउलिएहिं तो तीए ।
मंगलतूररवड्ढं[7] कयं सिरे राणियाटिक्किं ॥ ६६८
भणियं च –
'जं किंचि हरिणितणयं भवणं दव्वं तहेव परिवारो ।
आहव्वं चिय सव्वं तं दिन्नं तुह नरिंदेण ॥' ६६९
इय जंपिऊण ताहे पत्ता पंचउलिया नियं ठाणं ।
इयरी वि देवया इव दिप्पंती चिंतए एवं ॥ ६७०
'एयाहि सहायाहिं [प. ११ B] होही सव्वं पि सुंदरं मज्झ ।
तम्हा करेमि इण्हिं सव्वाओ सुप्पसन्नाओ[8] ॥' ६७१
आय(वाह?)रिऊणं[9] ताहे सव्वाओ गोरवेण भणियाओ ।
'जं नियविढत्तभागं दिंतीओ आसि हरिणीए ॥ ६७२
सो सव्वो वि इयाणिं मए पसाएण तुम्ह परिमुक्को ।
जं पुण रन्नो देयं तं दिज्जह हरिणिकोसाओ ॥' ६७३
परितुट्ठाओ ताओ सव्वाओ नियसिरेण पयकमलं ।
फुसिऊण बिंति[10] – 'सामिणि ! कम्मयरीओ वयं तुज्झ ॥' ६७४

१ टिक्कं. २ निरुचिंताणं. ३ °गमणु°. ४ पेच्छेहा ५ °सगहो. ६ °ट्ठियं मि त्ति, ७ °रवड्ढं. ८ सुप्पसुयाओ. ९ °रिऊण. १० बिंति.

भणिया य विसेसेणं करिणी–'सहि! वल्लहा अहं तुज्झ ।
जाणासि य मह चित्तं ता चेट्ठसु मज्झ ठाणम्मि ॥ ६७५
सवं हरिणीकिच्चं करेज्ज सेवागयाण पुरिसाण ।
अहयं तु तुह पसाया छन्ना[1] चिट्ठामि गिहमज्झे ॥' ६७६
'एवं' ति तीय भणिए संतुट्ठा नम्मया हियमज्झे ।
नियधम्मकम्मनिरया सुहझाणगया गमइ कालं ॥ ६७७

[असंतुट्ठकासुकस्स राइणो कन्ने पजंपणं]

अन्नदिवसम्मि एगो कयसिंगारो नवम्मि तारुन्ने ।
संपत्तो तीय गिहं अइधणवं कामुओ[3] पुरिसो ॥ ६७८
पुच्छइ–'सा कत्थ गया तुम्हाणं राणिया अचिरठविया ? ।'
करिणी भणइ–'अहं सा पच्चभियाणेसि नो मुद्ध! ॥ ६७९
सो पभणइ–'नवदिणयरसमाणतेयं मणोहरं अंगं ।
तीए कमलच्छीए दिट्ठं चेट्ठइ मणे मज्झ ॥ ६८०
लक्खंसेण वि तुल्ला न तुमं तीए कहेहि ता सवं ।
अच्छइ सा कम्मि गिहे संपइ दंसेहि वा झ त्ति ॥ ६८१
तीए कज्जेण मए दुक्करकम्मेहिं अज्जिओ अत्थो ।
ता मह दंसेहि तयं पुज्जंति मणोरहा जेण ॥' ६८२
करिणी पुणो वि जंपइ–'तुमए पच्छादिया तया दिट्ठा ।
संपइ सहावरूवा गामिल्लय! कीस भुल्लो सि ? ॥' ६८३
सो भणइ–'नत्थि जई सा सङ्घाणं जामि तो अहं इन्हि ।'
करिणी भणइ–'न अम्हे वारेमो कुणसु जं रुयइ ॥' ६८४
गच्छंतेण य मग्गे कम्मयरो को वि पुच्छिओ छन्नं ।
'जणयसवहेण सविओ कहेहि सा राणिया कत्थ ? ॥' ६८५
कहियं च तेण छन्नं–'कहिंचि अच्छइ अहं न याणामि ।
सा कुलनारी नूणं परिवालइ अप्पणो सीलं ॥' ६८६

तओ सो आसाभंगमुप्पाइयमहाकोवानलडज्झमाणमाणसो तीए सीलमंडणखंडणोवायमलहंतो, रायाणमुवसप्पिऊणं जंपिउं पवत्तो–'देव! निवेएमि किं पि पियकारयं देवस्स अच्चब्भुयं ।' राइणा भणियं–'किं तयं ?' ति । तओ सो पावकम्मो नम्मयाकम्मचोइओ वज्जरिउमाढत्तो–'अत्थि इह नयरे एगा नारी ।

1 चिट्ठा. 2 °आण°. 3 कासुमो. 4 नइ. 5 मुवसमप्पिऊण.

सी[1] तिलोत्तमाईणमं[2]च्छराईणमन्नयरी, सुरवइसावेण निवडिया न कस्स वि अप्पाणं दंसेइ । मन्ने पयावइणा तुह निमित्तमेव रक्खिज्जइ । ता किं देव ! रूवेण जोवणेण रज्जेण जीविएण वा जइ सा लच्छि व सयलसुहखाणी मयरद्धयमहानरिंदराय[प. २२ A]हाणी अंतेउरं[3] नालंकरेइ ? । राइणा[4] भणियं—'का सा ?' इयरेण भणियं—'जा सा हरिणीठाणसन्निविट्ठा ।'

सुओ एस वइयरो नम्मयासुंदरीए, चिंतियं च 'सच्चं[5]' केणावि पढियं—

आसासिज्जइ चक्को जलगयपडिबिंबदंसणसुहेण ।
तं पि हरंति तरंगा पिच्छह निउणत्तणं विहिणो[6] ॥ ६८७

पत्तामि जा न पारं दुक्खसमुद्दस्स कह वि एगस्स ।
तावेऽन्नयरमपुव्वं उवट्ठियं दारुणं वसणं ॥ ६८८

खुद्दो रुद्दो चंडो निद्धम्मो नारओ महापावो ।
एसो बब्बरराया गहिओ को छुट्टइ इमेण ? ॥' ६८९

ता इन्हि किं करेमि ? कत्थ गच्छामि ? कस्स साहेमि ? कं सरणं पवज्जामि ? सवहा नत्थि मे जीवमाणीए सीलरक्खा ।

हा हा कयंत ! निग्घिण ! जइ ता इं दुक्खभायणं रइया ।
ता कीस इमं रूवं निम्मवियं वेरियं[9] मज्झ ? ॥ ६९०

दुहिए कीरइ रूवं दुहियमरूवं ति एत्थ जुत्तमिणं ।
लोहीए पक्कन्नं रज्झइ नहु(तह) खप्परे छगणं ॥ ६९१

पुन्नस्स य पावस्स [य] वामो[10] एगत्थ एस कीस कओ ? ।
सव्वगुणसंपउत्ते भत्ते विसखेवणमजुत्तं ॥' ६९२

एवमणेगहा विलविऊण परिभाविउं पवत्ता 'मरणमेवोसहमिमस्स[11] दुक्खस्स, नऽन्नहा सीलरक्खा होइ । तं पुण विहाणसेण वा विसेण वा झ त्ति संभवइ । अन्नं च सुयपुव्वं मे साहुणीणं समीवे अक्खाणयं—

[धणेसरकहाणयं]

वसंतपुरे नयरे घणवइसिट्ठिसुओ धणेसरो अहेसि । सो जणणिजणए कालगए तहाविहकम्मदोसेण गहिओ दारिद्दविहिणा चिंतिउं पवत्तो—

'चिरकालियवेरग्गो कयाइ उच्छामिया पणस्संति (?) ।
इय नासइ दालिद्दं कयाइ देसंतरगयस्स ॥ ६९३

---

१ सो. २ °माईणिम°. ३ °अंतेउर. ४ रायणा. ५ सच्चं. ६ विहिणा. ७ ताव. ८ जय. ९ वेरियं. १० वामो. ११ °मिमरस.

अन्नं च-

उच्चं नीयं कम्मं कीरइ देसंतरे धणनिमित्तं।
सहवड्डियाण मज्झे लज्जिज्जइ नीयकम्मेण ॥' ६९४

एवमालोइऊण संठविऊण कुडुंबं दूरदेसे पत्तो एगं गामं। 'न पयाणएहिं दालिद्दं छिज्जइ' त्ति ठिओ तत्थ। भणिओ गामीणेहिं-'गोरुवाइं चारेहि त्ति। लेभिहिसि मासंते पइगोरूवयं रूवयं' ति। सो वि [व]वसायंतराभावाओ चारिउं पवत्तो। तस्स य पंच पंच रूव[य]सयाइं पइमासं मिलंति। पंचहिं वासेहिं जाओ महाधणो। तओ मुत्तूणं गोवालत्तं लग्गो वाणिज्जे। दुवालसवासेहिं जाओ अणेगधणकोडिसामी, चिंतिउं च पवत्तो-

'किं तीए लच्छीए नरस्स जा होइ अन्नदेसम्मि।
न कुणइ सुयणाण सुहं खलाण दुक्खं च नो कुणइ॥' ६९५

तओ सो गमणमणो चिंतेइ 'अंतरा महंतमरन्नमत्थि। तत्थाणेगे भिल्लपुलिंदाइणो चोरा परिवसंति, ते महंतं पि सत्थमभिद्दवंति। ता न एसा संपया निवाहिउं तीरइ' त्ति काउं गहि[प.२२B]याइं [त]ओ महग्घमोल्लाइं पंच महारयणाइं। ताइं जुन्नचेलंचले बंधिऊण कमेण पत्तोऽरन्नपच्चासन्नं। सुयं च 'इत्थारन्ने णेगाओ[1] चोरपल्लीओ। कप्पडिओ वि वच्चंतो उग्गाविऊणगोविओ कीरइ। रूयगो वि गंठिबद्धो[2] न छुट्टइ। तओ धणेसरो रयणाणि एगत्थ ठविऊण तेहिं समाइं पंच पत्थरखंडाइं[3] कच्छुट्टियाए गोविऊण, 'वंचेयव्वा मए तक्कर' त्ति निच्छियमणो,-'एस भो! रयणवाणिओ गच्छइ' त्ति उच्चसद्दं घोसंतो पविट्ठो महाडविं[4]। घोसणाणंतरमेव गहिओ तक्करेहिं, पुच्छिओ य-'कत्थ पत्थिओ सि?' भणइ-'रयणाणि विक्केउं।' 'कत्थ रयणाणि ते? दंसेहि' त्ति वुत्ते धणेसरेण कच्छोट्टियाउ कड्ढिऊण दंसिओ गंठी, भणियं च-'महग्घाणि एयाणि न तुब्भे गिण्हिउं तरह।' 'किमेएसिं मुल्लं' ति पुच्छिएण सिट्ठं-'एगेगा धणकोडी।' तओ पच्चभिन्नायं पत्थरे चोरेहिं 'नूणं गहेगहिओ एसो' त्ति कलिऊण भणिओ तेहिं-'तुममेव एएसिं जोग्गो सि। गच्छ मणिच्छियं' ति। इयरेण भणियं-'जइ केइ गाहगा अन्ने वि जाणह ता सिग्घं पेसिज्जह।' तओ हसिऊण पडिनियत्ता चोरा। धणेसरो वि तं चेव घोसंतो चलिओ। अग्गओ पुणो वि भिल्लेहिं[10] गुहाविओ। ते वि[11] तहेव 'गहगहिउ' त्ति भणिऊण गया। एवं पए पए पुलिंदाईणं दंसंतो पत्तो महाकंतारपारं। बीयदिवसे तहेव घोसंतो पडिनियत्तो[13]। तहेव उग्गाहओ गहग्गहिओ त्ति छुक्को

1 छज्जिइ. 2 कुमंबं. 3 मूलग. 4 महतं. 5 णगाओ. 6 °बढे. 7 °खंडोयं. 8 भेरिच्छय°. 9 महाडवि. 10 °भिल्लेय. 11 गहं°. 12 व. 13 °नियत्तो.

य। तप्पभिइं[1] दूरट्ठिया चेव चोरा निहालयंति जाव सत्तमदिणे रयणाणि घेत्तूण गओ। सुहेण पत्तो सट्ठाणं, भोयाणं च भागी संवुत्तो[2] त्ति।

तो जहा तेण धणेसरेण रयणाणि रक्खियाणि तहा अहं गहेल्लचि[3]ट्ठे(चेट्ठे ?)ण सीलरयणं रक्खेमि त्ति। मा [कयाइ] जीवंती कहिं पि कुलहरं पि पावेज्जा। किं तु जइ कह वि एसो राया इह एइ ता मम सरीरं पासइ तक्खणमेव भंजइ मे सीलं, ता न तीरइ गहिल्लत्तणं काउं, घरमज्झगया विहाणसेण मरिस्सं। अह अन्नो कोइ 'एही ता लद्धावसरा[4]' अवहत्थियलज्जविणया अंगीकयसरीरसंतावा गहेल्लचेट्ठ[5]यमेव पवज्जिस्सं। माया वि कारणे कीरमाणी न दोसमावहइ' त्ति निच्छियमणाए।

[नम्मयासुंदरीए राइणो निमंतणं गहेल्लचेट्ठयकरणं य]

अन्नया रूवायक्खणावज्जियमाणसेण राइणा पेसिओ समागओ नम्मयागिहं दंडवासिओ। परियाणियकज्जाए कया तस्स पडिवत्ती पुच्छिओ य – 'किमागमणपओयणं ?' तेण भणियं – 'राइणा तुह दंसणुक्कंठिएणाइमायरेण समाइट्ठो "हरिणीठाणट्ठवियं राणियं सिग्घमाणेहि" ता तुरियं कीरउ गमणेण पसाओ।' नम्मयाए भणियं –

'जं इच्छंती हियए तुमए तं चेव मज्झ आइट्ठं।
इक्कं उवंठीया बीयं पुण वरहिणा लवियं॥ ६९६
अत्थि च्चिय पुन्नाइं अम्हाणं नत्थि एत्थ संदेहो[प २३ A]
जं संभरिया अज्ज महिवइणा इंदसेणे[6]णं॥' ६९७

भणिया करिणी – 'भद्दे[7]! सुयं तए सुभासियं –
जइ किज्जइ विट्टालडउ लंघिज्जइ अप्पाणु।
तो वरि गहिलिय! तेण सहु जो दंगडइ पहाणु[8]॥' ६९८

करिणीए भणियं – 'सुंदरमेयं, पुज्जंतु मणोरहा।' नम्मयाए भणियं – 'सलक्खणा ते जीहा। पुणो एरिसमासीवायं मम दिज्जाहि' त्ति भणंतीए कारिओ दंडवासियस्स मज्जणभोयणाइओ उवयारो। अप्पणा वि कयमज्जणाइसिंगारा परिहियविसेसुज्जलवत्थाभरणा दंडवासिओवणीयसिबियारूढा चलिया नयराभिमुहं। अंतराले दिट्ठं घडिजंतं[9] वहमाणं। तओ भणियं – 'तन्हाइया अहं, उत्तारेह मं जेणेत्थ सहत्थेण पाणियं पियामि।' तओ 'जमाणवेसि' त्ति भणंतेण उत्तारिया दंडवासिएण, पत्ता विमलजलभरियं सारणिं[10]। तत्थ पाऊण पाणियं दुहियचेक्कणजंवाल[11]भरियसद्दाए लद्धावसरा फेल्हुमणं[12]मिसेण

१ तप्पभिउ. २ सवोत्तो. ३ गहेल्ल°. ४ °वसरा. ५ °चेट्ठय°. ६ °सेणेणो. ७ भद्दा. ८ पाहाणु. ९ °जंत. १० सारणीं. ११ जवाल°. १२ पल्हुसण°.

य। तप्पभिइं[1] दूरट्ठिया चेव चोरा निहालयंति जाव सत्तमदिणे रयणाणि घेत्तूण गओ। सुहेण पत्तो सट्ठाणं, भोयाणं च भागी संवुत्तो[2] त्ति।

तो जहा तेण धणेसरेण रयणाणि रक्खियाणि तहा अहं गहेल्लवि हे(चेट्ठे ?)ण सीलरयणं रक्खेमि त्ति। मा [कयाइ] जीवंती कहिं पि कुलहरं पि पावेज्जा। किं तु जइ कह वि एसो राया इह एइ ता मम सरीरं पासइ तक्खणमेव भंजइ मे सीलं, ता न तीरइ गहिल्लत्तणं काउं, घरमज्झगया विहाणसेण मरिस्सं। अह अन्नो कोइ एही ता लद्धावसरा[4] अवहत्थियलज्ज-विणया अंगीकयसरीरसंतावा गहेल्लचेट्ठ[5]येमेव पवज्जिस्सं। मायाए वि कारणे कीरमाणी न दोसमावहइ' त्ति निच्छियमणाए।

[नम्मयासुंदरीए राइणो निमंतणं गहेल्लचेट्ठयकरणं य]

अन्नया रूवायक्खणाविज्जियमाणसेण राइणा पेसिओ समागओ नम्मयागिहं दंडवासिओ। परियाणियकज्जाए कया तस्स पडिवत्ती पुच्छिओ य—'किमा-गमणपओयणं?' तेण भणियं—'राइणा तुह दंसणुक्कंठिएणाहमायरेण समाइट्ठो "हरिणीठाणट्ठवियं राणियं सिग्घमाणेहि" ता तुरियं कीरउ गमणेण पसाओ।' नम्मयाए भणियं—

'जं इच्छंती हियए तुमए तं चेव मज्झ आइट्ठं।
इक्कं उक्कंठीया बीयं पुण वरहिणा लवियं॥ ६९६
अत्थि चिय पुन्नाइं अम्हाणं नत्थि एत्थ संदेहो[6] [प ३१ A]
जं संभरिया अज्ज महिवइणा इंदसेणेणं॥' ६९७

भणिया करिणी—'भद्दे[7]! सुयं तए सुभासियं—
जइ किज्जइ विट्टालडउ लंघिज्जइ अप्पाणु।
तो वरि गहिलिय! तेण सहु जो दंगडइ पहाणु[8]॥' ६९८

करिणीए भणियं—'सुंदरमेयं, पुज्जंतु मणोरहा।' नम्मयाए भणियं—'सलक्खणा ते जीहा। पुणो एरिसमासीवायं मम दिज्जाहि' त्ति भणंतीए कारिओ दंडवासियस्स मज्जणभोयणाइओ उवयारो। अप्पणा वि कयमज्जणाइ-सिंगारा परिहियविसेसुज्जलवत्थाभरणा दंडवासिओवणीयसिबियारूढा चलिया नयराभिमुहं। अंतराले दिट्ठं घडिजंतं[9] वहमाणं। तओ भणियं—'तण्हाइया अहं, उत्तारेह मं जेणेत्थ सहत्थेण पाणियं पियामि।' तओ 'जमाणवे-सि' त्ति भणंतेण उत्तारिया दंडवासिएण, पत्ता विमलजलभरियं सारणिं[10]। तत्थ पाऊण पाणियं कुहियचेक्कणजंवालें[11]भरियखड्डाए लद्धावसरा फेल्हुसणं[12]मिसेण

१ तप्पभिउ २ सवोत्तो ३ गहेल्ल°. ४ °वसरा. ५ °चेट्ठय°. ६ °सेणगो. ७ भद्दा. ८ पाहाणु. ९ °जत. १० सारणी। ११ जवाल°. १२ पल्हुसण°.

झड त्ति निवडिया खड्डाए । तओ कयअट्टहासाए–'अहो ! राइणा- मसेयमाभरणं[1] पेसियं' ति भणंतीए सबमालिंपियं सरीरं । एत्थंतरे 'हा सामिणि ! किमेयं ?' ति भणमाणो समुहं[2]मागच्छंतो–'अरे रे ! रायगिहिणिं[3] अप्पणो भारियं काउमिच्छसि' त्ति जंपमाणीए पहओ कद्दमेण दंडवासिओ । 'अहो ! गहो' त्ति कओ जणेण कोलाहलो । विगरालीकयलोयणा[4] निल्लालियजीहासिवारवं[5] कुणंती पहाविया जणसमूहसमुहं–'अहो ! रायभारियं गहिल्ल[6]मुल्लवह त्ति संचल्लहं[7] रायउलं[8] जेण दंसेमि दुब्भासियफलं[9] ।' एवमालजालाई पलवंतीए दंडवासिओ रायसगासं साहिउं पयत्तो–'देव ! सच्चमेयं–

अन्नह परिचिंतिज्जइ सहसा[10] कंडुज्जुएण हियएण ।
परिणमइ अन्नह चिय कज्जारंभो विहिवसेण ॥ ६९९

जओ सा वराई सयमेव देवसंगमूसुया मम विन्नत्तियं सोऊण वहलरोमंचकंचुयं[11] चचक्कियं तणुं तुरियं[12] कयसिंगारं मह वयणेण समारूढा सिवियं ति । तयणंतरं "पच्चक्खा लच्छी न हि न हि रंभा तिलोत्तिमा मयणघरणि[13]" त्ति दिसि दिसि समुट्ठिया जणसमुल्लावा । मए पुण चिंतियं एयासिं संतियं रूवलायन्नं घेत्तूण देवस्स कए विहिणा निम्मविय त्ति । तओ देव ! न याणामि किं तीए चक्खुदोसो ? किं जलं पियंतीए उत्तेडियं किमपि[14] ? खड्डातीरेण गच्छंती धस त्ति निवडिया विगंधे जंबाल[15]मज्झे । तओ गहगहिया इव जणेण कीलाविज्जंती चेट्ठइ ।' तओ राइणा संभंतेण भणिओ–'गच्छ गच्छ सिग्घं ति, तिहुयणभूयवाइयमाणेहि[16] । अहं पि एस तत्थ पत्तो चेव ।' तओ दंडवासिएण समाहूओ चेवागओ तिहुयणो । भणिओ रन्ना–'निरूवेहि को एस गहो ? केणोवाएण नियत्तइ ?' तिहुयणेण उग्घाडिया कुडपुत्थिया, निरूवियाइं गहलक्खणाइं । सुचिरं परिभाविऊण संलत्तं–'देव ! एस उवाओ नाम गहो[18] । पुरिसित्थिया[णा]मिह माणुससंगमपाविऊण तणमुप्पज्जइ । असज्झो मंततंताणं, [प. २२B] एयस्स इच्छाभंगो न कायव्वो । जं मग्गेइ तं चेव दिज्जइ, न य चंकारिज्जइ त्ति तओ कालेण सयमेव उवसमइ त्ति ।' तओ नम्मयासुंदरिभागधेयचोइएण भूयवाइएण भणिएण रन्ना उग्घोसावियं सबाहिरब्भंतरे नयरे–'जो एयाए रायवल्लहाए गरुए वि अवराहे कए मंगुलं भणिस्सइ करिस्सइ वा, तमहं महादंडेण दंडिस्सामि' त्ति ।

---

१ °माभरनं. २ समुह°. ३ °गिहिणी. ४ °लोयणो. ५ सिवारवंती. ६ गहिल्ल°. ७ संचल्लह. ८ °उलं. ९ दुब्भासिय°. १० सहस. ११ °कंचुयं. १२ तुरिय. १३ °घरणे. १४ किमवि. १५ जंबाल°. १६ °माणेहिं. १७ समा°. १८ गहो. १९ दिज्जइ. २० °भागध°.

अह सा पच्चयहेउं जणस्स गहचेट्ठियं पयासेइ ।
हिंडइ घरं घरेणं पप्फोडंती पुलालाइं ॥ ७००
कत्थई खप्परहत्था भिक्खं मग्गइ कहिंचि जइ लहइ ।
छड्डाविज्जइ सहसा सह हिंडंतेहिं डिंभेहिं ॥ ७०१
घेक्खल्लं दट्ठूणं लिंपइ अंगं पुणो पुणो धणियं ।
सीसे[1] खिवइ कयारं छारेण य गुंडइ सरीरं ॥ ७०२
जरचीरचीरियाहिं वेढइ अंगाइं दुगुणतिगुणाइं ।
दट्ठूण य निम्मल्लं मुंडे माली(लं?) सिरे कुणइ ॥ ७०३
जं जं रच्छाचीरं तं तं सव्वं[2] पि निवसइ कडीए ।
कत्थइ गया य नच्चइ कत्थइ फेक्कारवं कुणइ ॥ ७०४
गायई[3] हसइ य कत्थइ अन्नत्थ करेइ घोरधाहाओ ।
नारीए पुरिसस्स य निवडइ चलणेसु पहसंती ॥ ७०५
दिवसम्मि भमइ नयरे सुन्नघरे सुन्नदेउले वा वि ।
रत्तिं गंतुं छन्नं करेइ जिणवंदणाईयं ॥ ७०६
'रे जीव ! मा किलम्मसु एयाए लज्जणेज्जकिरियाए ।
जि[4]च्चिय सहिंति दुक्खं ति च्चिय सुहभायणं होंति ॥ ७०७
सीलरयणं महग्घं किच्छेण वि जइ तरिज्ज रक्खेउं ।
ता होज्ज मज्झ तुट्ठी तिहुयणरज्जोवलंभे य ॥ ७०८
जइ जत्थ च तत्थ य जह न तह य रे हियय ! निव्वुइं[5] कुणसि ।
ता दुक्खं तुह जम्मंतरे वि दुक्खं चिय न होइ ॥ ७०९
रे जीव ! भवे आसिर जत्थ व तत्थ व सुही य गयनिंद ! ।
जेण व तेण व संतुट्ठ जीव ! मुणिओ[6] सि तं अप्पा ॥ ७१०
जं सोढं जीव ! तुमे दुक्खं सुन्नम्मि तम्मि दीवम्मि ।
भावेसु इमं सव्वं किंचियभागो इमो तस्स ॥ ७११
हरिणीगेहम्मि तुमे सोढाउं[7] कयत्थणाउ भीमाउ ।
ताओ संभरमाणो मा झूरसु जीव ! एत्ताहे ॥' ७१२
एवं अणुसासंती[8] अप्पाणं जामिणिं[9] गमेऊण ।
पुणरवि पभायसमए जिणमुणिगुणसंथवं कुणइ ॥ ७१३

---

१ कत्थइइत्थ ख°. २ सीहे ३ सव्व ४ गायइ. ५ निव्वुय. ६ मुणिओ.
७ सोढाओ. ८ °सासती. ९ जामिणी.

पुणरवि तहेव नयरे वियरइ कयगीयनच्चणपयासा ।
अन्नदिणे घरदारे गायइ एयारिसं गीयं ॥ ७१४

'पभणइ लोगो गहिल्लिया　सुस्सुइया ण अहं गहिल्लिया ।
जोएमि निरवज्जभिक्खयं　जा नासइ सयलं पि दुक्खयं ॥' ७१५

[नम्मयासुंदरीए जिणदेवेण सह मिलणं]

एयं तीए गीयं निसुयं आसन्नमंदिरगएणं ।
सुस्सावएण केणइ अच्चंतं विम्हियमणेणं ॥ ७१६
एयमउव्वं गीयं सम्मं हिययम्मि भावयंतेण ।
निरवज्जसद्दसुणणा 'नायं न णु नम्म[प.२४ A]या एसा ॥ ७१७
कारणवसेण केणइ एरिसनेवच्छधारिणी एसा ।
तो निच्छयनाणत्थं पुच्छिज्जइ छन्नभासाए ॥' ७१८
इय चिंतिऊण पुच्छइ – 'रे गह ! तं कस्स संतिओ तस्स(?) ।
पूएसि कं च देवं अवयरिओ किमिह पत्तम्मि ? ॥' ७१९

तीए वुत्तं –

'सव्वजगजगडणपरो जेण हओ मोहदाणवो चंडो ।
तस्संतिओ गहो हं लीलाए एत्थ निवसामि ॥' ७२०
तं चेव महादेवं सूरं धीरं जगुत्तमं वीरं ।
पूएमि भत्तिसारं किं न मुणसि सावओ तं सि ? ॥ ७२१
अवयरणकारणं पुण नाहं साहेमि तह वि नाओ सि ।
वच्चंति[7] अणिट्ठमणा वहवे[8] सागारिया लोया ॥' ७२२
भणियं च सावएण वि – 'जइ वि न साहेमि तह वि नाओ सि ।
हिंडसु जह भणइ किं अम्हं तुम्ह कुचीए ॥' ७२३
इय जंपंतो सहसा ओसरिओ सावओ तओ ठाणा ।
चिंतइ 'न हु सच्चगहो कारिमयं चेट्ठियं एयं ॥ ७२४
साहिउकामा वि इमा न कहइ सच्चं जणस्स संकाए ।
ता पइरिक्कं गंतुं पुच्छिस्सं एत्थ परमत्थं ॥' ७२५
तो अणुमग्गं तीए हिंडइ केणइ अणज्जमाणो सो ।
इयरी वि गहियभिक्खा विणिग्गया भोयणं काउं ॥ ७२६

---

१ °पयास. २ °मणेणा. ३ नेच्छय°. ४ पुय. ५ किंचि. ६ गणो, ७ विचंति, ८ वहावे.

नयरस्स नाइदूरे[1] जिन्नुज्जाणे जणागमविहीणे।
नागंघरयम्मि पत्ता उवविट्ठा चोहए जीवं ॥ ७२७
'रे जीव ! मा धरिज्जसु निव्वेयं माणसे मणागं पि।
दुहरूवं पि सुह चिय भावेज्जसु सम्ममेवं च ॥ ७२८
एयाइं[2] रच्छाचीवराइँ मन्निज्ज देवदूसाइं।
रक्खेज्जइ जेहिँ दढं सवानायाण तुह देहो ॥ ७२९
जं पि य अंगे लग्गं कुहियं कद्दमविलेवणं एयं।
सुट्ठु सुयंधं नाणसु सीलंगं कुणइ जं सुरहिं ॥ ७३०
एयं पि अंतपत्तं(पंतं) [अन्नं] भावेज्ज अमयरस[स]रिसं।
एएण उवग्गहिओ जं देहगिहे तुमं वससि ॥ ७३१
भणउ जणो एस गहो तं चिय भावेसु एस मोक्खो त्ति।
एयपसाएण तुमं जओ विमुक्का सि मिच्छाओ[3] ॥ ७३२
सोढव्वं दुहमेयं पाविज्जइ जा न निग्गमोवाओ।
एवं चि सहंतीए मे होही सुंदरं सव्वं ॥ ७३३
भणियं च–
ता निंति किं पि कालं भमरा अवि कुडयवच्छकुसुमेसु।
कुसुमंति जाव चूया मयरंदुद्दामनिस्संदा ॥' ७३४
इय भाविऊण सुइरं सम्मं वेरग्गमग्गगहिया य।
भुवणगुरूण जिणाणं संथवणं काउमारद्धा ॥ ७३५
'निम्महियमोहमल्ला बंधवभूया जणाण सव्वेसिं।
जम्मजरमरणरहिया जयंतु तित्थेसरा सव्वे ॥ ७३६
भत्तिजुयाण जिणाणं जेसिं पयपंकयं थुणंताणं।
वच्चंति दुरंताइं दूरंदूरेण दुरियाइं ॥ ७३७
निट्ठवियकम्मरिउणो[4] केवलवरनाणदंसणसमिद्धा।
सासयसुहसंपत्ता जयंतु ते जिणवरा सव्वे ॥ ७३८
सव्वेसिं सिद्धाणं आयरियाणं च गुणस[४ २४ B]मिद्धाणं।
तह य उवज्झायाणं नमो नमो होउ मे निच्चं ॥ ७३९
मोक्खपहसाहगाणं पाए पणमामि सव्वसाहूणं।
सिग्गमग्गे सुहियस्स य नमो नमो समणसंघस्स ॥' ७४०

---

१ नाइद्दूरे. २ नग°. ३ एयाइं. ४ गिच्छाओ. ५ °वरय°. ६ °रियणो.

एवं सत्थीभूयहियया जाव कवलगहणं काउमारद्धा, एत्थंतरे सो वि सावओ उज्जाणे पविसंति[1][मा]लोइऊण कयदिसालोओ दारंतरेण समागओ नागधरासन्नं[2] । 'गीयत्थो' त्ति काऊण भणिया—'इओ निसीही ।' नम्मयासुंदरी निसीहीसद्दसवणाओ सूरावलोयणरहंगी[3] व मरिउं च जीविया हरिसभरनिब्भरा संवुत्ता[4] । तओ—'सागयं निसीहियाए, वीसमह ताव महासावग ! इह सिणिद्धं[5]-तरुच्छायाए जावाहमप्पाणं संठवेमि[6] ।' ताहे अणवसरो त्ति नाउं निसन्नो तहाविहसिणिद्धतरुणं[7]चल्लीए । नम्मया वि तुरियं तुरियं कयकइवयकवलाहारा कालोच्चियविहियसरीरसंठवणा—'एहि एहि' त्ति भणंती निग्गया संमुही । मन्नुभरनिरुद्धकंठा निवडिया य तस्स चलणेसु रोविउं[8] च पवत्ता । सावगेणावि महुरवयणेहिं आसासिऊण भणिया—'महाणुभावे ! किं तं रोइसि ?' त्ति । नम्मयाए रुयमाणीए चेव सिट्ठं—'बहुकालाओ धम्मबंधवो तुमं दिट्ठो, ने[9] य लोयावंरा(यविंदा ?)ओ वीह[माणीए ?] मए वयणमित्तेणावि तुह विणयपडिवत्ती कया ।' सावगेण वुत्तं[10]—'मुद्धे[11] ! मा एयनिमित्तं खेयमुव्वहसि । कयं चेव सव्वं तुमए एरिससाहम्मियपक्खवायमुव्वहंतीए[12], साहिओ तए नियभावो[13] गूढक्खराए वाणीए । मए वि लक्खिओ चेव कहमन्नहा इत्थागओ ? त्ति[14] । ता होसु सुविसत्था । सुणाहि मम वत्तं—अहं भरुयच्छनिवासी जिणदेवो नाम वीरजिणसासणाणुरत्तचित्तो[15] मित्तो वीरदासस्स । सो वि इत्थ आगंतुकामेणेमेहिं घयभरियं[16]सगडेहिं संपत्तो पोयठाणं । दिट्ठो[17] य मए तत्थ थिरधरियजाणवत्तो अंसुजलोल्लियकवोलो[18] वीरदासो । पुच्छिओ य मए—'कओ भवं ? किं च सोयाउरो[19] लक्खियसि ? ।' निवेइयं च तेण—'मए वब्बरं[20]कूलगएण हारिया नम्मयासुंदरी । गविट्ठा सा बाहिरब्भंतरे नयरे बहूणि दिणाणि । न से पउत्तिमेत्तं पि उवलद्धं, न अम्हेसु चिट्ठंतेसु सा पायडा होइ त्ति कलिऊण समागया वयं । एयं मे उव्वेयकारणं, गेहं गंतूण पुणो वि भायसहिएण सिग्घं तत्थ गंतव्वं । तुमं पुण कत्थ पत्थिओ सि ?' मए भणियं—'अहं पि तत्थ दीवे गमिस्सं ।' 'जइ एवं गच्छिहिसि[21] तुमं तत्थ [न]म्मयं तं अत्थेण सामत्थेण सव्वस्सेण वा मोयाविज्जासि ।' मए भणियं—'जा तुह भायधूया सा किं मम धूया न होइ ? अच्छह तुब्भे वीसत्था जाव ममागमणं ।' अहं पुण 'तं दिट्ठमोइयं मोत्तूण न पडिनियत्तामि' त्ति कयपइन्नो चलिओ [प. २५ A] म्हि ।

---

१ पविसंती°. २ °रासन्न. ३ °रहगी. ४ संडुत्ता. ५ सिणिद्ध°. ६ मंठवेमि. ७ °तरुण°. ८ रोविओ. ९ ने. १० वोत्तं. ११ मुद्धे. १२ °मोव्वहं°. १३ °भावे. १४ त्ति. १५ °चित्ते. १६ °भरीय°. १७ दिट्ठो. १८ °कवोलो. १९ सोयाओरो. २० बव्वर°. २१ बच्छिहिसि.

अंतरा य मम पोओ पडिकूलपवणेण दीवंतरं[1] नीओ। चिरकालेणाणुकूल-पवणो पाविओ। तेण चिरेणेह पत्तो म्हि। अन्नेसिया मए तुमं इत्थ, न कत्थइ उवलद्धा सि। अज्ज पुणासंभाणिज्जरूवा वि 'अणवज्जभिक्खं माएमि' त्ति सोऊण, कुओ इत्थ अणवज्जसद्दो त्ति संकिएण पुच्छिया सि। तुमं पि साहेहि एत्तियदियहेहिं किं सुहमणुभूयं, किं वा गहिलचेट्ठएणं[3] हिंडसि?'। एवं पुट्ठाए सिट्ठं नम्म[या]ए हरिणीओ आरब्भ वट्टमाणदिवसावसाणं नियच-रियं। तं सोऊण समुट्ठियसिय(?)रोमेण भणियं जिणदेवेण–

'धन्ना सि तुमं वच्छे अइदुक्करगारिए महासत्ते!।
सोमालसरीराए जं विसहियमेरिसं दुक्खं॥ ७४१
सच्चो जणप्पवाओ मरइ अपुट्ठे न जीवए को वि।
जं तह ताडिज्जंतं पाणेहि न वज्जियं अंगं॥ ७४२
धीराण तुमं धीरा जीए तह दारुणं महावसणं[4]।
सम्ममहियासियं सिय(?) न बालमरणे कया वंछा॥ ७४३
तं धन्ना धन्नयरी धम्मीणं धम्मिणी तुमं चेव।
जीए वसणसमुद्दे धम्मतरंडं न परिचत्तं॥ ७४४
सीलनईणं मज्झे पढमा लेहा लिहिज्जए तुज्झ।
जीए नि[य]बुद्धीए मेच्छाओ रक्खिओ अप्पा॥ ७४५

[जिणदेवकयं नम्मयासुंदरीमोयणं]

संपइ सुणेहि सुंदरि! जाया तुह मोयणम्मिं[5] मह बुद्धी।
वित्तवयभीरूणं न हु सिज्झइ एरिसं कज्जं॥ ७४६
कल्लं च मए निसुयं एसा इट्ठा दढं[6] नरिंदस्स।
नयरा दूरं जंती रक्खिज्जइ रायपुरिसेहिं॥ ७४७
गरुयम्मि वि यऽवराहे एईए विप्पियं कुणइ जो उं।
देइ तणुं च पहारं सो पावइ दारुणं दंडं॥ ७४८
ता हरिउं न हि तीरसि धणेण बहुणा वि मुयइ न हु मुच्छा।
नवर तु पक्खवाइं दढमेसो पोयवणियाणं॥ ७४९
तेसु सुहिएसु तूसइ दूमेज्जइ ताण दुक्खलेसेण।
तेसुमवराहकारिसु गाढं कोवाउरो होइ॥ ७५०
ता हं सुयणु! पहाए रायघरासन्नचच्चरे भद्दे!।
ठाविस्समणेगाइं घयकुंभसयाइँ पंतीए॥ ७५१

१ दीवतर. २ अणविज्ज°. ३ महिलविट्ठएण ४ °सवण. ५ सोयणम्मि ६ दइ. ७ ओ. ८ सुयइ.

घेत्तूण लउडयं तो ताइं फोडिज्ज निद्दया होउं ।
मा मं पोकरमाणं गणेसु कलुणं पि कंदंतं ॥' ७५२
उल्लवइ नम्मया तो – 'नाहं एयारिसी महापावा ।
एत्तियमत्थविणासं काहं जा निययबप्पस्स ॥' ७५३

जिणदेवेण वुत्तं –

'एवं कयम्मि वच्छे ! कोवानलडज्झमाणसव्वंगो ।
मुंचीहि[1] धुवं मिच्छो ता होही सुंदरं सव्वं ॥ ७५४
वित्तं च तं पवित्तं जस्स वओ[2] कुणइ मोयणं तुज्झ ।
तुह लाभाउ न अन्नो गरुययरो मज्झ धणलाभो ॥ ७५५
ता कुणसु मज्झ वयणं मा चिन्तं[3] कुणसु अन्नहा पुत्ति ! ।'
एवं कयसंकेओ जिणदेवो उट्ठिओ तत्तो ॥ ७५६

कयं च दुइयदियहे जहाइट्ठं नम्मयाए । तओ दोहि वि करेहि सो[4] पोट्ट-पिट्टणं[5] कुणमाणो पोकरिउमारद्धो घयसामी जाव हाहारवमुहलो[6] मिलिओ नयर[प. २५ B]लोगो । उग्घोसिओ य अन्नओ[7] सुंकसालिएहिं – 'अहो ! भग्गो भग्गो संजत्तियाणं । अहो ! मूढो राया जो एयं महारक्खसिं दीवाओ न निद्धाडेइ ।' एवंविहे जणुल्लावे निसामिंतो[8] राया चिंतेइ 'न एसग्गहो उवसमइ, किंतु अहिगयरा दोसवुड्ढी भविस्सइ । इओ दीवंतरेसु अप्पसिद्धी । नागमिस्संति पवहणाणि[9] ता जणभणियं निद्धाडणमेवोचियमेयाए ।' एत्थंतरे बहुजणपरिवेढिओ महया सद्देण पोक्कारंतो समागओ रायसमीवं जिणदेवो, भणिउं[10] च पवत्तो – 'देव ! पोयवणियाणमइवच्छलो[11] त्ति पसिद्धीओ[12] वयं कयं-तवयणं भीसणं महोयहिमोगाहिऊणेहागया । एत्थ पुण एस ववहारो, केरिसीए मुहं[13]च्छायाए पडिगच्छामि ? पेगाइं घडसयाइं लाभकए आणियाणि मे एत्थ । पिच्छेउं[14] देवो एसा पुररच्छाए नई वूढा ।

काउं रिणं पभूयं संगहियं घयमिणं मए भूरि ।
लाभेण होउ इन्हि मूलं दावेह नरनाह ! ॥ ७५७
ससिकासकु[सु]मधवलो वियरइ महिमंडले जसो तुम्हा ।
सो पहु ! अवस्स नासइ एयाएँ कहाइ भीमाए ॥ ७५८
आहव[इ ?] जस्स एसा दाविज्जउ तेण मज्झ घयमोल्लं ।
मह विन्नत्ती एसा मा कीरउ निप्फलो[15] सामि ! ॥' ७५९

---

१ मुंचुहि. २ वउ. ३ घेत्तं. ४ सि. ५ °पिट्टणं. ६ °मुहलो. ७ अन्नाओ. ८ °मिंतो. ९ पवाहणाणि. १० भानणिउं. ११ °वणियाणंमयव°. १२ पसिंद्धिओ. १३ मुह°. १४ पिच्छओ. १५ निफला.

पडिभणइ पत्थिवो तो – 'जा पीडा सत्थवाह ! तुह अज्ज ।
त्तो अब्भहियतमा वट्टइ मह माणसे भद्द ! ॥ ७६०
गहगहियाएँ इमाए कुविएहि वि किमिह तीरई काउं ।
एयाए अवराहे को दाविज्जउ धणं तुज्झ ॥ ७६१
आहवई पुण एसा मह चेव किमित्थ अन्नभणिएहिं ।
दिन्ना मए तुहेसा दाउं न तरामि घयमोल्लं ॥ ७६२
जह भंडं चयमाणो मुंचइ सुंकस्स वाणिओ नियमा ।
तह एसा तुह दिन्ना मा कुण अम्हाणमवराहं ॥' ७६३
आह पुणो जिणदेवो – 'गहगहियाए पओयणं किं मे ।
किंतु म सक्का गणिउं बला वि दंता गयमुहम्मि ॥ ७६४
नायं च मए महिवइ ! एएण मिसेण निययदीवाओ ।
धाडेउमिमं इच्छसि छड्डुणमोल्लं[1] तह वि देसु ॥'. ७६५
हसिऊण भणइ राया – 'जइ एवं सत्थवाह ! मह रज्जे[2] ।
उस्सुंकं तुह भंडं एसा वाया मए दिन्ना ॥' ७६६
'जइ एवं तो निययं कोवफलं पायडेमि[3] एयाए ।'
इय भणिउं जिणदेवो दीहररज्जुं करे घेत्तुं ॥ ७६७
बंधइ जणपच्चक्खं पहसंती सा वि तं इमं भणइ ।
'किं एस चूडओ मे परिहिज्जइ राइणा[4] दिन्नो ? ॥' ७६८
तो जिणदेवो जंपइ – 'अज्ज वि फोडिज्ज घयघडे बहुए ।
एरिसआभरणाइं तो परिहिस्सं तुह बहूणि ॥' ७६९
एवं दंसियकोवो घेत्तुं[5] बाहाए दिन्नउक्कोसो ।
जणपच्चयजणणत्थं गओ लहुं नियमावासं ॥ ७७०
थाणुम्मि बं[प. २६ A]धिऊणं – 'भुंजसु दुन्नयफलाइं' घोसंतो ।
नियकिच्चम्मि[6] पवत्तो जणो वि कुड्डत्थिओ सत्थे ॥ ७७१
परितुट्ठो जिणदेवो ताहे तं पडकुडीय छोढूण ।
पक्खालइ पयकमलं अब्भंगउवट्टणं[7] कुणइ ॥ ७७२
मज्जावेइ [य] विहिणा परिहावइ सुंदराइं[8] वत्थाइं ।
अणुणेइ महुरवयणं कारेई भोयणं सुहयं ॥ ७७३
भणइ य एसो[9] – 'जत्ता सहला मह अज्ज सुयणु ! संजाया ।
मन्नामि तुज्झ लाभे तिहुयणरज्जं मए पत्तं ॥' ७७४

---

१ °मोल्लं. २ रज्जो. ३ पायडिमि. ४ रायणा. ५ घेत्तु बहाए. ६ °किच्चमि. ७ °उवट्टणं. ८ सुदराइं. ९ एसा.

चिंतेइ नम्मया वि हु 'जम्मंतरबंधवो इमो नूणं ।
तरया उद्धरिऊणं जेणाहं ठाविया सग्गे ॥' ७७५
एवं पमोयसागरपडियाण परोप्परं दुविन्हं पि ।
सुहसंलावपराणं वोलीणो वासरो इ वि ॥ ७७६
तत्तो जिणदेवेणं खणेण पउणीकओ नियपोओ ।
रयणिमुहि चिय तहियं आरूढो नम्मयासहिओ ॥ ७७७
'पच्छायावी कयाइ भुओ वि कहं पि मा हु तु(मु?)चेज्जा ।'
इय संकाए सहसा मुक्को पोओ महावेगो ॥ ७७८
कम्मम्मि समणुकूले सवं जीवस्स होइ अणुकूलं ।
तत्तो य तक्खणेणं अणुकूलो मारुओ लग्गो ॥ ७७९
उवसंतसयलविग्घो जिणदेवो वासरेहिं थेवेहिं ।
संपत्तो भरुयच्छे बंधवजणकयमहाणंदो ॥ ७८०

[नम्मयासुंदरीए सयणाण सह मिलणं]

पट्ठाविओ य तुरियं लेहो नम्मयपुरम्मि सयणाणं ।
लाभेण नम्मयासुंदरीवि(ए?) वद्धावणनिमित्तं ॥ ७८१
परिओसनिब्भरा ओलंघि(?) उ(तु?)रंगेहि पवणजवणेहिं ।
सहदेव-वीरदासा सबंधवा तत्थ संपत्ता ॥ ७८२
सम्माणिया य सवे जिणदेवेणावि हट्ठतुट्ठेण ।
मिलिया य नम्मयाए तुट्ठा उक्कंठियमणाए ॥ ७८३
काउं कंठग्गहणं परोप्परं रोवियं च तह करुणं ।
उग्गिलियमणोदुक्खा जिणदेवेणावि ते भणिया ॥ ७८४
'कज्जे समइक्कंते रुन्ने को इत्थ किर गुणो होइ ।
अज्जं खु नम्मयासंगमम्मि नणु होइ साणंदा ॥' ७८५
कयवयणधोवणाइं सवेसि सुहासणेसु वइठाणं ।
जिणदेवो वुत्तंतं जहदिट्ठसुयं कहइ तेसिं ॥ ७८६
जह हरिया दासीहिं सुचिरं सेहाविया य हरिणीए ।
जह सामित्तं पत्ता तासिं कउडग्गहो य कओ ॥ ७८७

---

१ जस. २ जिण°. ३ रेयणिमुहि. ४ आरूढो. ५ कम्ममि. ६ समण°. ७ मारूओ. ८ रुहो. ९ इय°. १० मिलिया. ११ करणं. १२ °संगमि. १३ वइट्ठाणं. १४ वोत्तंतं.

दुक्खेण परिन्नाया दुक्खं मोयाविया य मेच्छाओ ।
जिणदेवेण सवित्थरमक्खायं जा गिहागमणं ॥ ७८८
तो नम्मयाइ दुक्खं सवेसु वि बंधवेसु संकंतं ।
ऊससियरोमकूवा सवे पलवंति तो एवं ॥ ७८९
'भो' सोमालसरीरे ! कह एयं विसहियं तुमे दुक्खं ।
कन्नविवरे पइट्ठं अम्हे सोढुं न हि तरामो ॥ ७९०
सुहलालिया वि सुहपालिया वि सयणा[प. २६ B]ण सुट्ठु इट्ठा वि ।
हा ! कह कम्मवसेणं वसणसमुद्दम्मि बुड्डा सि ॥ ७९१
किं नाम सा हयासा हरिणी तुहं पुववेरिणी आसि ।
इयनिंदियहिययाए जीए सेहाविया वं सि ॥ ७९२
एरिसनिग्घिणहियया दीसइ नारी न काइ जियलोए ।
सा उ अणज्जा पावा संजाया एरिसी कह णु ॥ ७९३
कह बालिसभावाए सहिया तह तारिसी तए पीडा ।
कह नियजणरहियाए पाणा संधारिया तुमए ॥ ७९४
कह बालिसभावाए तुमए संपाविया इमा बुद्धी ।
अगणियतणुदुक्खाए कवडगहो[3] जं कओ तुमए ॥ ७९५
धन्ना सि तुमं वच्छे ! अम्ह वि पुत्ताइं[4] अत्थि पुन्नाइं[5] ।
जमखंडियवयनियमा मिलिया अम्हाण जीवंती ॥' ७९६
इय सोऊणं बहुहा बहुसो उववूहिऊण गुणनिवहं ।
तं ठविया रुयमाणी सा बाला अंचताएहिं ॥ ७९७
अह जिणदेवो भणिओ – 'सज्जण ! जिणदेव ! साहु साहु कयं ।
अवहत्थिऊण वचियविचं जं मोइया एसा ॥ ७९८
सुयणाण तुमं सुयणो उत्तमपुरिसाण उत्तमो तं सि ।
धम्मीण धम्मिओ वं साहम्मियवच्छलो वं सि ॥ ७९९
तुह सुंदर ! सवगुणा एगेण मुहेण वन्निमो कह णु ? ।
जलहिम्मिं व रयणाणं जेसि न पाविज्जई अंतो ॥ ८००
साहम्मियधुरधवलो वं खलु सवस्स पूयणिज्जो सि ।
इय गिण्हसु एयाओ बत्तीस हिरन्नकोडीओ ॥' ८०१
इय भणिरो सहदेवो पडिओ चलणेसु बंधुणा सद्धिं ।
जिणदेवो वि पयंपइ – 'मा बंधव ! एवमाइससु ॥ ८०२

१ ज़ो. २ बालिस°. ३ °राहो. ४ पुत्ताइं. ५ पुत्ताइं. ६ जलहम्मि. ७ °माइसुसु.

तुह नंदिणि[1] त्ति भणिउं न मए मोयाविया इमा किंतु।
साहम्मिणि त्ति काउं जिणसासणपक्खवाएण॥ ८०३
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं वन्नियं जिणमयम्मि।
जेणं पढिज्जइ धणवइ! जिणागमे एरिसा गाहा॥ ८०४
साहम्मियवच्छल्लम्मि उज्जुया उज्जया य सज्झाए।
चरणकरणम्मि य तहा तित्थस्स पभावणाए य॥ ८०५
जिणसासणस्स सारो जीवदया निग्गहो कसायाणं।
साहम्मियवच्छलया तह भत्ती जिणवरिंदाणं॥ ८०६
एगत्थ सव्वधम्मो साहम्मियवच्छलत्तमेगत्थ।
बुद्धितुलाएँ ठवियाइँ दो वि तुल्लाइँ भणियाइं॥ ८०७
जो मंदमई पुरिसो न कुणइ साहम्मियाण वच्छल्लं।
जिणसासणस्स तत्तं न मुणइ सो छेयमाणी वि॥ ८०८
एवं च महापुन्नं समज्जियं मोयणेण एयाए।
तुम्ह धणं गेण्हंतो हारेमि न संपयं इत्थ॥ ८०९
दीणारेणेक्केणं दो पडियारा न चेव लब्भंति।
एवं न होंति दोन्नि वि धणवइ! अत्थो य धम्मो य॥' ८१०
आह तओ सहदेवो – 'जइ तुमए मोइया [प. २७ A] निययधूया।
भण तत्थ किमम्हाणं तुज्झ नियं चेव तं कज्जं॥ ८११
अम्हेहिं किं न कज्जा उत्तमसाहम्मियस्स तुह पूया।
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं मन्नमाणेहिं॥ ८१२
मोयंतेण सधूयं निरीहचित्तेण अज्जियं पुन्नं।
इण्हिं पि तं निरीहो ता कह नासइ तयं तुज्झ?॥' ८१३
एवं चउप्पयारं विचित्तउत्तीहिं बोहिओ संतो।
अग्गाढिय(?)दक्खिन्नो जिणदेवो गाहिओ वित्तं॥ ८१४
संपूइया य दोन्नि वि जिणदेवेणावि ते सपरिवारा।
जाओ परमाणंदो एवं सव्वेसि सयणाणं॥ ८१५
ठाऊण केइ दियहे परिवड्ढियगुरुपणेहसंताणे।
आपुच्छिय जिणदेवं सहदेवो पत्थिओ नयरं॥ ८१६
विन्नवइ नम्मया तो जिणदेवं निवडिऊण चलणेसु।
'देज्जउ मम आएसो चेट्ठामि जयामि वा ताय!॥' ८१७

1 निद्दणि. 2 जिम. 3 °ठवाए. 4 मुणइ. 5 हारेमि. 6 अज्जियं. 7 °देवे.

सो वि तयं पडिजंपइ – 'वत्थालंकारभूसियं काउं।
पुत्ति! पयट्टसु मग्गे होज्ज विणीया गुरुजणस्स॥' ८१८
घेत्तूण नम्मयं तो सहदेवो पडिगओ सनयरम्मि।
नम्मयजम्मदिणम्मि व वद्धावणयं तओ विहियं॥ ८१९
नाणाविहकोसल्लियहत्था पत्ता समत्तपुरपुरिसा।
आसीवायपवत्ता अक्खयहत्था य नारिगणा॥ ८२०
पणमंति नम्मयाए पाए केई वियासिमुहकमला।
कुणइ पणामं केसिंचि नम्मया नमणजोग्गाणं[1]॥ ८२१
जो जत्तियस्स जोग्गो सम्माणं[2] तस्स तत्तियं कुणइ।
सहस त्ति वीरदासो मणपरिओसं वियड्ढंतो॥ ८२२
अट्ठाहिया य महिमा पवत्तिया जिणहरेसु सव्वेसु।
पडिलाभिया य मुणिणो फासुयएसणिज्जअसणपाणाईहिं॥ ८२३
कासी य नम्मया वि हु जिणच्चणं पइदिणं[3] तिसंझं[4] पि।
आवस्सगकरणेज्जं करेइ समणीण सन्निहिया॥ ८२४
सरियअणुहूयदुक्खा अणुसमयं वड्ढमाणसंवेगा।
संजमगहणेकमणा[5] चेट्ठइ गुरुसंगमा एसा॥ ८२५

[सुहत्थिसूरिणो नम्मयपुरे ओसरणं]

अह अन्नया कयाई चउदसपुव्विस्स[6] थूलिभद्दस्स।
सीसो दसपुव्वधरो तवतविओ उज्जयविहारी॥ ८२६
संपइरायस्स[7] गुरू गामागरनगरपट्टणपसिद्धो।
विहरंतो ओसरिओ सुहत्थिसूरी तहिं नयरे॥ ८२७

जो सोमो वि णिक्कलंको, सूरो वि तवे अमंदो[8], समुद्दो वि खाररहिओ, मंदरागो वि जडत्तवज्जिओ। तहा सूरो इव पयावी, चंदो इव सोमदंसणो, सागरो इव गंभीरयाए, मंदरो इव धीरयाए, पईवो[9] इव अन्नाणतिमिरमोहियाणं, कप्पपायवो[10] धम्मोवएसफलदाणे, सारमोसहं मोहमहारोगस्स, घणाघणो कोवदावानलस्स, कुलिसपाओ माणमहीधरस्स, पक्खिराओ मायाभुयंगीए, पवणो लोहमेह[प २७ B]पडलस्स। तहा संजओ वि जणंधणो, सुगुत्तो वि सयलजणपयडो, समिंइ[11]पहाणो [चि] अवहं[12]त्थियपहरणो चि। जविय –
धम्माधम्मविहन्नू बंधवभूओ जियाणं[13] सव्वेसिं।
परहियकरणेक्करसो जुगप्पहाणो विमलनाणो॥ ८२८

१ °जोग्गाण. २ सम्माण ३ पयदिण. ४ तिसज्झ ५ °महणे°. ६ °पुव्विसा. ७ °राया-स्स. ८ अमदो. ९ °पाइवो. १० साया°. ११ समीइ°. १२ अवह°. १३ जियाण.

सोउं तस्सागमणं सकोउहल्लो[1] खणेण संचल्लो।
सयलो नरनारिगणो वंदणहेउं मुणिवरस्स ॥ ८२९
सिट्ठी वि उसभदत्तो पमोयसमुल्लसियबहलरोमंचो।
सयणसुहिपुत्तजुत्तो सविड्डीए[2] समुच्छलिओ ॥ ८३०
चलिया य नम्मयासुंदरी वि जणणीपुरस्सरा तुरियं।
उच्छलियमहामोया रविउग्गमणे कमलिणि व ॥ ८३१
तिपयाहिणिं[3] करित्ता पंचंगपणामपुव्वयं सव्वे।
संसंति समणसीहं कयकरयलसंपुडा[4] एवं ॥ ८३२
'जय मुणिमहुयरसेविज्जमाणलक्खणसणाहपयपउम !।
दंसणमेत्तपणासियनयजणनीसेसपावमल ! ॥ ८३३
संघसरोवरवररायहंस ! मिच्छत्तकोसियदिणेस !।
दुक्खत्तसत्तबंधव ! धवलजसापूरियदियंत ! ॥ ८३४
बहुकालाओ अज्जं अंकुरिओ पुन्नपायवो अम्ह।
जं दिट्ठो सि महायस ! अइदुलहदंसणो नाह ! ॥' ८३५
एवं गुरुं थुणंता वंदित्ता सेसमुणिवरे विहिणा।
उवविट्ठो गुरुमूले वंदारुजणो जहाठाणं ॥ ८३६
उवविट्ठाण य गुरुणा नवजलहरगहिरमहुरघोसेण।
पारद्धा धम्मकहा नयरसनिस्संदसुंदेरा ॥ ८३७
'भो भो ! सुणेह सम्मं चउगइसंसारसायरे वुड्डा।
विसहंति जेण जीवा तिक्खाइं दुक्खलक्खाइं ॥ ८३८
जह जच्चंधो पुरिसो पवंचिओ निद्दएहिं धुत्तेहिं।
पडइ गहिरंधकूवे कंटयमज्झम्मि जलणे वा ॥ ८३९
एवं अन्नाणंधा जीवा धुत्तेहिं[6] रागदोसेहिं।
कयसंमोहा बहुसो नारयतिरिएसु हिंडंति ॥ ८४०
पाणवहासच्चगिराचोरिक्कारंभपरिग्गहासत्ता।
अज्जियबहुपावमला पडंति नरयावडे केवि ॥ ८४१
निस्सीमारंभपरिग्गहेसु गिद्धा असंति गिद्ध व।
मंसवससोणियाइं के वि नरा जंति तो नरए ॥ ८४२
तत्थ य छिंदणभिंदणउक्कत्तणफालणाइ वि सहंति[9]।
पचंति कुंभियाए वेयरणिजलम्मि छुब्भंति ॥ ८४३

१ सुकोउ°. २ सुविड्डीए. ३ °हिणो. ४ °संपुडा. ५ दुक्खत्त. ६ धुत्तह- ७ भजिय°. ८ °पावकमला. ९ हसंति.

घोराइं दुक्खाइं नरएसु सहंति पाणिणो जाइं।
कोडिसमाऊ वि नरो को वच्चेउं[1] तरइं[2] ताइं ॥ ८४४
मायाए मुद्धजणं कूडतुलाकूडमाणभंडेहिं।
वंचित्तु जंति केइ वि तिरियगइं[3] कम्मपरतंता ॥ ८४५
बहुकूडकवडनडिया लंचुं[4]कोडाइगहणतल्लिच्छा।
गयकरहतुरंगाइसु वाहणतिरिएसु गच्छंति ॥ ८४६
जलयरथलयरखयरा मंसासी जीवघायगा कूरा।
ऊढूण वि तिरियत्तं हुंति पुणो नारया दीणा ॥ ८४७
पत्तेयमणुयभावे जे धम्मं नायरंति [प. २८ A] जिणभणियं।
नारयतिरिएसु चिरं ते वि पयट्टंति बहुमोहा ॥ ८४८
जिणवयणोसहजोगा अन्नाणंधत्तमूसरइ जेसिं।
वामोहिज्जंति न ते रागद्दोसेहिं[5] धुत्तेहिं ॥ ८४९
सम्मत्तनाणचरणाभरणेहिं अलंकिया कयपमोया।
पावंति उत्तमसुहं देवत्तं पुण वि मणुयत्तं ॥ ८५०
ता जाव म संपज्जइ सुदुल्लहो खाइओ चरणजोगो।
तम्मि पुणो संपत्ते नियमा पावंति निव्वाणं ॥ ८५१
तत्थ उदाहरण न गंधो(?) उत्तमाइयं सुहं सयाकालं।
अणुहुंति[6] सव्वजीवा अपुणंभवभावमावन्ना[7] ॥ ८५२
एवं नाऊण जणा! रागद्दोसाण निग्गहसमत्थं।
पडिगिण्हह[8] जिणवयणं जेणाणुत्तरसुहं[9] लहहा ॥' ८५३

एवं च सूरिमुहमयंकुनज्झरियं देसणामयं कन्नंजलीहिं मायामाया-(आयामा?)वियमाणाणं खणेणावगयं मिच्छत्तविसं। संजाओ केसिं चरणधरणपरिणामो, समासादियं[10] केहिं पि बोहिवीयं ति। एत्थंतरे लद्धावसरेण पुच्छियं वीरदासेण–'भयवं! एसा अम्ह धूया भावियजिणवयणा[11] सरयससहरकिरणपुंजसमुज्जलसीला किमे[रि]सावयाण भायणं संवुत्ता?' ताहे भगवया विहियसुयनाणोवओगेण सम्ममवधारिऊण वज्जरियं–'धम्मसीले[12]! संसारे जीवाणं दोन्नि भंडागाराणि संति–पुन्नागारं पावागारं च। जया[13] च जीवस्स ठिईखएण पुन्नागाराउ पुन्नमुदयं[14] लहइ तया जीवो सुही होइ, जया य पावागाराउ पावमुदयमेइ तया जीवो दुही होइ। जया य दो वि उदिज्जंति तया जीवो मिस्साइं सुहदुक्खाइं

1 वच्चेउ. 2 तरइ. 3 °गई. 4 लंचु° 5 °दोसेहिं. 6 अणुहुति. 7 अपुणु°. 8 °गिण्हइ. 9 °णुत्तर°. 10 °सासिय. 11 °वयण. 12 °सीला. 13 जाया. 14 °मुदउय.

वेएइं[1] । जं च उक्कडं तस्स ववएसो होइ । ता एयाए तुह धूयाए सुकुलजम्मो जिणवरधम्मो रूवलायन्नजुत्तया भोगोवभोगसंपया – एयमणग्घं[2] पुवो(न्नो)दय-माहप्पं । जं पुणो भत्तुणो विरागो, सुन्नदीवे चागो, वेसाहि हरणं, तहाविह-दारुणजायणाकरणं – एयं महाबलं पावोदयपायवफलं ति ।' पुणो पणमिऊण[3] वीरदासेण पुच्छियं – 'भयवं ! कहं पुण दुग्गमेयमेयाए उवज्जियं[4] ? ति नाउ-मिच्छामि, तो विसेसेणाणुग्गहं काऊण कहिउमरिहंति मे भगवंतो त्ति ।' तओ भयवं तस्स अन्नेसिं च लोयाणमणुग्गहनिमित्तं साहेउमारद्धो । अवि य –

[नम्मयासुंदरीए पुव्वभववण्णणा]

अत्थि कलिंजय(र)विसए गामो सिरिमेलउ त्ति नामेण ।
तत्थ सिरिपालनामो एगो कुलपुत्तओ होत्था ॥ ८५४

तस्स य सुरूवकलिया सिरिप्पभा भारिया सिणेहवइ ।
गरुयाणुरायकलिया ताणं कालो सुहं जाइ ॥ ८५५

अन्नदिणे सिरिपालो समाणमित्तेहिं एवमुल्लविओ ।
'गंतूण अमुगगामं लूडेमो अज्जरयणीए ॥ ८५६

जो कोइ तत्थ ला[प २८B]भो तस्सद्धं[5] तुज्झ सेसमम्हाणं ।
दिज्जाहि जहाजोगं विभजिस्सामो य तो अम्हे ॥ ८५७

किं तस्स जीविएणं नरस्स रंड व्व विगयनवसाओ ।
जो चारणेहिं निच्चं न हु गिज्जइ दंतिदंतीहिं(?) ॥' ८५८

सोऊण समुल्लावं सिरिप्पभाए पिओ निओ भणिओ ।
'मा नाह ! कुणसु वयणं एएसिं पावमेत्ताणं ॥ ८५९

धणधन्नसमिद्धप(घ)रं मोत्तूण कुणंति रोरियमणोगे ।
धणसामिपहारहया चुक्कंति सगे(गे?)हभोगाणं ॥ ८६०

पेच्छई[6] छीरं[7] वरओ मंजारो[8] न उण लउडयपहारं ।
पेच्छंति परेसि धणं नियय मरणं[9] न पेच्छंति ॥ ८६१

जे हुंति नरा दुत्था धरिउं न तरंति अन्नहा जीयं ।
ते खलु चोरियजूयं रमंति हरिउं च मरिउं वा ॥ ८६२

तं पुण धन्नसउन्नो विलससु नियसंपइं[10] मया सुइओ ।
सट्ठाणट्ठेणं[12] सयं[11] अलाहि चोरेक्क[13]करणेण ॥' ८६३

1 वेयइ. 2 एयमणग्घ. 3 पुण°. 4 दयज्जिय. 5 सहमध. 6 पच्छइ. 7 एछीर. 8 मयारो. 9 नियय मरण. 10 °संपई. 11 सट्ठाणेट्ठेण. 12 सय. 13 चोरक्क°.

लोहमहागहगहिओ सिरिपालो संठवेइ नियदइयं।
'नाहं करेमि एयं दइए! तं चेट्ठ सुविसत्था॥' ८६४
अकहित्ता घरणीए रयणीए निग्गओ सगेहाओ।
सहस त्ति ताण धाडी पडिया हियइच्छिए गामे॥ ८६५
सन्नद्धा गामभडा पयट्टमाओहणं महाघोरं।
भग्गा य तहा धाए अणुलग्गा पिट्ठओ कुढिया॥ ८६६
दट्ठूणं[1] हम्ममाणे नियजोहे कोवजलणपज्जलिओ।
चलिओ तेसिं समुहो सिरिपालो साहससहाओ॥ ८६७
सो एगोऽणेगेहिं समंतओ बाणघायजज्जरिओ।
पडिओ मेइणिवीढे संपत्तो दीहरं निद्दं॥ ८६८
आयन्निऊण एयं सिरिप्पहा मुच्छिया गया धरणिं।
फहफह त्ति लद्धसन्ना कासि पलावे बहुपयारे॥ ८६९
तत्तो वि सुचपु(तु?)न्ना अड्डवियड्डा वणंतरे भमिरी।
कालिंजर[2]गिरिमूले संपत्ता आसमं एगं॥ ८७०
दिट्ठा य तावसीहिं दयापहाणाहिं महुरवयणेहिं।
बोलाविऊण भणिया— 'भद्दे! किं इत्थ रुवेण॥ ८७१
जइ रुयसि जइ वि विलवसि तिलं तिलं जइ वि कप्पसे अप्पं।
तह वि न वलंति पुरिसा विहिणा उद्दालिया जे उ॥' ८७२
तो सा जंपइ— 'भयवइ! न कयाइ वि मग्ग(ज्ज) खंडिया आणा।
ता कीस सो पउत्थो मए तहा वारिओ संतो?॥' ८७३

तावसीए भन्नइ—

'जइ वि न ग(इ?)च्छइ मंतुं वारिज्जइ जइ वि निद्धबंधूहिं।
तह वि हु वच्चइ पुरिसो पगड्ढिओ कालपासेहिं॥ ८७४
किं तस्स सोइयव्वं धम्मिणि! चिंतेहि अप्पणो धम्मं।
जम्मंतरे वि जत्तो दुक्खाण न भायणं होसि॥ ८७५
एसो च्चिय वणवासो मूलं सव्वेसि होइ सुक्खाणं।
पियविप्पओगदुक्खं सुविणे वि न दीसए एत्थ॥ ८७६
न सुणंति फरुस[3]वयणं आणं न सुणंति कस्सइ कयाइ[4]।
न सुणंति कलहवयणं वणवासी सव्वहा [पृ. २१ A] धन्ना॥ ८७७

१-दट्ठूण. २ कालिंजर. ३ फरस°. ४ कयाई.

इयं पालिज्जइ वंभं दुहियाण जियाण कीरइ परित्ता ।
तप्पिज्जइ निच्चग्गी नवनवसमिहाहिँ पइँदियहं ॥ ८७८

कायव्वा गुरुभत्ती गुरुआणापालणम्मि जइयव्वा(वं?) ।
इच्चाइ अम्ह धम्मो सुहकरणेज्जो सुहफलो य ॥' ८७९

एमाइ भणंतीहिँ सिरिप्पभा बोहिया तहा ताहिँ ।
जह तासि चिय मूले सयराहं तावसी जाया ॥ ८८०

तो पयणुरागदोसा परिसुद्धायारपालणुज्जुत्ता ।
विहिणा कयसन्नासा उववन्ना वंतरनिकाए ॥ ८८१

सअणाडियपरिवारे नम्मयनइरक्खणम्मि अभिउत्ता ।
परिहिंडइ सच्छंदा कीलंती नम्मयतडेसु ॥ ८८२

कारंडहंससारसरहंगपमुहेहि बहुविहंगेहिँ ।
चिंतइ य जलं रेवं निज्झायंती सुहं लहइ ॥ ८८३

उच्छलिय विलिज्जंते पिच्छंती नम्मयाइ कल्लोले ।
चिट्ठइ पलोयमाणी अतित्तचित्ता चिरं तं पि ॥ ८८४

कत्थइ हत्थिकुलाइं वणमहिसिकुलाइँ नम्मयजलम्मि ।
उव्वुड्डनिव्वुडणंचावडाइँ तूसइ पलोयंती ॥ ८८५

आरुहइ विंझसेले पेच्छइ विंझाडविं विसेसेण ।
रुरुरुज्झगवयँय्यरकुलेहिँ परिमंडिउद्देसं ॥ ८८६

सद्दूलसरहचित्तयसीहाइजिएहिँ भीमरूवेहिँ ।
घेप्पंतपलायंतेहिँ संकुलं तं महारन्नं ॥ ८८७

इच्छाएँ रमइ विसे(सएँ) नच्चंतसिहंडिमंडलीरम्मे ।
निज्झायइ संझगिरिं कीलइ तत्थेव गंतूण ॥ ८८८

सुचिरं परिब्भमंती केलिकि(पि)या सा कयाइ दच्छीय ।
विंझगिरिस्स नियंबे झाणत्थं मुणिवरं एगं ॥ ८८९

नासानिरुद्धदिट्ठिं संवरियासेसइंदियपयारं ।
मेरुमिव निप्पकंपं एगग्गमणं महासमणं ॥ ८९०

जाईए पचएणं कीलारसिया तओ तयं दट्ठुं ।
सा परिचिंतइ 'एयं चालेमि कहंचि' झाणाओ ॥' ८९१

१ इया. - २ पयदि°. ३ रसभगा°. ४ अप्पट्टनिप्पुट्टण°. ५ °गयवय°. ६ इट्ठाए.
७ वघंत°. ८ सचरिया°. ९ कहिंचि.

परिचिंतिऊण सहसा मुंचइ अट्टट्टहासमइभीमं ।
गुहंकुहरुट्ठियपडिरवसंराविचसयलजीवं [च ?] ॥ ८९२
दट्ठूण तं अभीयं ताहे दंसेइ घोरसद्दूले ।
गुंजारवभरियनहे विगरालमुहे समुद्दमिंते ॥ ८९३
सुनिरुद्धदिट्ठिपसए(र)स्स तस्स तव(न व)ते भयंकओ जाया ।
ताहे उक्खिविऊणं मुंचइ तं जलहिमज्झम्मि ॥ ८९४
तुच्छम्मि जलहिनीरे सव्वत्तो परिमिलंतगुरुवेले ।
तत्थ वि य अवीहंतं नेई [पुण] पुव्वठाणम्मि ॥ ८९५
तत्थ य दंसेइ पुणो पुलिंदवंदाई भीमरूवाइं ।
'छेदह भिंदह [मारह]' भणमाणाइं अणेगाइं ॥ ८९६
[एस] भएण [ण] जिप्पइ कलिऊण करेइ चित्तहरणत्थं ।
उब्भडवेसविलासिणिरूवं चाइणि कुणमाणं ॥ ८९७
तेणावि अकयरोहं पसंतहिययं महामुणिं नाउं ।
उव[प. २९ B]संतमणा देवी सपच्छयावा विचिंतेइ ॥ ८९८
'एसो कोइ महप्पा तीरइ न हु चालिउं गुमाणाओ ।
किं वडु(इ)इ सिहरिनाहो पहओ वि पयंडपवणेहिं ॥ ८९९
तो दुट्ठु मए विहियं किलेसिओ एस जं महासत्तो ।
नीसेससत्तसुहओ वट्टंतो सुद्धझाणम्मि ॥ ९००
कोउगमित्तेण मए इमस्स झाणंतरायमारद्धं ।
कीलस्स कए नूणं पवीलियं तुंगदेवउलं ॥ ९०१
उत्तमसत्तो धीरो चलिओ न वि एस सुद्धझाणाओ ।
पत्तं च मए पावं पावेकमणाइ पावाए ॥' ९०२
एवं पच्छायावं उव्वहमाणी मुणिस्स चलणाणं ।
पुरओ कयप्पणामा खामेइ मुणिं सुपरिणामा ॥ ९०३
'भयवं ! खमाहि मज्झं अवराहमिमं महामहंतं पि ।
पक्खित्तं नियसीसं मया तुहंके महाभायें ! ॥ ९०४
धिद्धी मह देव[चि] माहप्पमुवेक्खिऊण तुह जीए ।
खलियारणा खलाए कया पयट्टस्स सिवमग्गे ॥ ९०५

१ गिह°. २ सुमुनि°. ३ °वेलो. ४ नेइ. ५ °वंडाइ. ६ चाडणि. ७ सपच्छाया. ८ दुट्ठ. ९ °झाणम्मि. १० तुंग°. ११ उत्तम°. १२ खमाणि. १३ °भाया. १४ माहप्पमउरिक°.

डज्झइ मणो महायस ! दुचरियमहानलेण एएणं ।
विज्झवसु तं सुसंजय ! मं भीमसु(सीचसु ?) वारिधाराए ॥ ९०६
अन्नाणमोहियाए वालिसभावाइ खमसु मे दोसं ।
बालकओ अवराहो कोवं न जणेइ जणयाणं ॥ ९०७
खम खमसु महरिसि ! तुमं खमिउं जाणासि तं चिय न अन्नो ।
नहि[2] चंदमंडलाओ पडंति अंगारधाराओ ॥' ९०८
एवमणेगपयारं खामिंति पासिऊण मुणिवसभो[3] ।
उवसंतो उवसग्गो त्ति पारए झाणमइपुव्वं ॥ ९०९
पभणइ–'सुसाविगे[4] ! मा वीहसु साहूण होइ न हु कोवो ।
सहयारपायवाओ न निंबगुलियाण उप्पत्ती ॥ ९१०
किं च निसामेहि फुडं उवएसं वज्जरेमि जिणभणियं ।
जिणसाहुचेइयाइं आसायंतो जणो मूढो ॥ ९११
अज्जेइ महामोहं अणंतसंसारकारणं घोरं ।
जेण न पावइ अन्नं नारइतिरियाइदुरियाणं ॥ ९१२
हासऽज्जियं पि कम्मं वेयइ दुक्खेण कह वि रोयंतो ।
अन्नजणस्स वि विसए विसेसओ जिणमयवएसु ॥ ९१३
एकसि कए वि दोसे अणुहवइ जिओ असंखदुक्खाइं ।
जिणसाहुचेइयाणं पडणीओ होज्ज मा कोइ ॥ ९१४
जइ वि तुह नासि रो(दो ?)सो तहा वि तुमए उवज्जियं पावं[5] ।
इय [पच्छ]यावंपराएँ नवरं उवसामियं बहुयं ॥ ९१५
तो होज्ज इओ सुंदरि ! जिणमुणिभत्ता विसुद्धसम्मत्ता ।
झोसेसि[7] जेण सव्वं पावं एयं पि अन्नं पि ॥' ९१६
उप्पाइयसम्मत्तो सो साहू नम्मयाइ देवीए ।
काऊण धम्मलाभं चलिओ नियवंछियविहारं ॥ ९१७
देवी संवेगपरा भवभमणभएण भावियसुभावा ।
सव्वं मुणिवरभणियं आयरइ जहट्ठियं तुट्ठा ॥ ९१८
पंथपरिब्भट्ठाणं मग्गं दंसेइ समणसमणीणं ।
तक्करवग्घाइभया सा रक्खइ निच्च सन्निहिया ॥ ९१९
तण्हाछुहा[प. ३० A]भिभूयं संघं दट्ठूण अडविमज्झम्मि ।
निम्मेइ गोउलाइं विउलाइं भत्तपाणड्ढा ॥ ९२०

१ [illegible] २ महि. ३ °वसभा. ४ सुसावगे. ५ फयं. ६ °याउप°. ७ ज्हासेसि.

चेइयन(ज)इपडणीयं उवसामइ देवसत्तियो सव्वं।
कुणइ जिणचेइएसुं तिकालं पूयमणुदियहं॥ ९२१
वेयावच्चं निच्चं वच्छल्लं तह समाणधम्माणं।
कुव्वंतीए सावग! पुन्नं समुवज्जियं तीए॥ ९२२
साहूवसग्गपभवं रवियं पावं पि ताव अइबहुयं।
किंचि पुण सावसेसं न निट्ठियं चिक्कणत्तेण॥ ९२३
एत्थंतरम्मि आउक्खएण सा देवया चुया तत्तो।
उववन्ना कुच्छीए एसा सहदेवघरणीए॥ ९२४
जं नम्मयानइं पइ पडिबंधो आसि तम्मि कालम्मि।
तेणं चिय जणणीए जाया तम्मज्जणे सद्धा॥ ९२५
एवं दुन्नि वि सावग! कयाइँ एयाए पुन्नपावाइं[1]।
अइबलवंतं पुन्नं पावं पुण तारिसं नासि॥ ९२६
जेऊण आवयाओ मिलिया तुम्हाण पुन्नमाहप्पा।
बलिएण दुब्बलो जं जिप्पइ तं किमिह चोज्जं [व ?]॥ ९२७
पावं ति(वि) पुव्वभवियं इमीएँ जायं निकाइयत्तेण।
जं वावियं सुपत्ते मज्ज(हा ?)फलं होइ दाणि च॥' ९२८

[नम्मयासुंदरीए दिक्खागहणं]

एवं च निसामिंती सहस च्चिय नम्मया गया मोहं।
जाया य समासत्था[2] [चे]लंचलपवणसंगेण॥ ९२९
भाणी य पणमिऊणं–'भयवं! तुब्भेहिँ सुट्ठु उवलद्धो।
निम्मलनाणच्छीए जहट्ठिओ मज्झ वुत्तंतो॥ ९३०
केवलिजिणाण विरहे जुगप्पहाणेहिँ दाणि तुब्भेहिं।
धा(धी ?)रिज्जइ तत्थमणं संसयवोच्छेयदच्छेहिं॥' ९३१

गुरुणा भन्नइ–

'सुन्नम्मि तम्मि व(र ?)न्ने सुंदरि! हिययम्मि आसि जे धरिया।
तेसिं मणोरहाणं पत्थावो सुंदरो एसो॥' ९३२
वियसंतवयणकमला वंदित्ता वयइ नम्मया–'भयवं!।
जइ आणवेह तुब्भे वसइ [इ]मं माणसे मज्झं॥ ९३३

---

1 °पावाए. 2 पमासत्था.

सुगुरुं[1] मग्गंतीए[2] पत्तं तुह दंसणं मए सामि[3] !।
अब्भुट्ठियाएँ वयभारधरणबुद्धिं धरंतीए ॥ ९३४
आपुच्छिऊण जणए करेमि ता तुम्ह तुरियमाण त्ति ।'
भणइ गुरू वि–'अविग्घं मा पडिबंधं करेज्जासि[4] ॥' ९३५
चलइ गिहं पत्ता सव्वं चिय गुरुजणं विणयसारं ।
'दिट्ठो नाणाइसओ सुहत्थिसूरिस्स तुब्भेहिं ॥ ९३६
जं किंचि मज्झ अंगे मणवयकाएहिँ जेहिँ[5] जं रइयं ।
तं सव्वं चिय नज्जइ समक्खमेयस्स संजायं ॥ ९३७
अणुहूयबहुदुहाए सुमरियनियपुव्वजम्मकम्माएँ ।
ता एयपायमूले जुत्तं मे समणगुणधरणं ॥' ९३८
पडिभणइ गुरुजणो तं–'पुत्ति ! तुमं सुट्ठु वल्लहा अम्ह ।
किं तु तुह तम्मि वसणे अम्ह सिणेहेण किं सिद्धं ? ॥ ९३९
सोऊण दुस्सहाइं[6] तुमए सोढाइँ दुक्खलक्खाइं ।
मत्तं(सव्वं ?) अम्हाणं पि हु पइ(च)इओ हंदि सव्वेसिं ॥ ९४०
किं तु वयं गुरुकम्मा लतस(न तरा)मो दुद्धरं वयं धरिउं ।
धन्ना य तुमं इक्का अंगीकाउं [प. ३० B] इमं महसि ॥ ९४१
पव्वा[विज्ज]हि वच्छे ! अम्हं पि य बोहणं करेज्जासि ।
भावियजिणवयणाणं वयगहणनिवारणमजुत्तं ॥' ९४२
इय पमुइयहियएहिं दिक्खामहिमा गुरूहिँ पारद्धा ।
घोसाविया य अमरी कया य अट्ठाहिया महिमा ॥ ९४३
पडिलाभिया य विहिणा समणा समणी य फासुदव्वेहिं[9] ।
सम्भाणिओ य सम्मं समाणधम्माण समुदाओ ॥ ९४४
दिन्नमयारियसत्तं मग्गणयगणस्स वड्ढिओ तोसो[10] ।
विहिया य विसेसेणं पूया नियसयणवग्गस्स ॥ ९४५
सोहणदिणम्मि तत्तो न्हायालंकारवीरियंगवयवा[11] ।
चलिया सिवियारूढा थुव्वंती[12] मह(मागह)गणेण ॥ ९४६
वज्जंतगहिरतूराँ मंगलगीयाइँ दिसि दिसि सुणंती ।
पत्ता वसहिसमीवं उत्तिन्ना [त]ओ [य?] सिवियाओ ॥ ९४७
होऊण रायचा[इ ?] काउं तिपयाहिणं[14] मुणिवइस्स[15] ।
पभणंति कयंजलिणा जणणीजणया मुणिगइंदं ॥ ९४८

1 सुगुरे. 2 मग्गंतीए. 3 °ज्जामि. 4 °वइ°. 5 °कम्मगए. 6 दुस्सहायं. 7 'त्रिमतयणा°. 8 °गहरण°. 9 °देव्वेहिं°. 10 तासो. 11 °लंकारेरीरिया°. 12 थुवंती. 13 °गहिसेस. 14 °हिण. 15 °वयस्स.

'भयवं! एसा अम्हं अइप्पिया नम्मया वरा धूया।
संसारभउव्विग्गा इच्छइ संजमभरं[1] वोढुं ॥ ९४९
एयं सीसिणिभिक्खं वं[2] गेण्ह[ह] दिज्जमाणमम्हेहिं।
तुम्ह सरणागयाए जं जुत्तमिमीए[3] तं कुणह ॥' ९५०
आह गुरू—'जुत्तमिणं धन्ना एसा पुरा सुकयपुन्ना।
तुब्भे वि नूणं धन्ना जाण कुले वड्डिया एसा ॥' ९५१
दिन्ना य तओ दिक्खा तीए पच्चक्खमेव सयणाणं।
जिणभासिएण विहिणा सुहत्थिनामेण मुणिवइणा ॥ ९५२
अभिवंदिया य विहिणा तत्तो[4] सयणेहिं मुइयहियएहिं।
दिन्नो आसीवाओ—'नित्थारगपारगा होसु ॥ ९५३
देवगुरुपसायाओ संपुन्नमणोरहा तुमं जाया।
अम्हाण वि संपत्ती एरिसिया होज्ज कइया वि ॥' ९५४
उववूहिऊण बहुसो पुणो पुणो वंदिऊण भत्तीए।
वड्डियहरिसविसाओ सयणगणो पडिगओ गेहं ॥ ९५५
इयरी वि वसुमईए पवत्तिणीए समप्पिया गुरुणा।
दुविहपयारं सिक्खं पगिण्हियाँ विणयनयनिउणा ॥ ९५६
तूसइ सारिज्जंती अणुग्गहं मुणइ वारिया संती।
चोइज्जंती वि खरं न चेव पडिचोयणं कुणइ ॥ ९५७
दिवसेण वि जिट्ठाए विणीयवयणा करेइ सा विणयं।
तवमाणगुणड्ढा(ड्ढी?)णं गुरुबुद्धीए कुणइ किच्चं ॥ ९५८
छट्ठट्ठमाइरूवं तवइ तवं गुरुजणस्स आणाए।
सोसेइ नियं देहं सुमरंती पुव्वदुक्खाइं ॥ ९५९
पच्चा(न्ना)इसया तुरियं अहिया[इं] विजियदुज्जयपमाया।
एक्कारस अंगाइं पवित्तिणीए पसाएण ॥ ९६०
भरभावियसुत्तत्था संवत्थाऽऽसन्नभवाण य दुहाणं।
संजाया गुरुगोरवपयं विसेसेण समणीणं ॥ ९६१
पावियसुहपरिणामा जा नम्मयसुंदरी तवं चरइ।
एत्थंतरम्मि वसुमइपवत्तिणी [प. ११A] पाविया सग्गं ॥ ९६२

---

१ गंजमसरं. २ व. ३ °ममीए. ४ गुह. ५ कुले. ६ तुम. ७ °वयणा. ८ मत्तो. ९ जुवइहि°. १० आसी°. ११ पगिण्हिया. १२ कुइणइ.

[नम्मयासुंदरीए पवत्तिणीपयठवणा]

जोग्ग त्ति[1] जाणिऊणं ठविया गुरुणा पवत्तिणी एसा।
जणयंती आणंदं समणीसंघस्स सयलस्स ॥ ९६३
तो गुरुणाणुन्नाया साहुणिजणउचियउज्जयविहारा।
गामनगरेसु विहरइ बोहंती धम्मिए लोए ॥ ९६४
सव्वत्थ निययचरियं सवित्थरं साहिऊण संविग्गा।
समणीण साविया(ण) य विसेसओ देइ उवएसं ॥ ९६५
साहूसु साहुणीसु य—'वयभंगमणं पि मा करेज्जासु।
दुक्खेहिं दारुणेहिं जइ ता पत्तेहिं न हु कज्जं ॥ ९६६
अन्नाणमोहियाए पुव्वभवे मुणिवरो मए एगो।
काउस्सग्गम्मि ठिओ खुभइ तवत(न य व)त्ति कोड्डेण ॥ ९६७
उवसग्गिओ महप्पा खुभिओ मणयं पि नेव झाणाओ।
बद्धं च मए पावं जस्स विवागो इमो जाओ ॥' ९६८
वयपरिणामतवेहिं किसियंगी सा चिरेण कालेण।
वारिसिया संजाया सयणा वि जहा न लक्खंति ॥ ९६९
जे आसि सिरे केसा अइकुडिलतरगमच्छहच्छाया।
ते कासकुसुमधवला विरल च्चिय केइ दीसंति ॥ ९७०
आयंसममच्छाया आसि कवोला वि जे समुत्ताणा।
तवसोसियदेहाए जाया खल्ला दढं ते वि ॥ ९७१
सोमालमंग(स)लाओ अंगुलिओ आसि हत्थगाएसु।
परिसुक्क[ट्ठ]घडिय व्व अवक्खं गया ताओ ॥ ९७२
सेयपडपाउयंगी तणुइं[2] थूलं व मुणइ न हि कोइ।
सद्दो वि तारमहुरो न अवभारं गओ तीए ॥ ९७३

[नम्मयासुंदरीए कूवचन्द्रगाम पइ विहरणं]

इओ य जप्पभिइं[3] जाणिओ[4] जणेहिं नम्मयापरिग्गहवुत्तंतो तप्पभिइं चेव अवहत्थिओ रुद्दचंद्रोदंतो[6]। रिसिदत्ता वि अन्नायपुत्तावराहा न कोइ तत्ति करेइ त्ति माणेण न नेमि वत्तमाविस्सइ। चिरस्स नमागएण महेसरदत्तेण रुयमाणेण साहियं सयणाणं जहा—'सुन्दरीए रक्खसेण खइया मम दइया, अहं पि किच्छेण चारित्तलद्धं नट्ठिऊण पलाणो तेण जीविओ इन्हि।' एयं

१ जोगचि. २ सहिणा. ३ वजुद. ४ ... ५ आ. १८. ६ °चंद्रोदंतो.

सोऊण जाया सोआउरा रिसिदत्ता, रोयमाणी कहकह वि धीरविया सयणवग्गेण। तह वि तीए माणाइसएण न जाणाविओ एस वइयरो जणयगिहे। महेसरदत्तो वि कयकलत्तंतरसंगहो अपरिचत्तसावगधम्मो नम्मयासुंदरिकारियचेइए पूयणवंदणाइ कुणमाणो चेट्ठइ। परोप्परगमणागमणाभावाओ कूवचंद्रे नयरे न केणावि विन्नायं नम्मयासुंदरीए आगमणं पव्वयणं वा। एवं च काले वच्चमाणे अन्नया पवत्तिणीए सामच्छियाओ साहुणीओ–'जइ भे रोयइ ता कूवचंद्रेण विहार करेमो।' ताहि भणियं–'भयवई पमाणं।' 'तो खाइं तुब्भे तत्थ गयाओ मम नामं मा [प ३१ B] कहेज्जह, "पवत्तिणी" पवत्तिणी" त्ति अहं भाणियव्वा जओ अन्नायउंछमे(से?)णाए मे वट्टेइ कि नामविकएणं?' तओ 'जमाणवेहि' त्ति परिवारेण वुत्ते सुहविहारेण पत्ता तत्थ। दट्ठूण वंदियाओ महेसरदत्तेण, दिन्नो नियगिहास[न्न] उवस्सओ। ठियाओ तत्थ वंदियाओ भत्तिसार। रिसिदत्ताए दंसियाइं चेइयाइं, कयमुक्कंठियाए पवत्तिणीए विसेसेण वंदणं। विहिया विहाणेण धम्मदेसणा, आणंदिओ सावियावग्गो। एवंमन्नायचरियाए विहरमाणीओ सज्झायंतीओ चेट्ठंति। तत्थ महेसरदत्तो वि तासिं किरियाकलावाणुरंजियमणो तासि सज्झायज्झुणिमेगचित्तो निसामेइ, विसेसओ पवत्तिणीए। चिंतइ 'नम्मयसुंदरिसरिच्छो एसे [स]द्दो। नूणमेसा तीसे माउच्छा माउच्छीदुहि[या] वा भविस्सइ। कहमन्नहा सद्दसमाणत्तं?' ति। अन्नया कयाइ पवत्तिणी महुरवाणीए सरमंडलपगरणं परावत्तिउं पवत्ता। अवि य–

'सो जयउ जिणवरिंदो जस्स मुहा म(पु)न्नचंदनिंग्गाओ।
जरमरणवाहिहरणं सिद्धंतमहामयं झरियं॥ ९७४
जयइ सरमंडलं तं जेणिह पढिएण वुद्धिमन्तेहि।
पुरिसाण महेलाण य गुणा य दोसा य नज्जंति॥ ९७५
सत्त सरा पन्नत्ता सज्जो रिसहो तहेव गंधारो।
मज्झिम पंचम रेवय नेमाओ सत्तमो होइ॥ ९७६
सत्त [स]रट्ठाणाइं तत्थ य सज्जं तु अग्गजीहाए।
रिसभं उरेण कण्ठेण तइययं नीसरेइ नर॥ ९७७

मज्झिमंजीहाए मज्झिमं[2] तु नासाएँ पंचमं जाण।
रेवय दंतोट्ठवहं[3] भमुहक्खेदे(वे)ण नेसायं ॥ ९७८
सज्जं रवइ मयूरो रिसहं पुण कुक्कुडो सरं[4] रवइ।
हंसो गंधारसरं मज्झं तु गवेलया रवइ ॥ ९७९
पंचमयं परपुट्ठा छट्ठं पुण सारसा य कुंचा य।
सत्तमयं तु गयंदा सत्तसरा जीवनिस्साओ ॥ ९८०
सज्जं रवइ मुइंगो गोमुह रिसहं च नदइ गंभीरं।
संखो वि य गंधारं मज्झिमयं झल्लरी रसइ ॥ ९८१
चउचरणगोहिया पंचमं तु आडंवरो य रेवययं।
सत्तमयं पुण भेरी भणिया अज्जीवनिस्साओ ॥ ९८२
सज्जेण सुहपवित्ती वहुपुत्तो वल्लहो[5] य जुवईणं।
रिसहेणं धणवंतो भणिओ सेणावई चेव ॥ ९८३
विविहधणरयणभागी भणिओ गंधप्पिओ य गंधारे।
पवियक्खणो कवी वि य एयम्मि सरे समक्खाओ ॥ ९८४
मज्झिमसरप्पलावी सुहजीवी वहुधणो य दाया य।
पंचमसरमंता पुण पुह[इ]वई[6] हुंति सूरा य ॥ ९८५
छट्ठे कुच्छियंवित्ती कुवसणकुभोयणा कुजोणीया।
कलहकरलेहवाहयदुहजीवो सत्तमे भणिया ॥ ९८६
पयईकरिणो सज्जं अवस्स भावेइ जइ वि य समत्तं।
असमत्तेणऽइकालो गुज्झम्मि य लक्खणं रत्तं ॥ ९८७
रिसहं मरगयगोरो [प १२ A] अवस्स भावेइ परमगोरो वा।
तेण य सिरम्मिं तस्स य विवरीयं लक्खणं भवइ ॥ ९८८
धवलो गंधारसरं अवस्स भावेइ किंचि भावेण।
तेण य तं विवरीयं दाहिणओ लक्खणं होइ ॥ ९८९
कणयपहो मज्झिमयं अवस्स भावेइ जइ वि न विस(सम?)त्तं।
तेण उदरम्मि निंनं तव्विवरीयं वियाणेज्जा ॥ ९९०
आलोहियधवलवन्नो अवस्स भावेइ पंचमं सो उ।
होइ य सिरम्मि पिप्पो पंकयदलसप्पभो तस्स ॥ ९९१
छट्ठं कंवोयवइ(?) अवस्स भावेइ चित्तवन्नो य।
तेणावि रत्तवन्नो अवस्स लिंगे मसो होइ ॥ ९९२

१ वज्झिम°. २ सज्झिम. ३ °ठवह ४ इसर. ५ वल्लहो. ६ °वइ ७ कुच्छोय°. ८ °कुतोयण. ९ °जीव. १० सिरम्मि.

सत्तमयं सुद्ध(ह?)सामो पढमतिचन्नो य कुणइ नियतीए।
ताण य रुक्खविरुक्खा होंति मसा चलणदेसेसु॥' ९९३

[महेसरदत्तकयपच्छायावो]

एयं च पढिज्जंतं सव्वं आसन्नसंठिओऽवहिओ।
सुणइ महेसरदत्तो चिंतेइ तो मणेणेवं॥ ९९४
'आसि मए सुयपुव्वं एसा सरमंडलं वियाणेइ।
सिट्ठं च तीय अहयं जाणामि जिणागमपसाया॥ ९९५
कोहग्गिभुयंगमचंपियस्स पम्हुट्ठसयलसन्नस्स[1]।
सुइगोयरं न पत्तं पडिभग्गसमग्गभग्गस्स॥ ९९६
पम्हुट्ठो गुणनिवहो असंतदोसा पइट्ठिया चित्ते।
धुत्तूरियहिययस्स व विवरीया धाउणो जाया॥ ९९७
एक्कियो तीय गुणो दीसइ अन्नासु[2] नेव नारीओ(सु)।
अप्पा हु अप्पण च्चिय हा! मुट्ठो दुट्ठचित्तेण॥ ९९८
सो तारिसओ विणओ सि(ति) च्चिय महुरक्खरा समुल्लावा।
कत्थ मए लहियव्वा दूरीकयभागधेज्जेणं[3]॥ ९९९
हा हा! पाविट्ठो हं जेण तहा भीसणम्मि दीवम्मि।
एगागिणी अणाहा मुक्का निक्करुण[4]चित्तेण॥ १०००
महविरहभीरुहियया मए समं[5] पत्थिया किर वराई[6]।
सो मे कओ महंतो ही सरणाओ भयं जायं॥' १००१
एवं विचिंतयंतो संभरियासमसिणेहसब्भावो।
सहस त्ति मेइणीए मुच्छाविहलंघलो पडिओ॥ १००२
तक्खणनिलिएहिं सबंधवेहिं सहस त्ति सिसिरनीरेण।
जलसिंचणपवणाओ किच्छेण सचेयणो होउं॥ १००३
वारं वारं हत्थं गच्छइ मुच्छं नियच्छमाणाणं।
नीसेससज्जणाणं हाहारवभरियभवणाणं॥ १००४
नाइक्खइ नियदुक्खं पुच्छंताणं पि निद्धबंधूणं।
मोणव्वयं चेट्ठइ एयं हिययम्मि झायंतो॥ १००५
'अप्पा हु अप्पण च्चिय लज्जइ सरिएहिं जेहिं कम्मेहिं।
कह ताणि बंधवाणं पुरओ तीरंति अक्खाउं॥' १००६

१ कोहग्ग°. २ आनासु. ३ °धेज्जाण°. ४ निक्करण°. ५ सम. ६ वराइं.

घाहरिया य सवेगं संपत्ता तो पवत्तिणी भणइ ।
'किमियमयंडे चंडं[1] सावग ! वसणं समुप्पन्नं ॥' १००७
काऊण य एगंतं पभणइ– 'भयवइ ! उवट्ठियं मरणं ।
देहि पसायं काउं पज्जंतालोयणं मज्झ ॥ १००८
[वो]तुमजुत्तं अन्नस्स जं पुरो निययदुक्कयमणज्जं[2] ।
तं पि गुरु[प. ३२ ■]णं नियमा साहिज्जइ मरणसमयम्मि ॥' १००९
इय भणियम्मि निसन्ना पवत्तिणी साहियं तओ तेण ।
सयलं जहट्ठियं जाव नम्मया उज्झिया सुत्ता ॥ १०१०
'सरमंडलसज्झायं अज्ज सुणंतस्स मज्झ संभरियं ।
सा वि पढंती एवं विन्नायं तेण तं चिंधं ॥ १०११
अज्जे ! जाणामि अहं असमिक्खियकारओ[3] महापावो ।
दुक्कडमिणं सरंतो पाणे धरिउं न याएमि ॥ १०१२
ता देहि अणसणं मे कन्नेसु जवेसु जिणनमोक्कारं ।
मा तुज्झ पसायाओ[4] पाविज्ज पुणो वि जिणधम्मं ॥' १०१३
भणई[5] पवत्तिणी तो– 'वालुल्लावेहिं सावग ! इमेहिं ।
सिज्झइ न किंचि कज्जं परमत्थवियारणं कुणसु ॥ १०१४
न हि[6] मरणमित्तसज्झं एयं तुह संतियं महापावं ।
सुज्झइ नियमा तवसंजमेहिं जिणवीरभणिएहिं ॥ १०१५

अन्नं च–

नूणं पुराणमसुहं कम्ममुइन्नं तया तुह पियाए ।
तवसओ से नूणं समुट्ठिओऽलिंजरे अग्गी ॥ १०१६
पंडिय ! सुसिक्खिओ तं गुरुजणउवएससा(भा ?)वियमणो हं(य) ।
नूणं तीए कम्मेहिं चोइओ निद्दओ जाओ ॥ १०१७
किं बहुणा भो सावग ! उवेयं मा करेसु तव्विसए ।
दुक्कयसुकयं च नियमं भोत्तव्वं सव्वजीवेहिं ॥' १०१८
भणइ महेसरदत्तो– 'भगवइ ! तं भणसि अवितहं सव्वं ।
तह वि न तरामि धरिउं पाणे तीए अदिट्ठाए ॥' १०१९
विन्नायनिच्छया तो ईसि हसंती पवित्तिणी भणइ ।
'उवलक्खेसि न दिट्ठं तहावि तुह इत्थिओ नेहो ॥ १०२०
नणु होमि नम्मया हं न मया निरुवक्कमाउया नूणं ।
सावय ! तुज्झ पसाया सामन्नसिरी मए पत्ता ॥ १०२१

---

1 चंडे. 2 °मणज्जा. 3 °धारओ. 4 पसायाओ. 5 भणइ. 6 नहि.

तुमए अणुज्झियाए कुडंबवावारवावडमणाए।
को जाणइ होज्ज न वा दुलहा जिणभणियपव्वज्जा ॥' १०२२

तओ एवं सुणमाणो[1] महेसरदत्तो असंभवं संभव[ति] त्ति विम्हिओ, एसा सा जीवइ[2] त्ति हरिसिओ, कहमेयाए[3] मुहं दंसेमि[4] त्ति लज्जिओ, सुदरं वयमणुपालेइ त्ति निव्वुयमणो,[5] एवं संकिन्नरसमणुहवंतो महियलनिहित्तजाणुपाणिभालवट्टो पणमिऊण भणिउमारद्धो–'तुह सज्झाय[माय]न्नमाणस्स ठियं मम मणे एरिसो नज्जइ नम्मयसुंदरिसद्दो, किं तु नियदुच्चेट्ठियवससंभावियावस्समरणस्स पणट्ठा जीवियसंभावणा, तो सुट्ठु कयं जमज्ज मरमाणस्स जीवियं दिन्नं, खमाहि य मे पाविट्ठजिट्ठस्स दुट्ठचिट्ठियं।' एवं पुणो पुणो पणामपुव्वं खामिंतो भणिओ पवत्तिणीए–'सावय! कुओ भावियजिणागमतत्ताणं अखमासंभवो। तइया वि मए[6] सकम्मफलमेव संभावियं, कहियं च मे भगवया सुहत्थिसूरिणा तस्स दुरंतवसणस्स कारणं। ता मा विचित्तो[7] भवाहि।' पुणरवि महेसरदत्तेण भणिया–'साहेह[8] मे अणुग्गहं काउं[प. ११ A]ण मए विमुक्काए तुमए केरिसं दुक्खमणुभूयं? कहं वा तओ दीवाओ समुद्दाओ वा निक्खंता सि त्ति।'

वुत्तं पवित्तिणीए–'मासेहिं सत्त संठिया तत्थ।
रुन्नाइँ पलवियाइं कित्तियमेत्ताइँ सुमरामि ॥ १०२३

अह कह वि दिव्वजोगा संपत्तो मज्झ पित्तिओ तत्थ।
तेण य पयाणुसारा[9] गवेसमाणेण दिट्ठा हं ॥' १०२४

इच्चाइ सवुत्तंतो रिसिदत्तापमुहं[10]परियण[11]जुयस्स।
सिट्ठो पवत्तिणीए जा पत्ता कूवचंद्रम्मि[12] ॥ १०२५

सोऊण सव्वलोगो जाओ दुक्खाउरो[13] दढं वत्थ।
रिसिदत्ता वि परुन्ना[14] गणणीकंठग्गहं काउं ॥ १०२६

इत्ति महेसरदत्ते पडिया सयणाण नीरसा दिट्ठी।
लज्जोणामियसीसो सो वि ठिओ गरुयअणुतावो ॥ १०२७

वज्जरइ तओ अज्जा–'सव्वे जीवा सहंति दुक्खाइं।
पुव्वज्जियपाववसा निमित्तमित्तं पुणो वज्झं[15] ॥ १०२८

जरसीसवेयणाओ भवंति जीवस्स पुव्वकम्मेहिं।
अब्भक्खाणं [·······] चब्भाणं तेलमाईणं ॥ १०२९

---

१ सुणमाणो. २ जीवमइ. ३ °मेया र. ४ दसेमि. ५ निच्चुयामणो. ६ मए. ७ विचित्ते.– ८ साहेहे. ९ °साराओ. १० रिसिदत्ता र मुह°. ११ °परियणु°. १२ कूवचंद्रम्मि. १३ दुक्खाओरो. १४ परुमत्ता. १५ वज्जं.

जायइ धणस्स नासो जणस्स पुव्वंतरायदोसाओ ।
तेण णरिंदाईणं रूसइ लोगो मुहा सव्वो ॥ १०३०
अन्नाणंधा जीवा करेंति कूराइँ ताइँ कम्माइं ।
नासंतरुयंतस्स य अणुमग्गं जाइँ धावंति ॥ १०३१
भो भो ! महाणुभावा वीरजिणिंदस्स सासणे लीणा ।
काऊण समणधम्मं दुक्खाण जलंजलिं देह ॥' १०३२
पभणइ महेसरो तं – 'जं पत्तं पव्वरे तुमे दुक्खं ।
तं सोउं पि न सक्को किं पुण सोढुं जणो अन्नो ॥ १०३३
तस्स वि अहं निमित्तं हा ! धिद्धी निग्घिणो महापावो ।
पाविज किं कयाई सोहिं बोहिं च जिणधम्मे ॥' १०३४
पभणइ पवत्तिणी तं – 'वारं वारं किमेवमुल्लवसि ? ।
नत्थि असज्झं किंचि वि सावग ! जिणभणियदिक्खाए ॥ १०३५
सुव्वइ दढप्पहारी चोरो अच्चंतकूरकम्मो वि ।
सामन्नाओ पत्तो सुद्धिं सिद्धिं च गुरुयाओ ॥ १०३६
एही सुहत्थिसूरी निम्मलसुयनाणलोयणो एत्थ ।
नीसेसपाणिपरिणामजाणओ तस्समीवम्मि ॥ १०३७
आलोइऊण पावं पालिज्जसु निम्मलं समणधम्मं ।
सोहिउवाओ एसो मा धरसु मणम्मि संदेहं ॥ १०३८
भुत्ता तुमए भोगा मुणियं संसारवाससेगुन्नं ।
भुत्ते पवलिवाओ संपइ गिहवासवाओ ते ॥' १०३९
रिसिदत्ता वि रुयंती वुत्ता – 'जइ पहुहा अहं अंबे ! ।
लग्गसु ममाणुमग्गं मग्गे निव्वाणनयरस्स ॥ १०४०
अन्नह रुन्नं सुन्नं नेहो त्ति हु किंचिमो य पडिहाइ ।
जलणम्मि पवसइ लोगो गड्डिं खलु नट्ठहव्वभेणं ॥ १०४१
तुम्हाणमेव बोहणनिमित्तमहमागया इह पुरम्मि ।
सुणइ नत्थंसु जओ इहं धम्मम्मि ओहिज्जा ॥' १०४२
नम्मयपराभिणीए पवत्तिपाइं दुन्ने वि रयणहवे ।
सो च्चिय मवो मित्तो जो पावाओ नियत्तेइ ॥ १०४३
[सुहत्थिसूरिकया धम्मदेसणा
इत्थंतरम्मि पत्तो सुहत्थिसूरी [illegible] महागुणी तत्थ ।
आवासिओ य रम्मे उज्जाणे नंदणवणम्मि ॥ १०४४

१ पुरा. २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible]

जाओ नयराणंदो पए पए मन्नए जणसमूहो ।
नूणं इमम्मि नयरे कल्लाणमुवट्ठियं किं पि ॥ १०४५
जं एसो सुरमहिओ संपइरायस्स वल्लहो[1] भयवं ।
संपत्तो अज्ज इहं जणकइरवसंडनिसिनाहो ॥ १०४६
रायाइ नमोसज्जो नियपयउचिएणं[2] सयलविहवेणं[3] ।
अभिवंदिउं मुणिंदं निक्खंतो ज्ञ त्ति नयराओ ॥ १०४७
अभिवंदिऊण विहिणा मुणिनाहं[4] साहुं[5]सत्थपरियरियं ।
उवविट्ठो सयलजणो नियनियउचिएसु ठाणेसु ॥ १०४८
पारद्धा धम्मकहा नवजलहरगहिरमहुरसद्देण ।
सव्वेसिं सत्ताणं अणुग्गहत्थं अइमहत्था ॥ १०४९
'माणुस्स कम्मभूमी आरियदेसो[6] कुलम्मि उप्पत्ती ।
रूवं बलमारोगं(ग्गं) सुदीहरं आउयं बुद्धी ॥ १०५०
सुहगुरुजोगो बोही[7] सद्धा[8] चारित्तधम्मपडिवत्ती ।
दुक्खेण जए लब्भइ एसा कल्लाणरिंछोली ॥ १०५१
एगिंदिया[9] अणंता मरिउं मरिउं पुणो वि तत्थेव ।
उववज्जंति वराया कालमणंतं सकम्मेहिं ॥ १०५२
उव्वट्टिऊणं[10] विरला बियंतियचउरिंदिएसु गच्छंति ।
तत्थ य पुणो पुणो वि य मरंति जायंति बहुकालं ॥ १०५३
पंचिंदिया[12] वि होउं जलथलयरखयरविविहजोणीसु ।
चिट्ठंति चिरं कालं जंति पुणो पुरिसजोणीसु ॥ १०५४
विरला केइ नरत्तं लहंति तत्थ वि अणारिया बहवे ।
तत्तो वि हु विरलाणं आरियदेसे हवइ जम्मो ॥ १०५५
आरियदेसे वि ठिओ धीवर[13]चंडालरुद्दयाईसु ।
कुच्छियकुलेसु जाया नामं न मुणंति धम्मस्स ॥ १०५६
उत्तमकुलेसु जाया काला कुंटा य पंगुला[14] अंधा ।
जीवा अणिट्ठरूवा दिक्खं न लहंति जिणभणियं ॥ १०५७
तनसंजमबलवियला धम्मं न कुणंति रूवकलिया वि ।
बलवंताण वि रोगाउराण धम्मे कओ सत्ती ? ॥ १०५८

१ दछहो. २ ओचिएण. ३ भयइविहवेण. ४ °नाहो ५ साहु°. ६ °देसा.
७ बोहा. ८ सुधा. ९ एगदिया. १० उवट्टिऊग. ११ चिय°. १२ पंचंदिया.
१३ धीवर°. १४ पंगुला.

सव्वगुणसंगया वि हु बालत्ते केइ जंति पंचत्तं[1] ।
अन्ने नवतारुन्ने तेसिं पि हु दुलहो धम्मो ॥ १०५९
चिरजीवीण वि बुद्धी धम्मे विरलाण होइ केसिंचि ।
गुरुसंपओगविरहा वहूण न हु साफलं होइ ॥ १०६०
धम्मे मई[2] कुणंता अन्नाणपासंडिगोयरावडिया ।
भामिज्जंति अणेगे जह चक्कं कुंभयारेण ॥ १०६१
कारिज्जंति अधम्मं बाला धुत्तेहिँ धम्मबुद्धीए ।
भोइज्जंति विसन्नं नूणं चिरजीवियँनिमित्तं ॥ १०६२
गुरुणा वि कहिज्जंते धम्मे बोहिं न केइ पावंति ।
चिक्कणनाणावरणस्स कम्मणो[4] हंदि उदएणं[5] ॥ १०६३
बुद्धे वि धम्मरूवे न सद्दहाणं वहूण संभवइ ।
मिच्छत्तमोहणिज्जे तिव्वे उदयम्मि संपत्ते ॥ १०६४
सद्दहमाणा वि नरा धम्मं जिणदेसियं विगयसंगं ।
न कुणंति समणधम्मं [प १४ A] गिद्धा गिहदेसविसएसु ॥ १०६५
दुलहं गुणसंदोहं लद्धं पि हु ते पमायदोसेण ।
हारिंति मंदभग्गा धमियं कणयं व फुकाए ॥ १०६६
जह सागरम्मि पडिओ कीलयकज्जेणं भिंदई नावं ।
इय विसयकए जीवो हारइ पत्तं पि सामग्गिं ॥ १०६७
जह कोद्दवाण छित्ते छित्तुं कप्पूरतरुवरसमूहं ।
वाडी करेइ एवं भोगत्थी चयइ जो धम्मं ॥ १०६८
कहकह वि दुक्खपत्तं कप्पतरुं कोई पत्थइ चोरे ।
पत्ते पुव्वगुणोहे एवं विसएसु जो रमइ ॥ १०६९
अत्थो अणत्थमूलं बंधुजणो बंधणं विसं विसया ।
पसमसुहाभयभरिओ संजमरयणायरो एगो ॥ १०७०
जरमरणवारिपूरे विओगरोगाइगाहगहणम्मि ।
मा पडह भवसमुद्दे चरित्तपोयं[7] समारुहह ॥' १०७१
देसणमिमं सुणित्ता संबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे ।
संसारभउविग्गा जाया समणा समियमोहा ॥ १०७२

[महेसरदत्तस्स जणणीसहियस्स चरणपडिवत्ती]

सो वि महेसरदत्तो संपावियभावचरणपरिणामो ।
आलोइयदुचरिओ जणणीसहिओ ठिओ चरणे ॥ १०७३

१ पंचत्ती. २ मय. ३ °जीवीय°. ४ कम्मुणो. ५ आदएण. ६ कम्मेण. ७ °पोइ.

संजाया कयकिच्चा पवत्तिणी णाणचरणलाभेण ।
संवेगभावियाइं तिन्नि वि तप्पंति तवमुग्गं ॥ १०७४
छट्ठाओ अट्ठमाओ तह य दसमओ मासओ अद्धमासा
अंतं पंतं [च रुक्खं] तणुजवणकए किं पि भुंजंति भत्तं ।
सीयं उन्हं च तन्हं खुहमवि बहुसो भावसारं[1] सहंते
सोसेउं पावपंकं गुरुपयकमले भिंगरूवं[2] वहंता ॥ १०७५
अट्टेण रुद्देण य दूरियाइं धम्मेण सुक्केण य संजुयाइं ।
सुत्तेण अत्थेण य ताणि नूणं भावेंति अप्पाणमहोनिसिं पि ॥ १०७६
एवं विहरंताइं कयाइँ पत्ताइँ नम्मयपुरम्मि ।
परितुट्ठो बंधुजणो सव्वो भणिउं समाढत्तो ॥ १०७७
'धन्नाइं[3] पुन्नाइं[4] तुब्भे तुम्हाण जीवियं सहलं ।
सामन्नमणन्नसमं जाइं पालेह एयं ति ॥ १०७८
अम्ह कुले जायाणं जुत्तं एवंविहं अणुट्ठाणं ।
सयलो वि अम्ह वंसो अलंकिओ नूण तुब्भेहिं ॥ १०७९
अइधन्ना सि पवत्तिणि ! रिसिदत्ता ठाविया जओ तुमए ।
पुव्वं सावगधम्मे इन्हि पुण दुक्करे चरणे ॥' १०८०
एवमुववूहिया वंदिया य सयणेहिं हट्ठतुट्ठेहिं ।
सेसो वि नयरलोगो जाओ तद्दंसणे मुइओ ॥ १०८१
तीए तत्थ ठियाए जाओ धम्मुज्जुओ सयललोगो ।
पव्वाविओ य विहिणा सयणजणो सेसलोगो वि ॥ १०८२
ता जत्थ जत्थ विहरइ सुभगआएज्जकम्मजोगेण ।
पडिबोहइ भव्वजणं कुमुयज(व)णं चंदलेह व्व ॥ १०८३
पावेइ केइ चरणं अन्ने ठावेइ देसविरयम्मि ।
गाहेइ केइ सम्मं उप्पायइ बोहिबीयाइं ॥ १०८४
सासणमुब्भासंती[5] विहरइ सा जत्थ जत्थ देसम्मि ।
जायइ लोगो गुणगहणवावडो तत्थ सव्वत्थ [प. ३४ B] ॥ १०८५
अह अन्नया कयाई एगारसअंगधारिणी होउं ।
तवनियमसोसियंगी रिसिदत्ता गुरुअणुन्नाया ॥ १०८६
आलोइयपडिकंता सम्मं संघस्स खामणं काउं ।
भत्तपरिन्नपइन्नामंदरसिहरं समारूढा ॥ १०८७
चउसरणगमणदु(दु?)क्कडगरिहासुकडाण(णु)मोयणं काउं ।
झायंती य सुणंती पंचनमोकारमविरामं ॥ १०८८

---

१ °सार. २ °रूव. ३ धन्नायं. ४ पुन्नायं. ५ °संता.

अमुइवसमंससोणियचम्मट्ठिण्हारुणारवीभत्थं ।
मोत्तूण तणुं तणमिव उववन्नो मासभत्तंते ॥ १०८९
कप्पे सणंकुमारे अइसयरमणेज्जसुरविमाणम्मि ।
सुरविसरकयाणंदो सुरिंदसामाणिओ देवो ॥ १०९०
कडयमणिमउडकुंडलतुडियाभरणेहि भूसियावयवो ।
हारद्धहारवत्थो(च्छो) दीहररेहंतवणमालो ॥ १०९१
विन्नायपुव्वजम्मो काउं सव्वाइं देवकिच्चाइं ।
अच्छरगणमज्झगओ विलसइ एगंतसच्छंदो ॥ १०९२
एव महेसरदत्तो साहू साहूण सन्निहाणेण ।
भत्तपरिन्नाणसणं काऊणाराहिऊणं तो ॥ १०९३
तत्थेव देवलोए सुरवइसामाणियत्तमणुपत्तो ।
अवगयचारित्तफलो विलसइ सम्मत्तथिरंचित्तो ॥ १०९४

[नम्मयासुंदरिए सग्गगमणं]

कालेण कालकालं पवत्तिणी नम्मया वि नाऊण ।
उवरियसव्वसल्ला सयलं संघं खमावित्ता ॥ १०९५
समणीण सावियाण य विसेसओ वागरेइ उवएसं ।
'आसायणं मुणीणं मणसा वि हु मा करेज्जाह ॥ १०९६
जो हीलइ साहुजणं स हीलणिज्जो भवे भवे होइ ।
अक्कोसंतो वहबंधणाइ पावेइ पइजम्मं ॥ १०९७
जो पुण देइ पहारं समत्तजियबंधवाण साहूण ।
वज्जग्गिघोरजालावलीसु सो पच्चए नरए ॥ १०९८
तत्थेव अत्थहाणी होइ मुणीणं अवन्नवायाओ ।
इट्ठजणविप्पओगो [अ]कालमरणं च जीवाणं ॥ १०९९
अहव असज्झो देहे संजायइ कोइ दारुणो वाही ।
हसिया वि रोवियव्वे होंति निमित्तं न संदेहो ॥' ११००
एव भणिऊण फुडं कहेइ नीसेसमप्पणो चरियं ।
जेण निसुएण जाओ संवेगो समणसड्ढीणं ॥ ११०१
ताहे भत्तपरिन्नं सम्मं पालेइ मासपरिमाणं ।
जीवियमरणासंसप्पओगपरिवज्जियमईया ॥ ११०२
चइऊण तणुक्करकं पच्चा तत्थेव तइयकप्पम्मि ।
सुरनाहसमाणत्तं परियरआयप्पमाणेहिं ॥ ११०३

१ °ट्ठिमपण्हारु° २ °चिर°- ३ °सट्ठो ४ °हाणी

तियसमहुयरालीलीढपायारविंदो मणिकणयविचित्ताकल्लसंपत्तसोहो।
पणमतियसरामारामणाखित्तचित्तो न हि मुणइ स कालं जंतमच्चंतदीहं ॥ ११०४

गीयं गंधव्वियाणं सुइसुहजणयं नूण तालाणुविद्धं
नट्टं देवंगणाणं नयणमणहरं अंगहाराभिरामं।
गंधो कप्पूर[प. ३५ A]पारीपरिमलबहलो घाणसंतोसकारी
फासो देवंगदेवीतणुसमणुगओ देहसोक्खस्स हेऊ ॥ ११०५

सोक्खं एवंपयारं ते संवेयंता निरंतरं।
सत्तसागरमाणं ते कालं पालित्तु आउयं ॥ ११०६

तत्तो चइत्ता सुहसेसजुत्ता कुले पहाणम्मि महाविदेहे।
अणुत्तरे साहुगुणे धरित्ता जाहिंति मोक्खं धुयकम्मकोसं[3] ॥ ११०७

चरियमणहमेयं नम्मयासुंदरीए अबुहजणहियत्थं पायडत्थं पसत्थं।
भणियमसुहबुद्धीनासणत्थं जणाणं परहियरसिएहिं संतिसूरिप्पहूहिं ॥ ११०८

धम्मकहा पुण एसा जम्हा इह साहिओ इमो धम्मो।
सम्मत्ते जइयव्वं सिवसुहसंपत्तिहेउम्मि ॥ ११०९

वयभंगस्स निमित्तं उवसग्गो नो मुणीण कायव्वो।
पालेयव्वं सीलं पाणच्चाए वि जत्तेण ॥ १११०

चइऊण गेहवासं कायव्वो संजमो सुपरिसुद्धो।
नम्मयसुंदरिचरियं निरंतरं संभरंतेहिं ॥ ११११

विविहपयसंपयाए कहाइ जइ किंचि ऊणमहियं वा।
भणियं पमायओ वा न संसओ तत्थ कायव्वो ॥ १११२

एसा य कहा कहिया महिंदसूरीहिं नियसीसेहिं।
अब्भत्थिएहि न उणो[5] पंडिच्चपयडणनिमित्तं ॥ १११३

जो लिहइ जो लिहावइ वायइ कहेइ सुणइ वा सम्मं।
तेसिं पवयणदेवी करेउ रक्खं पयत्तेण ॥ १११४

संतिं[6] करेउ संती संतियरो सयलजीवलोयस्स।
तह बंभसंतिजक्खो कयरक्खो समणसंघस्स ॥ १११५

निम्माया एस कहा विक्कमसंवच्छरे वइक्कंते।
एक्कारसहिं सएहिं सत्तासीएहिं वरिसाणं ॥ १११६

आसोयासियएगारसीए वारम्मि दिवसनाहस्स।
लिहिया पढमायरिसे मुणिणा गणिसीलचंदेण ॥ १११७

॥ श्रीः ॥ इति नर्मदासुन्दरीकथा समाप्ता ॥

॥ ग्रंथाग्रं १७५० ॥

---

१ °अंदे°. २ °गुणाण°. ३ °कोस. ४ नियय°. ५ उणे. ६ संती.

सिरीदेवचंदसूरिकया

नम्मयासुंदरीकहा

(मूलशुद्धिप्रकरणवृत्त्यन्तर्ग्रथिता)

एत्थेव जंबुदीवे[1] दीवे भरहद्धमज्झखंडम्मि ।
अत्थि गुणोहनिहाणं[2] वरनयरं वद्धमाणं ति ॥ १
तस्स पहू सिरिमोरियवंसप्पभवो कुणालअंगरुहो ।
तिक्खंडपुहईसामी[3] अत्थि निवो संपई नाम ॥ २
अन्नो वि तत्थ नीसेसगुणमओ उसभसेणसत्थाहो ।
अत्थि जिणधम्मनिरओ वीरमई तस्स वरभज्जा ॥ ३
तीसे य दुण्णि[4] पुत्ता सहदेवो तह य वीरदासो[5] त्ति ।
रिसिदत्ता वि य[6] धूया पभूयनारीयणपहाणा ॥ ४
तीसे य रूवजोव्वण[7]लुद्धा वरया अयंति[8] रिद्धिजुया ।
न य देइ ताणं[9] जणओ मिच्छादिट्ठि[10] त्ति काऊण ॥ ५
भणई—'दरिद्दओ वि हु रूवविहीणो[11] वि जिणवरमयम्मि ।
जो होही निकंपो[12] दायव्वा तस्स मे एसा ॥' ६
एवं[13] सुणिय पइण्णं[14] समागओ कूवचंद्[15]नयराओ ।
नामेण रुद्ददत्तो महेसरो तत्थ सत्थेण ॥ ७
अह संकामिय भंडं नियमित्तकुबेरदत्तगेहम्मि ।
तव्वीहीए[16] निविट्ठो[17] जावऽच्छइ ताव नयरपहे[18] ॥ ८
नियसहीयणजुत्तं निग्गच्छंतं[19] निएइ रिसिदत्तं ।
तं दट्ठूणं एसो विद्धो मयणस्स बाणेहिं ॥ ९
'का मित्त ! इमा कण्णा ?' पुट्ठे सो कहइ तस्सरूवं तु ।
तत्तो तल्लोहेणं गच्छइ सो सूरिपासम्मि ॥ १०

१ L °दीवे. २ L गुणोहनिवासं. A B गुणोहनिहाणं. C D गुणाण निवासं°. ३ L °क्खभरहसामी. ४ L दुन्नि. ५ L °दासु त्ति. ६ L °दत्ता वरधूया. ७ L °जुव्वण°. ८ L अइंति. ९ L नयरिइ ताणं. १० A B मिच्छावाइ त्ति. ११ L पभणइ. १२ L °विहूणो. १३ L निक्कंप्पो. १४ A B एयं. १५ L सुणिय पईव्वं. १६ L कूवचंद°. १७ L तव्वीहीए निसित्तो-विट्ठो. A B निविट्ठो. १८ L नयरमहे. १९ L नियच्छंती. २० L कन्ना.

जाओ य कवडसड्ढो जिणगुरुपूयाइएसु बहुदव्वं ।
वियरेइ, अहवा पुरिसो रागंधो किं च न हु कुज्जा ॥ ११

तो दट्ठुं तच्चरियं अच्चंत्थं रंजिओ उसभसेणो ।
सयमेव देइ कण्णं वीवाहं कुणइ रिद्धीए ॥ १२

भुंजंतो वरभोए चिट्ठइ जा तत्थ रुद्ददत्तो सो ।
ता पिउणा से लेहो आहवणत्थं तु पट्ठविओ ॥ १३

तब्भावत्थं नाउं ससुराओ मोइऊण अप्पाणं ।
रिसिदत्ताए सहिओ संपत्तो कूववंद्रम्मि ॥ १४

अभिनंदिओ "पिइ-माईएहिं चिट्ठइ तहिं सुहेण सो ।
कवडगहिय त्ति दूरं" दूरेणं मुयइ जिणधम्मं ॥ १५

रिसिदत्ता वि हु मिच्छत्तसंगदोसेण दूसिया अहियं ।
मोत्तूणं जिणधम्मं धणियं निद्धंधसा जाया ॥ १६

तं नाउं जणएहिं वि आलावाई विवज्जियं सव्वं ।
जोयणदुगमित्तं पि हु संजायं जलहिपारं च (व ?) ॥ १७

मयमत्ताणं ताणं विसयपसत्ताण अन्नया जाओ ।
रिसिदत्ताए पुत्तो रूवेणं सुरकुमारो व्व ॥ १८

तस्स महेसरदत्तो "ठवियं नामं गुरूहिं समयम्मि ।
कालेण परिणयवओ" उद्दामं जोव्वणं पत्तो ॥ १९

एत्तो य वद्धमाणे पुरम्मि रिसिदत्तजिट्ठभाउस्स ।
सहदेवस्स उ भज्जा सुंदरिनामा अणन्नसमा ॥ २०

जिणधम्मरया निच्चं भुंजंती नियपिएणं सह भोए ।
गब्भवई संजाया उप्पज्जइ डोहलो तत्तो ॥ २१

जाणामि जइ पिएणं समयं मज्जामि नम्मयासलिले ।
बहुपरिवारसमग्गो तम्मि अपुज्जंतए तत्तो ॥ २२

कंठग्गयपाणी[1] सा जाया अच्चंतदुब्बल[2]सरीरा ।
चिंतावन्ना चिट्ठइ तं दट्ठुं भणइ सहदेवो ॥ २३
'किं तुह पिए ! न पुज्जइ जं जायाँ[3] एरिसा[4] सरीरेण ? ।'
भणइ इमा—'मह पिययम ! मणम्मि नणु डोहलो गरुओ ॥ २४
जाओ गब्भवसेणं जइ किरि[5] मज्जामि नम्मयाँ[6]सलिले ।
तुमए सह'. तो एसो आसासियं[7] कुणइ सामग्गिं ॥ २५
वहुवणिउच्चसमेओ[8] गिण्हइ[9] नाणाविहाइँ पणियाइं ।
काऊण महासत्थं चलिओ अह सोहणदिणम्मि ॥ २६
अणवरयपयाणेहिं वियरंतो[10] अत्थवित्थरं पत्तो ।
नम्मयँ[11]नईएँ तीरे आवासइ सोहणपएसे ॥ २७
दट्ठूण नम्मयं तो वहुतरलतरंगरेहिँ[12]रावत्तं ।
अइगरुयविभूईएँ[13] पियाएँ[14] सह मज्जणं कुणइ ॥ २८
संपुण्णे डोहलएँ[15] तत्थेव य नम्मयापुरं नाम ।
रम्मनयरं[16] निवेसिय कारावइ वरजिणाययणं ॥ २९
तं सोउं सव्वत्तो आगच्छइ तत्थ भूरि वणिलोगो[17] ।
जायइ[18] य महालाभो पसिद्धमेवं[19] पुरं जातं ॥ ३०
अह सुंदरी वि तत्थेव वरपुरे नियगिहे[20] निवसमाणी ।
पसवइ पसत्थदिवसे वरकन्नं तीएँ सहदेवो ॥ ३१
कारइ वद्धावणयं परितुट्ठो जेट्ठपुत्तजम्मे[21] व ।
विहियं च तीएँ नामं जइ नम्मयसुंदरी एसा ॥ ३२
कमसो परिवड्ढंती जाया नीसेसवरकलाकुसला ।
सरमंडलं च सव्वं विन्नायं अह विसेसेण ॥ ३३
पत्ता य जुव्वणं सा असेसतरुणयणमणविमोहणयं ।
तत्तो परा पसिद्धी संजाया तीएँ सव्वत्थ ॥ ३४
सोऊण तीएँ रूवं रिसिदत्ता दुक्खिया विचिंतेइ ।
'कह मह पुत्तस्स इमा होही भज्जा वरा कण्णा ? ॥ ३५

---

१ L कंठगहणप्पणा. २ L °दुब्बल°. ३ A B °जइ संजाया. ४ L एरिसी सरीरेण. ५ L किरि. ६ L नमया°. ७ L आसासे कुण°. A B आसासइ. ८ L °वणिओघिससमेओ. ९ C D गिण्हिय. १० L विहरंतो. ११ L नम्मया°. १२ L °रेहिरा°. १३ L °विभूइए. १४ C D पिएण. L पियाइ. १५ L संपुण्णडोहलाए. १६ L °नयरम्मि वे°. १७ A B वणलोगो°. १८ L जायइ महा°. १९ C D °द्धमेयं. २० L निवपुरे निवस°. २१ L जिट्ठपुत्तिजम्मेण.

हा हा ! अहं अपुण्णा[1] विवज्जिया जा समत्थ[2]सयणेहिं ।
अहवा किंचियमेत्तं[3] एयं परिचत्तधम्माए ॥ ३६
आलावो वि हु जेहिं परिचत्तो ते कहं महं कण्णं[4] ।
दिंति[5] इय माणसेणं दुक्खेणं रोवए एसा ॥ ३७
तं दट्ठूणं भत्ता पुच्छइ–'किं पिययमे ! तुहं दुक्खं ।
साहीणे वि ममम्मी[6] भणसु तयं[7] जेण अवणेमि ॥' ३८
तो सा कहेइ सव्वं तं सोऊणं पयंपई पुत्तो ।
[8]'तार्य ! विसज्जेह[9] ममं[10] जेणाहं तत्थ वच्चामि ॥ ३९
विणयाइएहिं[11] सव्वे[12] आराहित्ता मए इमा कण्णा[13] ।
परिणेयव्वाऽवस्सं कायव्वो जणणिसंतोसो ॥' ४०
तो[14] विविहपणियभंडेहिं पूरियं अइमहंतयं सत्थं[15] ।
काऊणं जणएणं विसज्जिओ नम्मयानयरे ॥ ४१
पत्तो य तत्थ बाहिं सत्थस्स निवेसणं करेऊणं ।
मायामहस्स गेहं पविसइ सुपसत्थदियहम्मि ॥ ४२
मायामहमाईए[16] सयणे दट्ठूण हरिसिओ[17] धणियं ।
गेहागयं ति लोगट्ठिईइ[18] गोरविहिं[19] इयरे वि[20] ॥ ४३
विणयाइएहि[21] सव्वे तत्थ वसंतोऽणुरंजए[22] एसो ।
मग्गइ य आयरेणं तं कण्णं[23] ते वि नो तस्स ॥ ४४
दिंति तओ तेण इमे अवत्थं[24] आइया तओ[25] ते वि ।
कारविय विविहसवहे[26] दिंति तयं अन्नदियहम्मि ॥ ४५
जाए धम्मवियारे कण्णावयणेहिं[27] साहुपडिबुद्धो ।
सद्धम्मभावियमई [28]जातो अह सावगो[29] परमो ॥ ४६
तो तुट्ठा जणयाई पाणिग्गहणं[30] विहीए कारेंति[31] ।
भुंजइ विसिट्ठभोए तीए समं धम्मकयचित्तो ॥ ४७

---

१ L अपुन्ना. २ L समत्त°. ३ L °मित्त. ४ L कन्नं. ५ L दिंतइ. ६ AB पइम्मी. ७ L °सु तुमं जे°. ८ L सो य विस°. ९ CD विसज्जेहि. L विसज्जेसि. १० L समं. ११ L विणयाईहि. १२ A B सव्व. L सव्वेहिं. १३ L कन्ना. १४ L सो विविवहरणियभंडेहिं. १५ L सव्वं. १६ L मायमहमाइए. १७ A B हरसिओ. १८ L लोगहिईए. १९ A B गोरवहिं. C D गोरवएहिं. २० A B इयरेहिं. २१ L विणयाईहि. २२ L णुरंजइ. २३ L कन्न. २४ L अवत्त. २५ L तओ. २६ L ° सवहेहिं. २७ L कन्नासयणेहिं. २८ L सद्धम्मसावियमई जाओ. २९ L सावओ. ३० L °ग्गहण. ३१ L कारिंति.

केण य कालेण तओ[1] नियनयरं जाइ नम्मयासहिओ ।
जणयाईपडिवत्तीपुव्वं पविसरइ नियगेहे ॥ ४८
सासु-ससुराईणं पडिवत्तिं नम्मया विहेऊणं ।
चिट्ठइ विणएण तओ अप्पवसं कुणइ सव्वं पि ॥ ४९
सो वि महेसरदत्तो धम्मम्मि दढो कयत्थमप्पाणं ।
लाभेणं[2] तीएँ मन्नइ विलसइं[3] नाणाविणोएहिं ॥ ५०
रिसिदत्ता वि पुणो वि हु पडिवज्जई[4] पुव्वसेवियं धम्मं ।
अह अन्नया कयाई सा नम्मयसुंदरी हिट्ठो[5] ॥ ५१
आयरिसे निययवयणं[6] पलोयमाणा[7] गवक्खमारूढा ।
जा चिट्ठइ ता साहू तत्थ तले कह वि संपत्तो ॥ ५२
तो[8] तीएँ[9] पमायपरव्वसाएँ अनिरूविऊण पक्खित्ता ।
पिक्का[10] मुणिस्स सीसे तो[11] कुविओ जंपए साहू ॥ ५३
'जेणाहं पिक्काए भरिओ सव्वंगयंपि(मि)[12] सो पावो ।
पियविप्पओगदुक्खं मह वयणेणं समणुभवउ ॥ ५४
बहुविहदुक्खकिलंतो पभूयकालं तु मज्झ वयणेणं ।'
तं सोउं नम्मयसुंदरी[13] वि सहस त्ति संभंता ॥ ५५
उत्तरिय गवक्खाओ निंदंती अप्पयं बहुपयारं[14] ।
रुहिंता[15] वत्थेणं पणमइ मुणिचलणजुयलम्मि ॥ ५६
परमेणं विणएणं खामित्ता—'भणइ जगजियाणंद ! ।
संसारियसोक्खाइं[16] मा मह एवं पणासेहि ॥ ५७
धिद्धी ! अहं अणज्जा जीइं[17] पमायाउ एरिसं काउं ।
बहुविहदुक्खसमुद्दे खित्तो अइभीसणे अप्पा ॥ ५८
अज्जं चिय सामि ! महं सव्वाइं[18] पणट्ठयाइं[19] सोक्खाइं[20] ।
अज्ज अहं संजाया पाविट्ठाणं पि[21] पावयरी ॥ ५९
तुम्हारिसा महायस ! कुणंति दुहियाण उवरि कारुण्णं[22] ।
ता करुणारससायर ! भयवं ! अवणेहि महं[23] सावं ॥' ६०

---

१ L केण य कालेण इमो तओ. २ L लभेण. ३ L विलसइं. ४ A B पडिवज्जिय. ५ L दिट्ठा. ६ L °से पयवयणं. ७ L °माणी. ८ तो is not found in L. ९ L तीए य पमा°. १० L पेक्खा. ११ L ता. १२ A B सव्वंगियपि. १३ L नम्मया°. १४ L °प्पयारं. १५ L लुहाविय वत्थे°. १६ L °सुखाइ. १७ L जीए. १८ A B सव्वाइ. १९ L पणट्ठयाइं. २० L सुक्खाइ. २१ A B °ट्ठाणं तु पाव. २२ L कारुण्णं. २३ C D मम.

इय विलवंती बहुहा भणिया उवओगपुव्वयं मुणिणा ।
'मा मा विलवसु मुद्धे ! एवं अइदुक्ख[1]संतत्ता ॥ ६१

कोचचसमुवगएणं दिण्णो[2] सावो तुहं मए[3] भद्दे ! ।
संपइ पसण्णहियओ[4] तुह उवरिं नत्थि मे[5] कोवो ॥ ६२

किंतु अणाभोगेणं[6] वि भणिओ सावो[7] हु भाविओ एसो ।
तुमए अन्नभवंतरसुनिकाइय[8]कम्मदोसेणं ॥ ६३

पिय[9]विरहमहादुक्खं अणुभवियव्वं तए चिरं[10] कालं ।
न हु नियकयकम्माणं संसारे छुट्टए को वि ॥ ६४

वच्छे ! हसमाणेहिं जं बज्झइ पावयं इह जिएहिं ।
रोयंतेहिं[11] तयं खलु नित्थरियव्वं न संदेहो ॥' ६५

तो नाउं परमत्थं वंदिय सोहूं[12] विसज्जिओ तीए ।
तम्मि गए रुयमाणी[13] पिएणं[14] पुट्ठा कहइ सव्वं ॥ ६६

आसासिऊण तेण वि भणिया कुण जिणजईण[15] पूयाई ।
दुरियविघायणहेउं न हु रुन्नेणं हवइ किं पि ॥ ६७

पडिवज्जिय तव्वयणं[16] कुणइ तवं पूयए जिणाईए ।
कइहिं वि[17] दिणेहिं तत्तो पुणो वि भोगप्परा जाया ॥ ६८

एवं परिगलमाणे काले मित्तेहिं एरिसं भणिओ ।
सो हु महेसरदत्तो एगंते ठविय सव्वेहिं ॥ ६९

'अत्थोवज्जणकालो मित्त ! इमो वट्टए सुपुरिसाणं ।
पुव्वपुरिसज्जियत्थं लज्जिज्जइ विलसमाणेहिं ॥ ७०

ता गंतु जवणदीवं विढवित्ता नियभुयाहिं[18] बहुदव्वं ।
विलसामो' तव्वयणं पडिवज्जइ रंजिओ एसो ॥ ७१

अह महयाकट्ठेणं जणणी-जणयाणं[19] मोक्कलावेउं[20] ।
गिण्हइ[21] बहुप्पयारं जं जं भंडं तहिं जाइ ॥ ७२

भणिया य नम्मयासुंदरी वि– 'कंते[22] ! समुद्दपारम्मि ।
गंतव्वं मह होही चिट्ठसु ता तं सुहेणेत्थ ॥ ७३

---

१ L °दुक्ख°. २ L दिन्नो. ३ C D सावो मए तुमं भद्दे. ४ L °हियए तुह. ५ L °रिय मह को°. ६ L °भोगेणं भणिओ. ७ A B भावो. ८ L °सनिकाइय°. ९ L इय-विरह°. १० C D तए बहुं कालं. ११ L रोयतेहिं. १२ L साहू. १३ A B रुयमाणी. १४ L पिएण. १५ कुण जईण°. १६ L तव्वयणा. १७ L चेहवि. १८ L °भूयाहिं. १९ C D °जणयाणि. २० L मुक्कलावेउं. २१ L गिन्हइ. २२ L वि कंते समु°.

जम्हा[1] अइसुकुमालं तुह देहं न हु सहिस्सई कट्ठं ।
तम्हा देव-गुरूणं भत्तिपरा चिट्ठ अणुदियहं ॥' ७४
तो भणइ इमा–'पिययम ! मा जंपसु एरिसाइँ वयणाइं ।
जम्हा[2] उ तुज्झ विरहं न[3] समत्था विसहिउं अहयं[4] ॥ ७५
कट्ठं पि तए समयं वचंतीए अईव सुहजणयं ।
ता निच्छएण तुमए सह गंतव्वं मए नाह ! ॥' ७६
तन्नेहमोहियमई पडिवज्जिय तो महंतसत्थेण ।
गंतूण जलहितीरे आरुहइ पहाणवहणेसु ॥ ७७
जा जाइ जलहिमज्झे पहाणअणुकूलवायजोगेण ।
ताव तहिं केणावि हु उग्गीयं महुरसद्देण ॥ ७८
तं सोऊणं बाला सरलक्खणजाणिया पहिट्ठमुही[5] ।
जंपइ–'एसो पिययम ! गायई[6] कसिणच्छवी पुरिसो ॥ ७९
अइथूल[7]पाणिजुयलो वब्बरकेसो रणम्मि दुज्जेओ[8] ।
उण्णयवच्छो[9] साहस्सिओ य बत्तीसवारिसिओ[10] ॥ ८०
गुज्झम्मि[11] य रत्तमसो इमस्स ऊरुम्मि[12] सामला रेहा ।'
इय सोउं से भत्ता[13] गयनेहो[14] चिंतए एवं ॥ ८१
'नूणं इमेण समयं वसइ इमा तो[15] वियाणई एवं ।
ता निच्छएण असई एसा अच्चंतपाविट्ठा ॥ ८२
आसि पुरा मह हियए महासई साविया इमा दइया[16] ।
किं तु कयं मसिकुच्च[17]यदाणमिमीए कुलदुगे वि ॥ ८३
ता किं खिवामि एयं उयहिम्मि[18] उयाहु मोडिउं गलयं ।
मारेमि[19] आरडंती किं वा घाएमि छुरियाए ॥' ८४
इय चिंतइं[20] जावेसो बहुविहमिच्छावियप्पपरिकलिओ ।
ता कूवयट्ठियनरो[21] जंपइ–'रे धरह वहणाइं ॥ ८५
एसो रक्खसदीवो गिण्हह[22] इह नीरइंधणाईयं[23] ।'
ते वि तयं पडिवज्जिय धरंति तत्थेव वहणाइं ॥ ८६

१ L जंम्हा. २ L °म्हा हु तु°. ३ C D °हं असमत्था. ४ L विसहियं अहियं. ५ L सरलखणजाणगा पहट्ठमुही. ६ L जंपइ पियमय गीयइ एसो जंपइ कसिण°. ७ L अइसूल°. ८ L वब्बरकेसा रणम्मि पुच्छेउं. ९ L उन्नयवच्छा. १० L °वारसिओ. ११ L गुस्सम्मि रत्त°. १२ L ऊरम्मि. १३ L सत्ता. १४ L °नेहं. १५ L इमा विया°. १६ L दईया. १७ L °कुंचय°. १८ L उवहिम्मि. १९ L मारेमे. २० L चिंतिय. २१ L ता कूवयट्ठिपुरिसो. २२ L गिन्हह. २३ L °यंधणा°.

पेच्छंति[1] तयं दीवं गिण्हंती[2] इंधणाइयं सवं ।
सो वि महेसरदत्तो मायाए जंपए एवं ॥ ८७

'अइरमणीओ[3] दीवो सुंदरि ! ता उत्तरित्तु पेच्छामो[4] ।'
सा वि परितुट्ठचित्ता तेण समं भमइ दीवम्मि ॥ ८८

अण्णण्णेसु[5] वणेसु कमेणं[6] पिच्छंति सरवरं एक्कं ।
उत्तुंगपालिसंठियनाणाविहतरुवरसणाहं ॥ ८९

अइसच्छ[7]साउसीयलजलपुण्णं[8] सयलजलयरसणाहं ।
दट्ठूण तयं मज्जंति दो वि तत्तो वि उत्तरिउं ॥ ९०

जा तवणगहणेसु[9] भमंति ता सच्चवंति[10] एगत्थ ।
रमणीयलयाहरयं तं मज्झे करिय सत्थरयं ॥ ९१

दोण्णि वि सुवण्णयाइं खणेणं[11] निद्दावसं गया बाला ।
तो चिंतइ से भत्ता निग्घिणहियओ जहा 'एत्थं[12] ॥

मुंचामि इमं जेणं मरइ सयं चेव एगिया रण्णे[13] ।'
इय चिंतिऊण सणियं[14] सणियं उस्सक्किउं[15] जाइ ॥ ९३

वहणेसु विलवंतो 'माइल्लो' उच्च-उच्चसद्देहिं ।
सत्थिल्लएहिं पुट्ठो–'रुयसि[16] किमत्थं ?' ति सो[17] भणइ ॥ ९४

'सा मम भज्जा भाउय ! खद्धा घोरेण छुहियरक्खेण[18] ।
तं दट्ठुं भयभीओ अहमेत्थ पलाइउं[19] पत्तो ॥ ९५

तो पूरह वहणाइं मा एत्थ समागमिस्सई रक्खो ।'
ते वि तओ भयभीया पूरंति झड त्ति वहणाइं ॥ ९६

सो वि हु आहाराई दुक्खवंतो व मुंचइ खणेण ।
रोवेइ विलवइ कुट्टइ उरसिरमाईणि[22] मायाए ॥ ९७

हियएणं पुण तुट्ठो[23] चिंतइ नणु सोहणं इमं जायं ।
जं लोगऽववाओ[24] वि हु परिहरिओ एवविहियम्मि ॥ ९८

---

1 L पिच्छंति. 2 L गिन्हती. 3 L °समणीओ. 4 L पिच्छामो. 5 L अन्नन्नेसुं. 6 L कमेण. 7 C D अइअच्छ°. 8 L °सियजलपुन्न°. 9 L जाव य वणगहणेसुं. 10 L सच्चवंति. 11 L दुन्नवि सुत्तति खणेण. Blank space is found in A B for the lines from निद्दावसं (inclusive) upto the letters खेमे (inclusive) of खेमेण° in verse 101. 12 L इत्थ. 13 L एगया रन्ने. 14 L सयणिं. 15 L ओस्सक्किय. 16 L रूयसि. 17 L ति सो भ°. 18 L छुरिय°. 19 L अहमित्थ पलाइय. 20 दुक्खकतो. ब्व मुयइ. 21 C D अइ सिद्ध°. 22 L °माईण. 23 E हियएण परितुट्ठो. 24 L जं लोगविवाओ.

सत्थिल्लएहिं तत्तो पडिवोहिय भोइओ[1] इमो वि तओ।
अइमहया कट्ठेणं संजाओ विगयसोगो[2] व ॥ ९९

पत्ता य जवणदीवं सव्वेसि वि[3] हिययवंछियाओ वि।
जाओ अहिओ लाभो कमेण गिण्हित्तुं[4] पडिपणिए ॥ १००

वलिऊणं खेमेणं पत्ता सव्वे वि कूवचंद्रम्मिं[5]।
सो वि महेसरदत्तो अक्खइ सयणाण रोवंतो ॥ १०१

जह—'मह दइया खद्धा रक्खसदीवम्मि घोररक्खेण।'
ते वि तओ दुक्खत्ता कुणंति तीसे मयगकिच्चं[6] ॥ १०२

परिणाविओ य एसो अण्णं[7] कुलवालियं अइसुरूवं[8]।
तीए य वद्धनेहो भुंजइ भोगे अणण्णसमे[9] ॥ १०३

एत्तो[10] वि नम्मयासुंदरी वि जा उट्ठिया[11] खणद्धेण।
तो न हु पिच्छइ[12] कंतं तत्थ तओ चिंतए एवं ॥ १०४

'नूणं परिहासेणं लुक्को[13] न हुं होहिई महं दइओ।'
वाहरइ तओ—'पिययम! देसु महं[14] दंसणं सिग्घं ॥ १०५

मा कुण बहुपरिहासं वाढं उत्तम्मए[15] महं हिययं।'
जा एइ न एवं पि[16] हु सासंका उट्ठिउं[17] ताव ॥ १०६

परिमग्गइ सव्वत्तो तह वि अपिच्छंतिया[18] सरे जाइ।
भमेइ य वणविवरेसु[19] कुणमाणी बहुविहे सद्दे ॥ १०७

'हा नाह! ममं मोत्तुं[20] दुहियमणाहं कहिं गओ इण्हिं[21]।
सोऊणं पडिसद्दं[22] धावइ तो[23] तम्मुही वाला ॥ १०८

विज्झंती खइरकंटएहिं पाएसु गलियरुहिरोहा।
गिरिविवरे भमिऊणं पुणो वि सा जाइ लयहरए ॥ १०९

एत्थंतरम्मि सूरो दट्ठूणं तीए तारिसमवत्थं।
पडिकाउं अचयंतो लज्जाए व दूरमोसरिओ[24] ॥ ११०

---

१ L °बोहिया भाइओ. २ L °सोगु व्व. ३ L सव्वे वि हु हिय°. ४ L गिण्हिउ. ५ L °चंदम्मि. ६ L कुणंति नीसेसमयकिच्चं. ७ L अन्नं. ८ L °सरूवं. ९ L भोए अनन्नसमे. १० A B इत्तो. ११ L उट्ठिया. १२ L पिच्छइ. १३ A B लिहुक्को. L छिक्को. १४ C D न हु हो°. १५ L देसि ममं. १६ L उत्तम्मए. १७ L एवं वि. १८ L उट्ठिया. १९ L अपिच्छंतया. २० L भमइ. २१ A B °विवरेसु. २२ L मइं मुत्तुं. २३ L इण्हिं. २४ A B पडिसद्दे. २५ L धाइ तओ तम्मुही. २६ L खइर°. २७ L गलियरुहिर°. २८ C D लयहर°. २९ L °ओसरिओ.

अत्थगिरीएं[1] सूरो ल्हसिउं अवरोयहिम्मि निव्वुड्डो[2] ।
अहवा अत्थमइ च्चिय सूरो पडिकाउमचयंतो ॥ १११
एत्थं[3]तरम्मि तो सा तत्थेव लयाहरम्मि परिखिन्ना ।
सोगत्ता वीहंती जुवज्झएं[4] पल्लवत्थरणे ॥ ११२
उत्थरइ[5] य तम[6]नियरो सव्वत्थोवहयं[7]लोयणप्पसरो ।
अहव पसरंति मलिणा[8] परितुट्ठा मित्तनासम्मि ॥ ११३
इय जा खणंतरेक्कं[9] चिट्ठइ सा दुक्खिया तहिं बाला ।
ता उग्गमेइ राया राय व्व तमारिखयकारी ॥ ११४
तं दट्ठूणं[10] ससिया मण्णइ उज्जीवियं व[11] अप्पाणं[12] ।
अहवा पीऊसरुई आसासइ जं किमच्छेरं[13] ॥ ११५
तो बहुविहचिंतावाउलाइं[14] अइदुक्खियाएं सा रयणी ।
चउजामनिम्मिया वि हु जामसहस्सं व वोलीणा ॥ ११६
अह उग्गयम्मि[15] सूरे सा नम्मय[16]सुंदरी दुगुणदुक्खा ।
पुण रोविउं पयत्ता सुमरिय नियनाहगुणनियरं ॥ ११७

अवि य—

'हा पडिवण्णय[17]वच्छल ! दक्खिन्नयनीरपूरसरिनाह ! ।
हा करुणायर ! अहयं[18] कह मुक्का एक्किया रण्णे[19] ॥' ११८
एवं[20] विलवंती सा पुणो[21] वि गच्छइ सरोवरं तेण ।
पुणरवि हिंडइ रण्णे[22] पुच्छंती हरिणिमाई उ[23] ॥ ११९
'किं दिट्ठो मह भत्ता कत्थई[24] तुब्भेहिं एत्थ भमडंतो ? ।'
पडिसद्दं सोऊणं पविसइ गिरिकुहरमज्झम्मि ॥ १२०
तत्थ वि तमपेच्छंती[25] पुणो वि निग्गच्छई तओ एवं ।
वोलीणा पंच दिणा आहाररहियपडियाइं[26] दट्ठुं ॥ १२१
अह छट्ठम्मि दिणम्मी भमडंती जाइ उयहि[27]तीरम्मि ।
जत्थाऽऽसि पवहणाइं[28] चिंतइ तं सुण्णयं[29] दट्ठुं ॥ १२२

1 L अत्थिगिरीउ. 2 L विब्बुड्डो. 3 L 'इत्थ°. 4 L जुवज्झए. 5 L उच्छरइ. 6 A B हिम°. 7 L सव्वत्तो पुहयलो°. 8 L मसिणा परितुट्ठा. 9 L °तरिक्कं. 10 L दट्ठूणं स°. 11 C D 'वियं नु अ°. 12 L मन्नइ उज्जीविम्मियमप्प अप्पाणं. 13 L आसासइ व वि मच्छेर 14 L °वाउलाए. 15 L उदयम्मि 16 L नम्मय°. 17 L °वच्छय°. 18 L ण्णायर निय अहिय कह. 19 L एक्किया अह रन्ने. 20 L इय विल.° 21 L पुण. 22 L रन्ने. 23 A B हरिणमाईए. L हरिणिमाईणि 24 C D कत्थय 25 L °पिच्छंती. 26 L °पडियाए. 27 L उवहि°. 28 L पवह°. 29 L सुण्णं.

'रे रे जीव! अलक्खण! मुहाए[1] किं खिज्जसे तुमं एवं ।
जं अन्नभवोवत्तं[2] तं को हु पणासिउं[3] सत्तो ॥ १२३
रे जीव! तया मुणिणा आइट्ठं जं तयं इमं मण्णे[4] ।
ता सम्मभावणाए[5] सहसु[6] तयं किं व रुण्णेणं[7]? ॥' १२४
इय चिंतिऊण तो सा गंतूण सरोवरम्मि नियदेहं ।
पक्खालिय संठाविय ठवणं तो वंदई देवं[8] ॥ १२५
काऊण पाणवित्तिं फलेहिं तो गिरिगुहाएं[9] मज्झम्मि ।
मट्टियमयजिणपडिमं काउं वंदेइ[10] भत्तीए ॥ १२६
पूयई[11] वरकुसुमेहिं कुणइ बलिं बहुफलेहिं पक्केहिं[12] ।
रोमंचंचियदेहा संथुणइ मणोहरगिराए ॥ १२७

अवि य–

'जय संसारमहोयहिनिवुड्डजंतूण तारणतरंड! ।
जय भय[13]भीयजणाणं सरणय! जिणनाह! जगपणय! ॥ १२८
जय दुहियाणं दुहहर! रागद्दोसा[14]रिविरियनिद्दलण! ।
जय मोहमल्लमूरण! जय चिंताचत्त[15]! जिणनाह! ॥ १२९
जय निद्दापरिवज्जिय! छुहापिवासाजराभयविमुक्क! ।
मयमाय[16]खेयवज्जिय! गयजम्मणमरण[17]! जय नाह! ॥ १३०
जय हि[18]अविम्हय! अपमाय! देव! सासयसुहम्मि संपत्त! ।
सिवपुरपवेसणेणं कुणसु दयं मज्झ दुहियाए ॥' १३१
इय जिणथुइजुत्ताए[19] सुनिकाइयकम्ममणुहवंतीए ।
जा जाइ कोइ[20] कालो ता चिंतइ अन्नया एसा ॥ १३२
'जइ कह वि भरहवासे गमणं मह होइ पुण्ण[21]जोएण ।
तो सव्वसंगचायं काऊण वयं गहिस्सामि ॥' १३३
इय चिंतिऊण रयणायरस्स तीरम्मि उब्भियं[22] तीए ।
चिंधं महामहंतं[23] जं पयडइ भिन्नवहणं त्ति[24] ॥ १३४

---

१ L मुहाइ. २ L °वोवत्तं. ३ B °सियं. ४ L मज्झे. ५ L समभा°. ६ L सहस्सु. ७ L रुन्नेणं. ८ L तो वदए देवो. ९ L °गुहाए. १० L मंडियजिणबिंब काउं ठवेइ. ११ L पूइय. १२ L कुणइ बहुभत्तिभरनिब्भरेहिं. १३ L भवभीय°. १४ L °दोसारि°. १५ A B चिंतावच्च. १६ L मयसेसखेय°. १७ C D °मरणपरिमुक्क. L °मरणभरमोह. १८ L हियवि°. १९ A B °जत्ताए. २० B को वि कालो°. २१ L पुन्न°. २२ L उड्डियं. २३ L बिंब महे महत्त. २४ A B °वहणिचं.

एत्थंतरम्मि तीसे चुल्लपिया वीरदासनामो जो ।
वब्बरकूलं जंतो पत्तो तम्मि य पएसम्मि ॥ १३५
दट्ठूण तयं चिंधं लंबाविय पवहणं समुत्तरिउं[1] ।
पयमग्गेणं पत्तो थुणइ जिणं नम्मया जत्थ ॥ १३६
सोऊण तीऍ सद्दं सासंको नम्मया किमेस त्ति ।
जा पत्तो दिट्ठिपहे ता सहसा उट्ठिया बाला ॥ १३७
दट्ठूण चुल्लपियरं कंठम्मि विलग्गिउं घणं रुन्ना ।
सो वि तयं ओलक्खिय मुंचइ नयणेहिं सलिलोहं ॥ १३८
पुट्ठा य–'किं गुणोयहि! वच्छे! तं इत्थ एक्किया रण्णे[8] ।'
सा वि असेसं वत्तं[9] जं जहवत्तं परिकहेइ ॥ १३९
'पेच्छह विहिणो दुव्विलसियं' ति भणिऊण नेइ तं वहणे ।
ण्हाणाई[10] काराविय भुंजावइ मोयगाईहिं[11] ॥ १४०
चलिओ य तत्तो[12] कमसो पत्तो अणुकूलवायजोगेण ।
वब्बरकूले[13] तत्तो ताडावइ पडउडिं[14] रम्मं ॥ १४१
उत्तारिय भंडाइं पडउडिमज्झम्मि नम्मयं[15] ठवियं ।
गिण्हिय उवायणाइं[16] गच्छइ नरनाहपासम्मि ॥ १४२
नरवइणा सम्माणे विहिए तो[17] जाइ निययठाणम्मि ।
जावऽच्छइ[18] कइ वि दिणे ता जं जायं तयं सुणह ॥ १४३
अत्थि तहिं वत्थव्वा[19] हरिणी नामेण सुंदरा गणिया ।
नीसेसकलाकुसला गोरवा नरवरिंदस्स ॥ १४४
वेसायणप्पहाणा[20] उब्भडलावण्ण[21]जोव्वणुम्मत्ता ।
सोहग्गवरपडागा[22] सुपसिद्धा रिद्धिपरिकलिया ॥ १४५
सा रण्णा परिभणिया[23]–'समत्थवेसाण भाडियंविभागं ।
गिण्हे तुमं मज्झं पुण विढविसि जं तं[24] तयं देयं ॥ १४६

जो य इह पोयसामी[1] आगमिही सो य अट्ठसहसं तु ।
दीणाराणं देही तुज्झं[2] मज्झ प्पसाएणं[3] ॥' १४७

एसा तत्थ ववत्था वेसाणं अत्थि राइणा[4] समयं ।
हरिणीए तओ चेडी पट्ठविया वीरदासस्स ॥ १४८

पासम्मि तीएँ भणिओ सो जह – 'वाहरइ हरिणी(णि)या[5] तुम्भे ।'
तेण वि सा पडिभणिया – 'जइ वि हु रूवाइगुण[6]कलिया ॥ १४९

अण्णिरत्थी[7] तह वि अहं भुंजामि न[8] वज्जिउं नियकलत्तं ।'
तीए वि तओ भणियं – 'आगंतव्वं[9] तए तह वि[10]' ॥ १५०

तो जाणिय भावत्थो अप्पइ दीणारसहस्सं[11]मट्ठहियं ।
सा वि तयं घेत्तूणं[12] वच्चइ हरिणीएँ[13] पासम्मि ॥ १५१

सा तं दट्ठुं जंपइ – 'किमेइणा एउ वणियपुत्तो त्ति[14]' ।
सा वि पुणो गंतूणं अक्खइ हरिणीएँ[15] जं भणियं ॥ १५२

तं सुणियं[16] वीरदासो चिंतइ हियएण 'किं मह इमाओ ।
काहिंति[17] जओ सीलं भंजेमि[18] न पलयकाले वि ॥ १५३

गच्छामि ताव तहियं पच्छा काहामि जं जहाजुत्तं[19] ।'
इय चिंतिऊण गच्छइ तीए भवणं अइसुरम्मं ॥ १५४

तो महुरमंजुलाहिं वियड्ढभणिईहिं[20] साणुरागाहिं ।
सा जंपइ सवियारं तह वि न सो चलइ मेरु व ॥ १५५

एत्थं[21]तरम्मि कण्णे[22] कहियं हरिणीएँ[23] तीएँ चेडीए ।
जह – 'सामिणि ! एयघरे[24] अच्छई महिला अणण्ण[25]समा ॥ १५६

सा जइ कहिं वि तुब्भं आएसं कुणइ तो हु[26] रयणाणं[27] ।
पूरइ निस्संदेहं तुह गेहं किं च[28] बहुएणं ॥ १५७

जम्हा हु[29] रूवजोव्वणलावण्ण[30]गुणेहिं तीएँ सारिच्छा ।
दीसइ न मच्चलोए' तं सोउं हरिणिया लुद्धा ॥ १५८

१ L जो इह पोयसामी°. २ L तुम्भं. ३ L पसाएण. ४ L रायणा. ५ A B रिम्णिया. ६ L रूवाइपरिक°. ७ L अन्नत्थी. ८ L °मि तवज्जियं. ९ L भणियं गंतव्वं. १० C D तए कह वि. ११ L °सहस्सम°. १२ L चित्तूणं. १३ L हरिणीइ. १४ L वणीयपुत्त. १५ L हरिणीय. १६ L मुणिय. १७ L काहंति. १८ L भुंजामि. १९ L जहाजुत्तं. २० L वियट्टभणिईणि साणु°. २१ L इत्थं°. २२ L कन्ने. २३ L हरिणीहिं तीए. २४ L एसघरे भत्थइ. २५ L अणन्न°. २६ A B तुम्भे आएणं कुणह तो ह रय°. २७ L रयणाइं. २८ A B किं त्थ बहु°. २९ C D जम्हा उ. ३० L °जुव्वणलावन्न°.

चिंतइ 'अवहरिऊणं आणेत्तुं धरेमि कह वि पच्छण्णं।'
तत्थुप्पण्णमई सा तो भणइ तयं वणियपुत्तं ॥ १५९
'अप्पेहि नाममुद्दं खणमेक्कं जेण ईए सारिच्छं।
अण्णं नियकरजोग्गं मुद्दं कारेमि' तो एसो ॥ १६०
अप्पइ य निव्वियप्पो सा वि तयं देइ दासचेडीए।
हत्थम्मि तओ एसा गंतूणं नम्मयं भणइ ॥ १६१
'सो वीरदाससेट्ठी हक्कारइ पच्चयत्थमह तेण।
एयं मुद्दारयणं पट्ठवियं तुज्झ ता एहि ॥' १६२
दट्ठूण वीरदासस्स संतियं नाममुद्दियारयणं।
तो सा वि निव्वियप्पा तीएँ समं जाइ तत्थ गिहे ॥ १६३
अवदारेण पवेसिय छूढा गुत्तम्मि भूमिहरयम्मि।
मुद्दं पि वीरदासस्स अप्पियं कुणइ पडिवत्तिं ॥ १६४
उट्ठित्तु तओ एसो सट्ठाणे जाइ तत्थ तमदट्ठुं।
गविसइ सव्वत्तो चिय पुच्छंतो परियणं सव्वं ॥ १६५
जाव न केण वि सिट्ठा तीए वत्ता वि तो गवेसेइ।
उज्जाणहट्टमाइसु तत्थ वि नो जाव उवलद्धा ॥ १६६
तो दुक्खपीडियंगो इमं उवायं विचिंतएं एसो।
'जेणऽवहरिया बाला किं सो पयडेइ मह पुरओ ॥ १६७
ता वच्चामि इओऽहं बालं पयडेइ जेण सो दुट्ठो।'
इय भावणाइ भंडं घेत्तूणं चलइ घरहुत्तं ॥ १६८
पत्तो भरुयच्छपुरे संजत्तियवणियसंकुले रम्मे।
तत्थऽत्थि तस्स मित्तो जिणदेवो नाम वरसड्ढो ॥ १६९
तस्सऽक्खइ सो सव्वं भणिओ—'तं जाहि तत्थं वरमित्त।'
कत्थ वि गवेसिऊणं तं बालं एत्थं आणेही ॥ १७०
सो वि तयं पडिवज्जिय सामग्गिं करिय जाइ तत्थेव।
जाणाविया य वत्ता नम्मयपुरिसवंसयणाणं ॥ १७१

सोऊण तयं ताणि[1] वि दुक्खत्ताइं रुवंति अइकरुणं।
एत्तो य नम्मयाए जं वित्तं तं निसामेह ॥ १७२
नाऊण वीरदासं गयं तओ हरिणियाएँ सा वुत्ता।
'भद्दे! कुण वेसत्तं[2] माणसु विविहाइँ सोक्खाइं[3] ॥ १७३
सद्दरसरूवगंधे फासे अणुहवसु मणहरे निच्चं।
मह घरवत्ता एसा सव्वा वि हु तुज्झतणियं[4]' त्ति ॥ १७४
तं[5] सोउं नम्मयसुंदरी वि[6] विहुणित्तु करयले दो वि।
पभणइ – 'मा भणं भद्दे! कुलसीलविदूसणं वयणं ॥' १७५
तो रुसिऊणं हरिणी ताडावइ तं कसप्पहारेहिं[8]।
फुल्लियकिंसुयसरिसा खणेण जाया तओ एसा ॥ १७६
'अज्ज वि न किंचि नट्ठं पडिवज्जसु मज्झ संतियं वयणं।'
इय मेहरीएँ भणीएँ भणइ इमा – 'कुणसु जं मुणसि ॥' १७७
गाढयरं रुसिऊणं जाव पयत्तेइ[10] तिक्खदुक्खाइं।
सा वेसा ता इयरी सुमरइ परमिट्ठिवरमंतं ॥ १७८
तस्स पभावेण तओ तडॅ त्ति पाणेहिँ हरिणियाँ मुक्का।
रण्णो निवेइयम्मी[14] तम्मरणे भणइ तो राया ॥ १७९
'किंचि सरूवं अण्णं[15] तट्ठाणे ठवेहँ गुणगणसमग्गं।
भो मंति! ममाऽऽणत्ति(त्तिं)[17] सिग्घं संपाडसु इमं'ति ॥ १८०
नरवइणो आणाए मंती जा तत्थ जाइ ता सहसा।
दट्ठूण नम्मयं सो अच्चंतं हरिसिओ "चित्ते ॥ १८१
जंपइ – 'मेहरियपयं भद्दे! तुह देमि रायवयणेणं।'
सा वि तयं पडिवज्जइँ परिभाविय निग्गमोवायं ॥ १८२
ठविऊण मेहरिं तं मंती वि हु जाइ निययठाणम्मि।
सा वि हु हरिणीदव्वं वेसाणं देइ परितुट्ठा ॥ १८३
तं कहियं केणावि हु रण्णो[24] तेणावि जंपियं एयं।
'आणेह तयं एत्थं' जंपाणं जाइ तो रम्मं ॥ १८४

१ L ताण. २ L भद्देण कुण देसत्तं. ३ C D विविहाणि सोक्खाणि. L विवहाइं सुक्खाइं ४ L °तणय त्ति. ५ L ता सोउं. ६ L °सुंदरी त्ति वि. ७ L भणइ भद्दे. ८ L ताडावइ कसपहारेहिं. ९ L भणइ मा कुण° १० L पयत्तेइ. ११ L वेसा भा यहरी. १२ L तओ झड त्ति. १३ L हरिणीया. १४ L रन्नो निवेवियम्मी. १५ L अन्नं. १६ C D ठवसु. १७ L मंति समाणत्तं. १८ L उक्खइणो. १९ L मंनी ता तत्थ. २० L सहस्सा. २१ L °सिओ दित्तो. २२ L भा [illegible] २३ L पडिवज्जिय. २४ L रन्नो.

आरोविऊण तम्मि जा पुरिसा निंति नयरमज्झेयं।
ता चिंतइ 'मह सीलं को खंडइ जीवमाणीए॥ १८५

को पुण इत्थ उवाओ' चिंतंती नियइ एगठाणम्मि।
अइकुहियदुब्भिगंधं पवहंतं गेहनिद्धवणं॥ १८६

तं पेच्छिऊण जंपइ–'भो भो! बाढं तिसाइया अहयं।'
तो मेल्लावेइ जाणं जाणवई दरिसिउं विणयं॥ १८७

जा आणंति जलं ते ताव इमा उत्तरित्तु जाणाओ।
सव्वंगियमप्पाणं चिक्खिल्लेणं विलिंपेइ॥ १८८

पियइ तयं दुग्गंधं नीरं अमयं ति भाणिउं बाला।
लोलए महीइ पंसुं खिवइ सिरे देइ अक्कोसे॥ १८९

पभणइ य–'अहो लोया! अहयं इंदाणियाँ ममं नियंह।'
गायइ नच्चइ रोवइ भयभीया सीलभंगस्स॥ १९०

पुरिसेहिं तयं सिट्ठं निवस्स सो भणिउं गहं लग्गं।
पेसेइ मंत-तंताइवाइणो तेहिं किरियाए॥ १९१

आढत्ताए भाले चडाविउं लोयणे फुरुफुरंती।
अक्कोसिऊणं गाढं अहिययरगहं पदंसेइ॥ १९२

तो तेहिं परिचत्ता हिंडइ नयरस्स मज्झयारम्मि।
डिंभेहिं परियरिया हम्मंती कट्ठलिट्ठूहिं॥ १९३

इय एवमाइ सव्वं कवडेंग्गहदंसणं पयासेइ।
सीलस्स रक्खणत्थं धम्मं हियएण सरमाणी॥ १९४

अह अण्णया कयाई बहुविहलोएणं परिवुडा बाला।
निम्मल्लमालियंचणू गायइ जिणरासयं रम्मं॥ १९५

तं दट्ठुं जिणदेवो पुच्छइ–'को तं गहो सि जिणभत्तो।'
सा भणइ–'ससागारं तेण न साहेमि नियनामं॥' १९६

बीयम्मि दिणे उज्जाणसंमुहं जाव चल्लिया एसा।
तो डिंभाईलोगो नियत्तिउं[1] जाइ सट्ठाणे ॥ १९७
सा वि हु एगंतठिया[2] वंदइ देवे विहीएँ जा तावँ[3]।
कत्तो वि हु जिणदेवो समागओ तो तयं दट्ठुं ॥ १९८
वंदामो[4] त्ति भणित्ता पणमइ सीसेण सा वि वरसड्ढं[5]।
नाऊणं नियचरियं अक्खइ सव्वं[6] जहावत्तं ॥ १९९
तो जंपइ जिणदेवो—'वच्छे! तुह गविसँणत्थ[7]मायाओ।
भरुयच्छाओ अहयं पट्ठविओ वीरदासेण ॥ २००
जम्हा सो मई[8] मित्तो पाणपिओ पेसिओ अहं तेण।
ता परिचयसु विसायं सव्वं पि हु सुंदरं काहं ॥ २०१
पर किंतु हट्टमग्गे घडगसहस्सं घयस्स मेह तणयं[9]।
जं चिट्ठइ तं तुमए लउडपहारेहिँ भेत्तव्वं[10] ॥' २०२
इय संकेयं[11] काउं दोन्नि[12] वि पविसंति नयरमज्झम्मि।
विहियं[13] च बीयदिवसे सव्वं जं मंतियं आसि ॥ २०३
तो निवई[14] हक्कारिय जिणदेवं[15] भणइ—'हा कहं तुज्झ।
हाणी महामहंता विहिया एयाएँ[16] पावाए ॥ २०४
ता रयणायरपारे अम्हेंऽवरोहेण[17] खिवसु एयं ति[18]।
जेणित्थं[19] अच्छंती कुणइ अणत्थंतरे बहुए ॥' २०५
आएसो[20] त्ति भणित्ता नियलाविय नेइ नियय[21]ठाणम्मि।
छोडित्ता ण्हावेउं[22] परिहाविय भोइयं[23] विहिणा ॥ २०६
पहणे चडाविऊणं पत्तो खेमेण पुण वि भरुयच्छे।
[24]पविसित्तु नियगेहे जाणावइ नम्मयपुरम्मि ॥ २०७
जा ते संवहिऊणं[25] चलंति ता एइ सो तयं घेत्तुं[26]।
जणयाई दट्ठूणं कंठविलग्गा रुवइ तो सा ॥ २०८
तो[27] उसभसेण-सहदेव-वीरदासाइ बंधवा सव्वे[28]।
सरिऊणं बालत्तं तीसे रोवंति[29] अइकलुणं ॥ २०९

१ L डिंभाइलोगो नियत्तियं. २ L हु एमंवट्ठिया. ३ L °ए ता जाव. ४ L वंदामु. ५ L °सढं. ६ L सव्वं. ७ L गवेस°. ८ L मह. ९ L °स्स नभत्तणयं. १० L भित्तव्वं. ११ L संकेउं. १२ L दुन्नि. १३ A B विहिउं. १४ L निव्वई. १५ L जिणदेवो. १६ A B एयाइ. १७ L रणायरपारे अम्हु. १८ ति is not found in L. १९ L जेणत्थं. २० L आएसु. २१ L नियठाणम्मि. २२ L न्हावेउं. २३ C D भोइउं. २४ L भविसित्तु. २५ L संविहिऊणं. २६ L घित्तुं. २७ C D तो. २८ L सवे. २९ C D रावंति.

पुट्ठा य तेहिं सव्वं जा सा साहेइ निययवुत्तंतं ।
सुणमाणाणं दुक्खं[1] सव्वाण वि तक्खणं[2] जायं ॥ २१०

अह तीएँ संगमम्मी विहिया पूया जिणिंदचंदाणं ।
सम्माणिओ य संघो दिण्णाणि[3] महंतदाणाणि ॥ २११

विहियं वद्धावणयं विम्हयजणणं[4] समत्थलोयाणं ।
जिणदेवसावओ वि हु जाइ पुणो निययनयरम्मि ॥ २१२

जा नम्मयसुंदरिसंगमम्मिं[5] दिवसा सुहेण वोलिंति ।
कइ वि तहिं ता[6] पत्तो[7] विहरंतो साहुपरियरिओ ॥ २१३

मोरियवंससिरोमणिसंपइनरनाहनमियपयकमलो ।
दसपुव्वधरो सिरिथूलभद्दसीसो महुरवाणी[8] ॥ २१४

तियसाइवंदणिज्जो अय(इ)सयनाणेणं[9] पयडियपयत्थो ।
भव्वारविंदभाणू सूरी सिरिअज्जहत्थिं[10] त्ति ॥ २१५

तो नाऊणं सूरिं समागयं तस्स वंदणट्ठाएँ ।
भत्तिभरनिब्भराइं सव्वाणि वि[11] जंति उज्जाणे ॥ २१६

वंदित्तु तओ[12] सूरिं नेंचासन्नम्मि[13] सन्निविट्ठाइं ।
सूरी वि ताण धम्मं कहेइ जिणदेसियं रम्मं[14] ॥ २१७

जह–'एत्थं संसारे सकम्मफलभोइणो[15] इमे जीवा ।
पाविंति[16] सुहं दुक्खं जं विहियं अण्णजम्मम्मि ॥' २१८

तं सुणिय वीरदासो पुच्छइ करसंपुडं सिरे काउं ।
'भयवं ! किमण्णजम्मे विहियं मह भाइधूयाए ॥ २१९

जेणं सीलजुया वि हु पत्ता एवंविहं महादुक्खं ।'
सूरी वि भणइ–'सावय ! जं पुट्ठं तं निसामेह[17] ॥ २२०

अत्थि इह भरहवासे मज्झिमखंडम्मि पव्वओ विंझो ।
उत्तुंगसिहरसंचयसमाउलो खलियरविपसरो[18] ॥ २२१

तत्तो इमा पसूया महानई नम्मया जइणवेगा[19] ।
तीए य अहिट्ठाइगंदेवी[20] वि हु नम्मया अत्थि ॥ २२२

सा मिच्छत्तोवहया नम्मयतडसंठियं महासत्तं ।
धम्मरुईअणगारं दट्ठूणं कुणइ उवसग्गे ॥ २२३

नाणाविहे सुघोरे निच्चलचित्तं मुणिं मुणेऊण ।
उवसंता संजाया सम्मत्तधरा ततो[1] चविउं ॥ २२४

एसा हुं[2] नम्मयासुंदरि त्ति जाया सुया उ तुम्हाणं ।
पुव्वभवब्भासेण य एईए नम्मया इट्ठा ॥ २२५

जं तइयाँ[3] सो साहू खलीकओ दुट्ठ[4]चित्तजुत्ताए ।
तं सुनिकाइयकम्मं भुत्तं एयाएँ[5] दुव्विसहं ॥' २२६

तो[6] सोउं नियचरियं[7] संजायं तीएँ जाइसरणं तु ।
संवेगगयाएँ[8] तओ गहिया दिक्खा गुरुसमीवे ॥ २२७

दुक्करतवनिरयाए ओहिण्णाणं[9] इमीएँ उप्पण्णं[10] ।
तत्तो पवत्तिणिचे[11] ठविया सूरीहिँ जोग्ग त्ति[12] ॥ २२८

विहरंती य कमेणं[13] संपत्ता कूवचंद्रनगरम्मि[14] ।
रिसिदत्ताए गेहे वसहिं मग्गित्तु उत्तरिया ॥ २२९

बहुसाहुणीहिं[15] सहिया कहइ य धम्मं जिणिंदपण्णत्तं[16] ।
सुणइ महेसरदत्तो रिसिदत्तासंजुओ निच्चं ॥ २३०

अह अण्णम्मिँ[17] दिणम्मी संवेगत्थं इमस्स सा गुणइ ।
सरमंडलं असेसं जहा इमेयारिससरेण ॥ २३१

होइ नरो इयवन्नो तहा इमेयारिसेण इयचरिसो[18] ।
एवंविहेणं[19] य पुणो इयंआऊ[20] होइ अवियप्पो ॥ २३२

एवंविहसद्देणं होइ मसो गुज्झदेसभायम्मि ।
एवं विहेण य पुणो रेहा ऊरु(रु)म्मि संभवइ ॥ २३३

एमाई अन्नं पि हु सव्वं सरलक्खणं सुणेऊण ।
सो हु महेसरदत्तो चित्तम्मि विभावए एवं ॥ २३४

'नूणं मह दइयाए सरलक्खणजाणियाएँ आइट्ठो[21] ।
गुज्झपएसम्मि मसो रेहा वि य तस्सँ[22] पुरिसस्स ॥' २३५

---

१ L °धरी तओ. २ L एसा उ. ३ L तईया. ४ L °कओ पुडचि°. ५ L एयाइ. ६ L तं सोउं. ७ L °चरिउ. ८ L °गयाइ. ९ L ओहिनाणं. १० L उप्पन्नं. ११ L पवित्तणित्ते. १२ L जोग त्ति. १३ L °रती कम्मेणं. १४ L कूवचन्द्रनयरम्मि. १५ A B °साहुणीए. १६ L °पन्नत्त. १७ L अन्नम्मि. १८ L इयसरिसो. १९ L °विहे य. २० L इयाआऊ. २१ L आयट्ठो. २२ L तस.

तो विलविउं[6] पयत्तो—'हा हा अइनिग्घिणो अहं पावो' ।
कूरो अणज्जचरिओ अवियारियकज्जकारि त्ति ॥ २३६
जेण मए सा बाला सरलक्खणजाणिया अरण्णम्मि[7] ।
एगागिणी विमुक्का ईसावसविनडियमणेणं ॥ २३७
करपत्तं वररयणं हारवियं निच्छयं अपुण्णेणं ।
मरणेण विणा सुद्धी नत्थि महं किं च[8] बहुएण ॥' २३८
इय विलवंतं सोउं भणइ इमा नम्मया—'अहं सा उं ।'
कहइ य जं जहवत्तं[9] नीसेसं अप्पणो चरियं ॥ २३९
'ता संपइ मह भाया तुमं अओ कुणसु संजमं विउलं ।'
सो वि तयं सोऊणं खामइ परमेण विणएण ॥ २४०
'खमसु तयं जं तइया अइनिद्दयकूरचित्तजुत्तेण ।
घोरम्मि दुहसमुद्दे पक्खित्ता सुद्धसीला वि ॥' २४१
तो भणइ नम्मयासुंदरी वि—'संतप्प मा तुमं एवं ।
असुभवियप्पे कम्मे निमित्तमित्तं तुमं जाओ ॥' २४२
जंपइ तओ महेसरदत्तो—'गिण्हामि[10] संजमं इण्हिं[11] ।
नीसेसकम्मदलणं आगच्छइ को वि जइ सूरी ॥' २४३
एत्थंतरम्मि पत्तो अज्जसुहत्थीगुरू तओ एसो ।
तस्स सयासे गिण्हइ[12] रिसिदत्तासंजुओ दिक्खं ॥ २४४
काऊण तवं दोण्णि वि पवर[13]विमाणम्मि सुरवरा जाया ।
तत्तो वि चुया कमसो मोक्खं[14] जाहिंति गयदुक्खं ॥ २४५
भयहरिया वि हु[15] नियमं जाणित्ता आउयस्स[16] पज्जंतं ।
विहियं विहिणाऽणसणं तियसो तियसालये[17] जाया ॥ २४६
तत्तो चविउं होही अवरविदेहे मणोहरो नाम ।
रायसुओ गुणकलिओ भोत्तुं[18] रज्जं तहिं विउलं ॥ २४७
लद्धूण संजमसिरिं उप्पाडित्ता य केवलं नाणं ।
संबोहिऊण भविए गच्छिस्सइ सासयं ठाणं ॥ २४८

इय पवरसईए नम्मयासुंदरीए
चरियमइपसत्थं कारयं निव्वुईए ।
हरिजणयसुहिडीमज्झयाराउ किची
*लिहियमणुगुणाणं देउ सोक्खं[1] जणाणं ॥ २४९

॥ इति[2] नर्मदासुंदरीकथानकं समाप्तमिति[3] ॥ †

---

१ L सुक्ख २ इति is not found in L ३ L °नकं सम्मत्तं० * In the margin of L उद्धरितम् is written as a gloss on लिहियम् † Following words in different handwritting are written in L at the end नर्मदासुंदरीकथा श्रीस्तम्भतीर्थभाण्डागारे मुक्ता मु मोहनसागरसौभाग्यसागराभ्याम् स १७०५ वर्षे ॥

जिणप्पहसूरिरइया

नमयासुंदरिसंधि

अज्ज वि जस्स पहावो वियलियपावो य अखलियपयावो ।
तं वद्धमाणतित्थं नंदउ भवजलहिबोहित्थं ॥ १

पणमिवि पणइंदह वीरजिणिंदह चरणकमलु सिवलच्छिकुलु ।
सिरिनमयासुंदरि गुणजलसुरसरि किंपि थुणिवि लिउँ जम्मफलु ॥ २

[१]

सिरिवद्धमाणु पुरु अत्थि नयरु तहिँ संपइ नरवइ धम्मपवरु । १
तहिँ वसइ सुसावगु उसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाहवयणु । २
तब्भज्जवीरमइकुच्छिजाय दो पवरपुत्त तह इक धूअ । ३
सहदेव-वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुणगणपहाण । ४
नहु देइ सिट्ठि मिच्छत्तिआणं रिसिदत्त इब्भपुत्ताइयाण । ५
अह कूवचंदनयरागएण परिणीअ कवडधरसावएण । ६
वणिउत्तरुद्ददत्ताभिहेण तहिँ पत्त वत्तधम्मा कमेण । ७
अम्मापिईहिँ परिवज्जिआइ हुउ पुत्तु महेसरदत्तु ताइ । ८
पुरि वद्धमाणि सहदेवघरिणि सुंदरि नमयानइन्हाणकरणि । ९
उप्पन्नु मणो[र]हु पिअयमेण गन्तूण तत्थ पूरिउँ कमेण । १०
गब्भाणुभावि तहिँ रहिउँ चित्तु सहदेविहिँ नमयापुरु सचित्तु । ११
तहिँ कारिउ जिणचेइउँ पवित्तु मिच्छत्तरायजयपत्तु पत्तु । १२
अह नमयासुंदरि सुंदरीइ धूआ पसूअ गुणसुंदरीअ(इ) । १३
लावन्नरूवनिरुपमकलाहिँ तहिँ वड्ढइ नमया निम्मलाहिँ । १४
पिअमाइपमुहु सयलु वि कुडुंबु आणाविउ तहिँ पुरि निविलम्बु । १५
उच्छाहिउ रिसिदत्ताइ पुत्तु ववसाइ महेसरदत्तु पत्तु । १६
आवज्जिउँ गुणिहिँ सुसावयत्तु पडिवज्जिउँ रंजिउ ताहँ चित्तु । १७
नमया परिणीअ महेसरेण तउ कूवचंदि पहुतउ महेण । १८
रिसिदत्त तीइ कय पगचित्तें जिणनाहधम्मि सासुप्पडुत्त । १९
आणंदिउ सयलु वि नयरलोगु नमयगुणेहिँ तह सयलवग्गु । २०
ओलोअणि अह निअमुहु पलत्त दप्पणि पिक्खिरवि वक्खित्तचित्त । २१
तंबोलपिक्क तिणि मुक्क जाव अह जंतह मुणिसिरि पडिअं ताव । २२

मुणि जम्पइ "कुणइँ जि मुणिवराण आसायण होइ वियोगु ताण" । २३
इयं सुणिवि झत्ति उवरिमघणाउ उत्तरिवि साहु खामइ पमाउ । २४
सा नमिवि भणइ "तुम्हि समनिहाण पहणंतधुणंतह दयपहाण । २५
सावरस अणुग्गहु महु करेह अवराहु एकु मुणिवर ! खमेह" । २६
मुणि भणइ "भावि पियसमवियोगु निअनिव(वि)डपुव्वकम्मिण अभङ्गु । २७
मइँ जाणिउ नाणिण कहिउ तुज्झ नहु सावु एहु मा यच्छि ! मुज्झ" । २८

॥ घत्ता ॥

इअ मुणिपहुवयणिहिँ अमिअसमाणिहिँ अप्पवुकर्ष्संवेगजुयं ।
पिअयमि आसासिअ सीलि पसंसिअ करइ धम्मु निम्मलचरिय ॥ २९

[२]

अन्नया रुद्दचन्दओ चल्लए जवणदीवम्मि बहुदव्वअज्जणकए । १
पोअवणिजेण वधंतु मुकलावए सयणवग्गं तहिँ नम्मयं ठावए । २
कह वि नहु ठाइ सह चलइ नमयासई जा चलइ पवहणं कोइ ता गायई । ३
सुणिवि सरलक्खणं कहइ पइअग्गए नम्मया "गाइ जो पुरिसु सो नज्जए । ४
पिङ्गकेसो अ बत्तीसयरिसो इमो पिहुलवच्छत्थलो सामलो सक्कमो" । ५
इय सुणिवि पियअमो" चिन्तए दुम्मइ जा इमं मुणइ सा नूणमसई इमा । ६
इत्तियं कालमेसा मए जाणिआ साविया सीलविमल त्ति सम्माणिआ । ७
कुलकलङ्कस्स हेउ त्ति मारेमि वा तिक्खसत्थेण जलहिम्मि घल्लेमि वा । ८
अलिमकुविअप्पपूरिअमणो जा गओ रक्खसद्दीवु सहस त्ति ता आगओ । ९
उत्तरिउ तत्थ पाणीअइंधणकए नम्मयासहिउ सो दीवु अवलोअए । १०
तहिँ परिस्सन्त सरवरह पालिं गया निद्दहेउं पयं पुच्छए नम्मया । ११
सो वि छउमणमणो भणइ विस्सम पिए तरुतले सुअइ जा ता सणियमुट्ठए । १२
सुत्तयं नम्मयं मुत्तु निट्ठुर मणे झत्ति संपत्तु मायानिही पवहणं । १३
पुट्ठु परिवारि सो कहइ रोअन्तओ "भक्खिअआ रक्खसेणं पिआ हा हओ । १४
एमठाणाउ चालेह लहु पवहणं जा कुणइ रक्खसो तुम्ह नहु भक्खणं" । १५
इम सुणिवि तेहिँ भीएहिँ संचारिअं पवहणं जवणदीवम्मि तं पत्तयं । १६
तत्थ विढ्विणिवि पणिअं" सलाभो गओ निअपुरं कहइ अम्मापिऊणं तओ । १७
रक्खसोवद्दवं नम्मयाए तुहं पुण वि परिणाविओ भुंजए सो सुहं । १८
जग्गए नम्मया जाए इत्थन्तरे पिक्खए नेय तहिँ पिअयमं परिसरे । १९
विलवए "नाह हा कंत तं कहिँ गओ असरणं मं चिमुत्तूण बहनिद्दओ । २०
मीससिअंधायमहदायपज्जालणं सुगुरुआसायणादेयवण्णक्खणं । २१
पुव्वजम्मे मए किं कयं दुक्कयं अकयअवराह जं जाइ पिउ मिल्लिउं" । २२
एव उववास काऊण अह चिन्तए सारिवि गुत्तिवयणु इय जणयं वोहए । २३
"पडइ जइ मेरु उग्गमइ पच्छिमरवी टलइ नहु पुव्वकयकम्मु पुण कहलवी" । २४

धीरविथें चित्तमह कुणइ सा पारणं   छट्ठदिणि फालिहिं कयदेवगुरुसुमरणं। २५
लिप्पमउ विंबु ठावेवि गुहअन्तरे   थुणइ पूयइ मणु ठवइ झाणन्तरे। २६
“रक्खसुहीवु मिल्हेवि जइ गम्मए   भरहखित्तम्मि जिणदिक्ख गिण्हिज्जए”। २७
इय विचिन्तेवि चिंधं जलहितीरए   भग्गपोअत्तसंसूअगं उब्भए। २८
बब्बरें[1] कूलि पोएण वचंतओ   चिंधु पिक्खेवि पिउबन्धु तहिं आगओ। २९
नम्मयं पिच्छिउं पुच्छए वइअरं[2]   कहइ रोयन्त सा विहु जं दुत्तरं। ३०

॥ घत्ता ॥

संबोहिवि जुत्तिहिं   पेमपउत्तिहिं   वीरदासु तदुहदुहिउ।
पवहणि आरोविउ   सीलि पमोहउँ[4]   बब्बरि[5] गउ नम्मयसहिउ॥ ३१

[३]

वीरदासु तहिं कूलि नरेसरि   पूइउं[6] नमया ठावइ मन्द(न्दि)रि। १
हरिणी वेसा तहिं निवसेई   वीरपासि दासी पेसेई। २
पवहणप्रति दीणारसहस्सु   निवपसाई सा लहइ अवस्सु। ३
दासि भणइ “तुम्हि सामिणि वंछइ”   वीरु सीलंनिहि[7] तहिं नहि गच्छइ। ४
तच्चिउ धणु पेसइ तसु हरिथहि   हरिणि भणइ “अम्ह काजु न अत्थिहिं। ५
वीरदासु पती फल(?) आणि”   भणितिभङ्गि तिणि आणिउ प्राणि। ६
खोभिउ हावभावविन्नाणिहिं   न चलिउ जिम सुरगिरि वहुपवणिहिं। ७
वीरु सदारतुट्ठु तिणि जाणिउ   कवडिहिं हरिणी सो वक्खाणिउ। ८
व(वे)स्सं दासि भणइ एगन्ते   “नारि ज दिट्ठा सिट्ठिगिहन्ते। ९
भयणि सुआ वा निरुवमरूवा   सा जइ वेस तु हुइँ वसि देवा”। १०
इअ मन्तिवि तिणि मुद्दारयणू   मग्गिउ अप्पिउ सिट्ठि पहाणू। ११
पडिछंदर्दसणमिसि पेसिय   मुद्दा नमया(यं) दसिअ दासिअ। १२
“तेडइ तुम्हि पवडअहिनाणिहिं   वीरदासु आयउ अम्ह भुवणिहिं”। १३
नाममुद्द पिक्खिवि चिंतिवि बहु   सह दासिहिं नमया आविअ लहु। १४
हरिणीगिहपच्छलि भूमीहरि   पुव्वसिक्ख तिणि घल्लिअ निट्ठुरि। १५
मुद्दा दासिहिं अप्पिअ वीरह   नमया दोसु देइ दुक्कम्मह। १६
उट्ठिउ सिट्ठि जाइ नियमंदिरि   ता महु पिच्छइ नमयासुंदरि। १७
घरि बाहिरि पुरि न [ल]हइ सुद्धि   भरुयच्छि गउ कयबुद्धि सरिद्धि। १८
कड्ढिय भूमिगिहाउ महासइ   जाणिउ वीरु गयउ अह दंसइ। १९
सयलरिद्धि “एअह तइँ सामिणि   करउँ होसि जइ वेसा भामिणि। २०
सग्गु एहु ता [मि]ल्हि असग्गहु”   हरिणिवयणु निसुणिवि नमया लहु। २१
धज्जहय व्व भणेइ महासइ   “महु जीयन्तिअें[10] सीलु न नस्सइ। २२
सीलु सयलदुक्खक्खयंकारणु[11]   सीलु सिद्धिसुरलच्छिहि कम्मणु। २३
नरयनयरगोपुरु वेसत्तणु   उत्तमनिन्दिअें[12] वसु किं धप्पणु”। २४

---

१ धीरवीअ. २ बम्बरे ३ वइंअं. ४ पमोईउ. ५ बब्बरि. ६ पूइउ. ७ सीह°. ८ पडच्छंदा.° ९ वीरुदासु. १० °जीवन्तीअ. ११ °क्खयकारणु. १२ °निन्दीअ.

तं निसुणिवि तच्छइ निब्भच्छइ   हरिणी कणइरकम्बिहि कुट्टइ । २५
जइ जलनिहि मज्जाया मिल्हइ   तह वि न नम्मय सीलह चल्लइ । २६
जाइ धरणितलु जइ पायालह   तुट्टिउ पडइ गयणु जइ मूलह । २७
तिमिरु तरणि जइ ससि विसु वरिसइ   तह वि न नम्मयसीलु विणस्सइ । २८
इयं अचलंती बहुहा ताडइ   स(ल)ट्ठि मुट्ठि पुण सत्त न पाडइ । २९
कुणइ सई परमिट्ठिहि सरणं   तसु पभावि हुइ हरिणीमरणं । ३०
जाणिउ सुद्धि नरिन्दु निवेसइ   तसु पदि नमया कारणि मग्गइ । ३१
चिन्तइ "मज्झ सीलु नहु भंजइ   इंदु वि" अह निवु तहिं हक्कारइ । ३२
वेसागिहनिग्गमु सुंदरु मणि   जाणिवि निवपेसिअसुक्खासणि । ३३
आरोहिवि पहतडि उग्घडियह   जन्ती पडइ मज्झि सा खालह । ३४
कद्दमि तणु लिम्पणमिसि निअहिअ   गहिअ सीलरक्खणि सन्नाहिअ । ३५
सहमयणिहिं पत्तइं किर फाडइ   वत्थमिसिणं सा पमुइअ" हिअडइं । ३६
लंसइ धूलि भूअङ्गत्तासणि   नच्चइ गायइ सतीसिरोमणि । ३७
सार मुणिवि निवु गुणिआ पेसइ   पाहणलंछणि ते वि तासइ । ३८

॥ घत्ता ॥

इय गहिली जाणिय   बुद्धि'पहाणिअ   सीलसकच्छडिम्भिहिं कलिअ ।
निवपमुहिहिं लोइहिं   मुद्ध अमोहिहिं'   भणइ थुणइ जिणु अक्खलिय ॥ २९

[४]

मित्तह जिणदेवह कहइ वीरु   नम्मयवइअरु तसु खिवइ भारु । १
मरुअच्छह गच्छइ नियपुरम्मि   जिणदेव पत्तु अह कूलि तम्मि । २
दिट्ठा नच्चन्ती' विगलरूय   जिणदेवि पुट्ठ "तउ किं सरूय" । ३
सा भणइ "कहिसु वणचेइअम्मि"   असोय कहिउ वइअरु वणम्मि । ४
सो बुद्धि देइ सा धरइ चित्ति   अह घयघड फोडइ गहिलिअ त्ति । ५
घयघणिअ कुणइ निवपासि राव   जिणदेवह कहइ नरिंदु ताव । ६
"ए करइ उवद्दवु घणउ देसि   पवहणि आरोहिवि लइ विदेसि" । ७
बंधिवि चडावि पवहणि विसालि   जिणदेवि नमय पिअहरि विणीअ । ८
मरुयच्छि वन्नाविवि देव नीअ   जिणदेवि नमय पिअहरि विणीअ । ९
रोअन्त महइ गुरुत्तु सयलु   पियरिहिं पुरि उच्छवु विहिउ अतुलु । १०
नमयापुरिअ दसपुव्वधारि   सिरिअज्जसुहत्थि संपत्तु सूरि । ११
चंदइ सवंसु कुटुम्बकलिउ   निसुणेवि धम्मु नमयाइ सहिउ । १२
अह वीरदासु पुच्छइ मुणिंदु   "किं नम्मयाइ किउ कम्मबिन्दु । १३
पुव्विल्लजम्मि जं दुक्खजुत्त   पइचत्त जिअन्ती कह वि पत्त ।" १४
अह कहइ मुणीसरु "नम्मयाइं   पयाइ विंझगिरिनिग्गयाइ । १५
अहिट्ठायग दयय आसि एह   पुव्विल्लजम्मि मिच्छत्तगेह । १६
पडिमापडिवन्नह मुणिवरस्स   एगस्स नईतडि निसि ठियस्स । १७
एए नाएहामइ निन्दग वि   पढमं पडिकूलुवसग्ग गत्ति" । १८

पच्छाणुकूल थीरूवपमुह कय खोभहेउ देवीइ दुसह। १९
अक्खुहिउ समायइ सा वि साहु मुणि कहिअ धम्मि तसु बोहिलाहु। २०
सा देवि चविवि सहदेवधूअ हुय नमयासुन्दरि गुणिहिँ गरुय। २१
पडिकूलिहि वसु हुउ पइविओगु अणुकूलि सीलसोहणपओगु"। २२
इय निअभवु निसुणि[वि भय]विरत्त चारित्तु लेइ नम्मय पवित्त। २३
इक्कारसङ्गधरगणहरेण सा ठविय महत्तरपदि कमेण। २४
कुडअवहिनाणजुयं सह मुणिंदि· विहरंत पत्त पुरि कूवचन्दि'। २५
कउ तीउ(इ) महेसरु निव्वियप्पु सरलक्खणेण निंदेइ अप्पु। २६
"जाणिज्जइ सत्थपमाणि सव्वु तउ नमया जाणिउ पुरिसरूवु। २७
मइँ दुट्ठि निकिट्ठि सुसील चत्त कंता तसु पावह दिक्ख जुत्त"। २८
नम्मयमुचलक्खिवि चरणु लेइ रिसिदत्तसहिउ सो तवु तवेइ। २९
आराहिवि अणसणु सग्गि जंति तिन्नि वि अणुयमु सुहु अणुहवंति। ३०

॥ घत्ता ॥

कल्लाणह कुलहर होअउ जयकर नमयासुंदरिसंधि वर।
अब्भत्थणि सङ्कह रइआँ अणग्घह पढव सुणन्तह उदयकर॥ ३१

सरिया वि सीलजुन्हा जीसे सुकयामएण तियलोअं।
सिंचइ वीइन्दुकल व्व नम्मया जयइ अकलङ्का॥
तेरसैसय-अडवीसे वरिसे सिरिजिणपहुप्पसाएणं।
एसा सन्धी विहिया जिणिन्दवयणाणुसारेणं॥

॥ श्रीनर्मदासुन्दरीमहासतीसन्धी[ः] समाप्ता॥

प्राचीन गुजराती गद्यमय

नर्मदासुन्दरी कथा

॥ ६० ॥ हिव नर्मदासुंदरीनी कथा कहइ ॥ एह जि जंबूद्वीपमाहि वर्धमानपुर नगर । तिहां संप्रति राजा राज करइ । तीणइ नगरि रुषभ सार्थवाह वसइ । तेहनी भार्या वीरमती । तेहनइ वि(बि) पुत(त्र) एक सहदेव १ बीजउ वीरदास २ । अनइं रुपिदत्ता एहवइ नामि पुत्री महारूपवंति यौवनावस्थाइं आवी । तेतलइ घणा महर्द्धिक व्यवहारीया मांगइ । पणि श्रेष्ठि मिथ्यात्वीनइ आपइ नही । इसइ महर्द्धिक रुद्रदत्त नामि वणिगपुत्र वाणिज्यनइ हेति रूपचंद्रपुरहूंतउ तीणइ नगरि आविउ । पणि ते कुबेरदत्त मित्रनइं घरि आवी ऊतरिओ । अनेक व्यवसाय करइ । आपणा घरनी रीतिइं तिहां रहइ । अन्यदा रुपिदत्ता सखीइं परिवरी वारणइ रमती दीठी । हिव रुद्रदत्त मित्र आगलि कहइ "ए कन्या कुमारिका छइ किंवा मागी छइ" । तिवारइं कुबेरदत्त कहइ "ए कुमारिका छइ । पणि ए श्रेष्ठि जिनधर्म टाली अनेरा कुणहीनइं न आपइ" । तिवारइं रुद्र मिथ्यात्वीइं थकउ रुपिदत्तानइं लोभइं कपटश्राव[क] थई जैनधर्म पडिवजिउं । काइ माया लगाइं गाढाइ विवेकीना चित्त आवर्जियइ । पछइ रुपभसेन सार्थवाहि श्रावक भणी आपणी पुत्री रुपिदत्ता रुद्रदत्तनइं दीधी । तिहां पाणिग्रहण महोत्सव हूओ । केतला-एक मास तिहां अतिक्रम्या । तिसइ रुद्रदत्त ससुरानइं पूछी प्रिया सहित आपणइ नगरि आविउ । तिसइ रुद्रदत्तनउ पिता वधूनइ आगमनि महाहखि(र्खि)ओ । इम घरि रहतां रुद्रदत्ति जिनधर्म छाडिउ । रुपिदत्ताइं पणि भर्तारना संसर्ग लगइ जिनधर्म छाडिउ । क्रमिइं महेश्वरदत्त पुत्र रुपिदत्ताइं जन्मिउ । क्रमिइं सर्व कला अभ्यसी मोटउ हूओ ।

इसइ रुपिदत्तानउ वडउ बांधव सहदेव भार्या सुंदरी सहित सुखिइं रहइ छइ । एहवइ तिणि सुंदरीइं अपूर्व सउणउ देखिउं । तेहनइ योगि आधान धरिवा लागी । क्रमिइं वृद्धि पामतइं एहवउ डोहलउ ऊपनउ । जाणइ जउ नर्मदानदी माहि जई स्नान करउं । ए वात भर्तार आगलि कही । पछइं सहदेव सेना-तनी रचना करी सुंदरीनइं साथि लेई चालिउ । हिव नर्मदानइं काठइ आवी पूजा अर्चा करी नर्मदामाहि पइसी जलक्रीडा कीधी । पछइं सहदेव व्यवसायनइ सुखिइ तिहां नगरनी स्थापना कीधी । नर्मदापुर नाम दीधउं । तिहां जिनमंदिर कराविउं । सम्यक्त्ववंत पोषिवा भणी पछइ सघलाइं व्यवहारिया आपणा नगर मूंकी तिहां आवी वस्या । इसइ पूरे दिवसे पुत्री जन्मी । पणि पुत्रजन्मनी परिइं उत्सव कीधउ । नर्मदा-सुंदरी ए नाम दीधउं । क्रमिइं क्रमेइं सघलीइ कला अभ्यसी यौवनवस्थाइं आवी ।

इसइ नर्मदासुंदरीनउं रूप सांभली रुपिदत्ताइं चींतविउ "जउ माहरउ पुत्र महेसरदत्त तेहनइं हेति ए नर्मदासुंदरी मागीइ । अथवा मुझनइं धिग् धिक्कार हुउ । जे मइ जिनधर्म आदरतइ हूं कुटुंबिइं छाडी । जे हूं पर्वतिथिना नामइं न जाणउ ते माहरा पुत्रनइं

किम देखइ ?" इम कहती रोवा लागी। तेतलइ रुद्रदत्त आविउ। तिणि पूछिउं "तूं असमाधि कांइ करइं ?" तिवारइं रुपिदत्ताइं सर्व वृत्तांत कहिउं। एहवइं महेश्वरदत्त पुत्र मा-बापनी वात सांभली कहिवा लागउ "तात मझनइं तिहां मोकलउ। जिम सघलाई आवर्जी माउलानी पुत्री परिणी मानइं हर्ष ऊपजावउं।" पछइं पिताइं महेसरदत्त चलाविउ। थोडे दिहाडे पंथ अवगाही नर्मदापुरि आविउ। तिहां सहदेवनइं मिलिउ। हिव महेसरदत्त तिम बोलइ तिम चालइ जिम सहदेवादिक सहू मनि चमत्कर्या। पछइं उत्संगि बइसारी कहिवा लागा "वत्स तइं अम्हारा चित्त आवर्ज्या जिम जांगली विधाइं कारी साप वशि थाइ तिम अम्हे तइं वशि कीधा। तउ वत्स मांगि जि कांई मांगइ ते आपउ।" तिवारइं महेसरदत्ति नर्मदासुंदरी मांगी। पछइं माता-पिताए दीधी। तिहां महेसरदत्ति जिनधर्म पडिवजिउं। शम-शपथ कीधा जु इणि भवि जिनधर्म टाली अवर-धर्म न करउं। पछइं महाआनंदि महोत्सवि नर्मदासुंदरीनउं पाणिग्रहण कीधउं। केतलाएक दिन तिहां रहिउ। हिव नर्मदासुंदरीइं तिम जिनधर्मना उपदेस दीधा जिम महेसरदत्त जिनधर्मनइं विषइ गाढउ निश्चल हूओ। पछइं केतलेएक दिहाडे ससुरानइं कही भार्या सहित महेश्वरदत्ति आवी मातापितानइं प्रणाम कीधउ। तिसइ रुपिदत्ता नर्मदासुंदरीनइं उत्संगि बइसारी कहइ "वत्सि तइं तिम करिवउं जिम मिथ्यात्वनउं नाम घरमां न रहइ।"

हिव महेसरदत्त नर्मदासुंदरी सुखिइं काल गमाडतां सर्व स्वजननइं मान्य हूआ। अन्यदा नर्मदासुंदरी गउखि बइठी आरीसइ आपणउ मुख जोवती, तंबोल खाती, अनेक चित्रम करती लीलालगी तंबोल बारणइ नांखिउ। इसइ महातमा, एक तलइं जातउ हूंतउ तेहनइ माथइ तंबोल पडिउ। तेतलइं महातमाइं कहिउं "इम जे रुपिनी आशातना करइ ते भर्तारनउ वियोग पामइ।" इसउं ते महातमानउ सकोपवचन सांभली विषादपर नमयासुंदरी गउखिहूंती ऊतरी महातमाने पगे लागी, कहिवा लागी "हे महात्मन्! हूं बरासी जे हूं जिनधर्म जाणतीइंहूंती एवडउ अविनय कीधउ। तउ हिव तुम्हे विश्वनइं वत्सल छउ। मझ ऊपरि क्षमा करउ। तुम्हेतउ वइरीइं ऊपरि कोप न धरउ। पछइं मझ ऊपरि किम करिस्यउ। तथापि मझ अभागणी ऊपरि शराप परहउ करउ।" तिसइ मुनि बोलिउ "हे वत्सि! सांभलि, खेद म धरिजे। जे महातमा हुइं ते शाप अनइं अनुग्रह न करइं। पणि न जाणउं माहरा मुखहूंतउ एहवउ वचन किमहीं नीकलिउ। अथवा वली जे जीवनइं कडुअपणउ हुइ ते कोई करइ छइ सिउं ना; ते तउ समावइं जि हुइ।" इम प्रतिबोधी महातमा आपणइ ठामि गयओ। नमयासुंदरी पाछी घरि आवी। सुखिइं घरि रहइ छइ।

इसइ अनेरइ दिवसि महेसरदत्त व्यवसाय भणी जवनद्वीप भणी चालिवा लागउ। तेतलइं नमयासुंदरी कहइ "स्वामी! हूं पणि साथि आविसु।" पछइं नमयासुंदरी संघाति चाली। हिव समुद्रमाहि प्रवहणि बइसी चालतां अर्धपंथ अवगाहिउ जेतलइ, तेतलइं रात्रिनइ समइ कुणही एकणि गीत गायउं। ते गीत सांभली नमयासुंदरी स्वरना लक्षण जाणती हूंती भर्तारनइं आश्चर्य ऊपजावा भणी कहिवा लागी "स्वामीन्! जे ए गीत गाइ छइ ते सामलइ वर्णि छइ। स्थूल हाथ छइं। कृश देह छइं। गुह्यप्रदेशि मषा

छइ। शेण लांछन छइ। वावीस वरसनउ छइ। हीयउ पिहुलउ छइ।" इत्यादि स्त्रीना वचन सांभली महेसरदत्त मनमांहि चींतवइ "ए नमयासुंदरी कुसीलिनी संभावियइ। अन्यथा एतली वात किम जाणइ। तउ हिव परीक्षा करउं।" पछइं प्रभाति ते पुरुष तेडी सर्व अहिनाण जोई मनि निश्चय कीधउ "तां सही ए कुसीलिनी जि छइ। इहां संदेह कांई नहीं।" पछइं मूढ कोप धरतउ चींतवइ "एतला दिन हूं इम जाणतउ जु ए महासती छइ। पणि तउ आज पारिखउं दीठउं। तउ हिव एहनइं समुद्रमांहि ठेली दिउं। अथवा खड्गकरी केलिनी परिइं विखंड करउं।" इम जेतलइ चींतवइ छइ तेतलइ अकस्मात् निर्यामक कूआखंभा ऊपरि चडीनइं कहइ "अरे लोको! प्रवहण राखउ। सिढ पाडउ। नांगर मूंकउ। राक्षसउं द्वीप आविउं। जल-ईंधणनी सामग्री लिउ।" इम कही आपणउं प्रवहण राखिउ। सर्व संग्रह कीधउं। इसइ महेसरदत्त मायालगइं गूढ कोप धरतउ नर्मदासुंदरीनइं वनमांहि लेई गयउ। अनेक तलाव देखाड्या। वली सर्व वन देखाडी संध्याइं किहां एक वननिकुंजमाहि जई सूता। तेतलइं पूर्वोपार्जित दुःकर्मलगइं नर्मदानइं निद्रा आवी। तेतलइं महेसरदत्त नमया सूती जि मूंकीनइं प्रवहणि आविउ। लोकानइं कहइ "अहो! लोको नासउ नासउ; कांता तउ राक्षसइं खाधी। हूं नासी आविउ। तुम्हे चालउ, नहींतर राखिस आवी खासीइ।" तिवारइं बीहता लोक प्रवहणि चडी चाल्या। पछइं महेसरदत्त चींतवइ "मइं विन्हइ वात कीधी। दुःसीलिनी स्त्री पणि छांडी अनइं लोकनउ ई अपवाद राखिउ।" हिव क्रमइं क्रमइं जवनद्वीप आविउ। तिहां घणउ धन उपार्जी आपणइ नगरि आविउ। अनइं प्रियानउं सरूप कहिउं। जु राक्षिसइं प्रिया भरवी। पछइं असमाधि करी नमियाना प्रेत कार्य कीधा। वली महेसर नवी वार परणाव्यउ।

हिव नमयासुंदरी वनमांहि जिम सूती हूती तिम जि पुकार करती जागी। पणि आगलि भर्तार न देखइ। तिसइ नमया भोलपण लगइं कहइ "स्वामी! एहवउ हासउं न कीजइ।" तउ ही पति नावइ। तेतलइ ऊठी वनमाहि जोवा लागी। पणि भर्ता न देखइ। तिवारइ नमया रोवा लागी। तिणि रोवतां जे वनमांहि सापद छइ ते ही रोवा लागा। पछइं लताना घरमाहि रात्रिइं रही। पणि रात्र सउ वर्ष समान हुई। वली प्रभाति रुदन करती, वन जोवती, पांच दिन अतिक्रमावी, छट्ठइ दिनि जिहां प्रवहण हूंता तिहां आवी। देखइ तउ आगलि प्रवहण नहीं। तिवारइं गाढेरी निरासपणी रुदन करती ते मुनिनउ वचन चींति आविउ। पउइं थोडेरी असमाधि करिवा लागी। इम आपणउं पूर्वोपार्जित कर्म भोगवती, आत्मानइं प्रतिबोध देती, महासतीइं सरोवरि स्नान करी, वनमांहि देव वांदी, फलाहार करीनइं तापसी हुई। पछइं गुफामाहि माटीनी प्रतिमा करी, मननइं स्थिरता भणी फलफूले पूजी, आगलि बइठी सिज्झाय करइ। एकाग्रचित्त दीक्षाना ध्याननइं तत्पर हूंती रहइ।

इसइ ते नमयानउ पीतरियउ वीरदास बव्बरकूल भणी जातउ हूंतउ तीणइ प्रदेशि जिहां गुफामाहि सतीनी स्तुति करइ छइ तिहां आविउ। पउइं ते स्तुति सांभली वीरदास गुफामाहि पइठउ। तिसइ साधर्मरूपि वीरदासइं भत्रीजी देखी कंठि आलिंगी शोक

अनइ हर्ष धरतउ पूछिवा लागउ "हे वत्सि ! तू एकाकिनी इहां काई अथवा तू किम आवी ?" इम पूछिइ हूतइ नर्मदाइ आपणउ सर्व वृत्तांत कहिउ । पछइ वीरदास देवनइ उलभा देतउ हूतउ नर्मदासुंदरीनइ सघाति लेई बब्बरकूल आविउ । तिसइ नर्मदासुंदरी ऊतारइ मूकी पछइ वीरदास भेटि लेई राजानइ मिलिवा गयउ । राजाइ बहुमान देई अर्थदाण मूकिउ । पछइ वीरदास कियाणा वेचिवा लागउ ।

हिव तिहां हरिणी नामि पणांगना वसइ । पणि ते प्रग्रहणी लोकथइ हलि सहस्र दीनार लिइ । ते लेवा भणी दासी एक वीरदासनइ उतारइ मोकली । तिणि दासीइ नर्मदासुंदरी दीठी रूपवति । तिणि जई हरिणीनइ कहिउ "जु एहवउ रूप पृथ्वीमांहि नथी । ए जउ ताहरइ घरि आवइ तउ जाणे कल्पवेलि आवी । तीणइ द्रव्यनी कोडि ऊपार्जिइ ।" पछइ हरिणिइ धन मागिवानइ मिसि तेह वीरदासनउ चरित्र जोवा भणी वली तेह जि मोकली । तिसइ वीरदासि सहस दीनार दीधा । तिसइ दासी पाछी आवी हरिणिनइ कहइ "न जाणियइ वीरदासनी बहिन छइ, अथवा सगी छइ, किंवा दासी छइ । ते जाणियइ नहीं ।" तिवारइ हरणी तेहनइ घरि आवी । पछइ वीरदासनइ वचनात्कारि आपणइ घरि लेई गई । मिषांतर करी वीरदास भोलवी हाथनी वींटी नामांकित लीधी । ते लेइ वली हरिणीइ दासी हाथि नर्मदासुंदरीकहइ मोकली । नामांकित मुद्रा देखाडी नर्मदानइ घरि आणी भउहरइ लेई घाली । मुद्रिका वलि पाछी आपी । पछइ अजाणवत वीरदास पाछउ घरि आविउ । जइ ऊतारइ जोवइ तउ नर्मदानइ न देखइ । पछइ सव नगर जोतउ जोतउ सासक हरिणीनइ घरि आविउ, पूछइ जु "नर्मदा किहां ?" तिवारइ ते कपटपंडिता न मानइ, कहइ "हूं स्यउं जाणउं ।" तिसइ वीरदास चींतवइ "एक कारेली अनइ नीबि चडी । तिम एक वेश्या अनइ राजानउ बहुमान । तउ ए साथि न पहुचियइ । एक परदेस, बीजउ जीणइ गोपवी ते किम आपिस्यइ ।" इम घणी असमाधि कीधी । पछइ आपणी वस्तु लेई घणउ लाभ ऊपार्जी पाछउ चालिउ । भरूअचि नगरि आविउ । तिहां आव्या पछइ परममित्र परमश्रावक जिणदास ते आगलि सव वात कही । नर्मदासुंदरीनी सुद्धिनइ हेति बब्बरकूल भणी आपणइ ठामि मित्र मोकलिओ ।

हिव हिरणीइ वीरदास चाल्या पछइ नर्मदासुंदरीनइ कहिउ "हे सुभगि ! सौभाग्यनउ निधान वेश्यापणउ आदरि । यौवननउ फल लिइ ।" ए वचन जेतलइ हरिणी कहिवा लागी तेतलइ नर्मदाइ कान ढांकी नइ कहिउ "ए वात आज पछइ म कहिसि । हूं आजन्म शीलनी खंडना नहीं करउं ।" तिवारइ वेश्या कहइ "अम्हारउ जन्म सफल, जे आपणी इच्छाइ विलसउं, भोग भोगवउं ।" तेतलइ नर्मदा कहइ "इणइ सुखिइं संसारना सुख कउण हारवइ । जा मझनइ जीवितव्य तां माहरउ शील रत्न कुण हरी सकइ । कदापि मेरु पर्वतनी चूलिका चालइ अनइ कदापि पश्चिमइ सूर्य ऊगइ, पणि माहरउ शीलभंग न करउं ।" पछइ हरिणीइ अनेक दीन बोल बोल्या लोभ देखाडिउ । पणि तउ ही न मानइ । तिवारइ हरणीइ पाचसइ नाडी नर्मदानइ देवरावी । पणि छगारइ ते सतीनउ [मन ?] शीलनइ प्रमाणि क्षुभिउ नहीं । अनइ शील पणि राखिउ ।

तिसइ नमयानइ मारता शीलनइ प्रमाणिइ हरिणी वेश्या मुई। पछइ बीजी वेश्या भयभीत हूती पगे लागी। नमयानइ मनावइ "तू अम्हारइ स्वामिनी था। प्रभुत्वपणइ आपणी इच्छाइ शील पालि।" पछइ नमयासुंदरीइ ते वचन मानिउ। इम करता प्रधानि नमया-सुंदरीनउ रूप देखी प्रार्थना कीधी। पणि मानइ नहीं। तिवारइ प्रधानि राजा आगलि जई नमयाना रूपनी वर्णना कीधी। तेतलइ राजाइ नमयासुंदरी भणी पालखी मोकली। तिसइ राजाने सेवके जई महाविस्तारि नर्मदासुंदरी सुखासनि बइसारी, माथइ छत्र धरी चलावी। एहवइ नमयासुंदरी शीलनी रक्षा भणी गहिली हुई। मोटउ एक नगरनउ खाल तेहमाहि ऊल्ली पडी। लोकानइ कहइ "अहो लोको! माहरइ शरीरि यक्षकर्दम कहता सूकडि क्पूर केसर कस्तूरी लागी छइ।" इम कहती सघलाई लोकानइ कादमसिउ छाटइ अनइ आपणा वस्त्र फाडइ। वली लोक साम्ही धूलि नाखइ। इसइ प्रधानि राजानइ कहिउ "स्वामी! न जाणियइ उलमेद हूओ किंवा दृष्टि लागी, तिम ते गहिली थई।" तेतलइ राजाइ मन्त्रवादी तेड्या। जेतलइ मन्त्र गुणी गुणी सरिसव नाखइ तेतलइ नमयासुंदरी ते साम्हा पाषाण नाखइ। तिम ते मन्त्रवादी सर्व नासी गया। हिव नगरमाहि गहिलीनी परिइ फिरइ। वीतरागना गीत गावइ।

इसइ ते जिनदास श्रावक भरूयछहूतउ आविउ। तीणइ ते नमियासुंदरीनइ मुखि वीतरागना गीत साभल्या। तिवारइ जिनदास आगलि आवी दयापरहूतउ कहिवा लागउ "हे सुभगि! तुझनइ ए स्यउ थयउ? तू परम श्राविका जैन भक्ति दीसइ छइ।" तिवारइ नमिया कहइ "तू जउ जैन श्रावक छइ तउ माहरउ स्वरूप एकांति पूछे, पणि लोक देखता म पूछे।" हिव अन्यदा गीत गावती वनमाहि जई नमिया देव वादी गीत गावइ छइ। तिसइ जिनदास पणि केडइ लागउ वनमाहि गयउ। तिहा तेहनइ 'वादू' इम कही जिनदास पूछिवा लागउ "तू कउणि?" तिवारइ नमयाइ आपणउ सर्व वृत्तांत श्रावक आगलि कहिउ। तिवारइ जिनदास कहइ "वत्सि! ताहरी मोटी वात। जिम तइ शील राखिउ तिम वीजउ कोइ न राखइ। हिव हू ताहरइ कीधइ भरूयछहूतउ आविउ छउ। वीरदास मित्रइ हू मोकलिउ। तउ हिव तू खेद म धरिसि। जिम रूडउ हुस्यइ तिम हू करिसु। पणि आज पछइ राजमार्गि जेतला पाणीना घडा आवइ तेतला तू भाजे।" इम संकेत करी वेऊ नगरमाहि आव्या। पछइ नमया पाषाण नाखइ, हाडला फोडइ, लोकनइ संतावइ। इसइ नगरनउ राजा नीकलिउ। तिणि ते गहिली दीठी। तिसइ जिनदास आगलि ऊभओ हूतउ तेहनइ कहिउ "जउ इणि इ स्त्रीइ नगर सघलउ वानरानी परिइ संताविउ। हिव तिम करि जिम प्रवहणि बइसारी एहनइ परद्वीपि लेई जा, जिम व्याधि टलइ।" तिसइ जिनदासि वचन पडिवजिउ। मनमाहि हर्खिउ। पछइ लोहार तेडी नमयानइ पगि अठीलि घाती प्रवहणि बइसारी, सर्व वाखर प्रवहण भरी, अनेक वस्त्र वाना वाती, पछइ आप प्रवहणि बइसी चालिउ। मार्गि जाता अठीलि भाजी। वस्त्र आभरण पहिरावी नर्मदापुरि आणी। तिसइ पिताइ पुत्री आवी जाणी पिता सामुहउ आविउ। पछइ नमयासुंदरी माता पितानइ पगि लागी। तारस्वरि रुदन करिवा लागी। तिसइ रुषभसेनादिक कहिवा लागा "भलउ हूउ जे अम्हे वेटी

जीवती दीठी । तउ आज पुत्रीनइं नवउ जन्म हूओ ।" तेह भणी महामहोत्सव करिवा लागा । जैनप्रासादि पूजापूर्वक साधर्मिक वात्सल्यादिक कीधा । केतलाएक दिन साधर्मि जिनदास तिहां रही वीरदासनइं पूछी भरूअछ आविउ ।

इसइ एकदा आर्य सुहस्तिसूरि दशपूर्वधर विहार करता नर्मदापुरि आव्या । तिवारइं नमयासुंदरी मा-बाप पीतरिआ सहित आचार्य समीपि आवी प्रणाम करी आगलि बइठी । तेतल[इ] श्री सुहस्तिसूरी धर्मलाभ कही धर्मोपदेश दीधउ । तिवार पछइं देशनानइं अंति वीरदास गुरुनइं प्रणमीनइं पूछिवा लागउ "स्वामिन् ! नर्मदासुंदरीइं भवांतरि कउण कर्म उपार्जिउं जे निर्दोषइ सुसीलपकी एवडां कष्ट पाम्या ?" तिवारइं भगवंत श्रुतनउ उपयोग देई पूर्वभव कहिवा लागा—"इणइं पृथ्वीपीठि विंध्यगिरि । तेहमाहि थकी नर्मदा नींकली छइ । तेहनी अधिष्ठायिका मिथ्यात्वनी देवताइं एकदा महातमा एक धर्मरुचि प्रतिमाई रहिउ देखी घणा उपसर्ग कीधा । तउ ही धर्मरुचि महातमा ध्यान हूंतउ न चूकइ । तिसइ देवताए महातमानी क्षमा देखी प्रतिबूझीहूंती सम्यक्त्ववंति हुई । हिव ते मरी तुम्हारी पुत्री नर्मदा हुइ । अनइं पूर्विला अभ्यासलगी नर्मदास्ना[न]नउ डोहलउ ऊपनउ । वली जे महातमानइं उपसर्ग कीधा तेह भणी दुक्खिणी हुई ।" ए वात सांभली नर्मदाइं दीक्षा लीधी । तिसइ जातीस्मरण ऊपनउं । पछइं चारित्र पालतां वली अवधिज्ञान ऊपनउं ।

पछइं पवतिणिपद पामी रूपचंदपुरि आवी । पणि तप लगी कालक्रमइं कृशदेह हुई छइ । पणि तिहां कुणहीं ऊलखी नहीं । पछइं ते नर्मदासुंदरी पवै(व)तिणि महासतीने वृंदे परिवरी रुपिदत्तानइं घरि आवी धर्मलाभ कहिउ । तिसइ रुपिदत्ताइं उपाश्रय दीधउं । तिहां महासती रही । हिव धर्मनउ उपदेस महासती सदा दिइं अनइं महेसरदत्त रुपिदत्तातउ उपदेस सांभलइ । पणि कोई महासतीनइं ऊलखइ नहीं । इम अन्यदा संवेगरंग ऊपाइवा भणी महेसरदत्तनइं स्वरलक्षण जणाविउ । ते स्वरलक्षणोपदेस सांभली ते नर्मदासुंदरी चीति आवी । पछइं पश्चात्ताप करिवा लागउ "धिग् धिक्कार मझनइं, जे मइं एहवीइ सती वनमाहि मूंकी; तउ ते नमयाना कुण हाल हौस्यइ ।" इम आपहणी शोक करतउ देखी दया लगइं महासती कहइ "ते हूं नमयासुंदरी जे तुझ आगलि वइठी छउं ।" तिवारइं महेसरदत्त चींतवइ "ए किसउं आश्चर्य । जोउ सघलइ कर्म जि प्रधान सवल जिम नचावइ तिम नाचीयइ । इहां किहनउ दोस नहीं ।" पछइं ऊठी महासतीने पगे लागी, आपणउ अपराध खमावी करी, वैराग्यरंगपूरित हूंतउ श्री सुहस्तिन् आचार्य समीपि जई व्रत लीधउं । अनइं रुपिदत्ताइं पणि चारित्र लीधउं । पछइं बेहूं तप तपी चारित्र पाली स्वर्गनइं भाजन हुआ । अनइं नमयासुंदरी पणि प्रांतसमउ जाणी संलेखनापूर्वक अणसण पाळी देवलोकि पुहुती । पछइं वली महाविदेहि क्षेत्रि ऊपजी दीक्षा लेई मोक्षि पहुचिसइ ॥ श्री ॥

॥ इति श्री शीलोपदेशमाला बालावबोधस्य घा० श्री० मेरुसुंदर० शीलोपरि नमयासुंदरीकथा ॥ श्री ॥

*